❑ जिन्दगी के बदलते रूप (उपन्यास)

❑ लेखक :
मुनि ज्ञान

❑ प्रथम सस्करण · 1987
द्वितीय सस्करण 1991
तृतीय सस्करण 1999, 2100 प्रतिया

❑ अर्थ सहयोगी :
श्रीमती नगीना देवी तातेड़

❑ मूल्य . 25/-
रियायती मूल्य (अर्थ सहयोग पश्चात) : 13/-

❑ प्रकाशक :
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर-334005

❑ आवरण :
अमिताभ

❑ मुद्रक :
अमित कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स
बीकानेर दूरभाष : 547073

समर्पण

जिनके संयमीय

उत्तुङ्ग-गिरी से

प्रवाहित

निर्झर में

आप्लावित हो

अमरता के

पथ का

पथिक बना,

उन्हीं

अनन्त-अनन्त आराध्य

गुरुदेव

आचार्य श्री नानेश

को

—मुनि ज्ञान
महावीर भवन, नया बास
ब्यावर (राज.)

29.8 86
शुक्रवार



मर्यादा ही उत्तम आचरण का सुरक्षा कवच है, प्रभु महावीर का सदेश है कि आचरण की धारा सम्यक्ज्ञान के चट्टानी तटबन्धो मे ही मर्यादित रहनी चाहिए।

आचार्य स्वर्गीय गुरुदेव श्री गणेशीलालजी म सा ने श्रमण सस्कृति की सुस्थिति एव उन्नयन के लिये शातक्राति का अभियान चलाया, इस अभियान को ओजस् प्रदान करना साधुवर्ग का दायित्व है, इसके लिए साधुवर्ग को जहा साधना के पथ पर अविचल रूप से आरूढ रहना है, वहीं अपनी साधनागत अनुभूतियो की अभिव्यक्ति द्वारा सामान्यजन के लिए सुदृढ साधना-सेतु का निर्माण भी करते चलना है। "शान्त-क्रान्ति" आत्म-साधना से ही परात्म-साधना के उदय का अभियान है जो आत्म पक्ष, परात्म-पक्ष एव परमात्म पक्ष तीनो को उजागर करने मे सक्षम है। साधु समाज ने विगत कुछ वर्षो मे सम्यक् ज्ञानार्जन की दिशा मे अच्छी दूरी तय की है, रथ बढ रहा है, पथ भी प्रशस्त हो रहा है ।

– आचार्य श्री नानेश [1]

---

1 प्रवचनाश

मर्यादा ही उत्तम आचरण का सुरक्षा कवच है, प्रभु महावीर का सदेश है कि आचरण की धारा सम्यक्ज्ञान के चट्टानी तटबन्धो मे ही मर्यादित रहनी चाहिए।

आचार्य स्वर्गीय गुरुदेव श्री गणेशीलालजी म सा ने श्रमण सस्कृति की सुस्थिति एव उन्नयन के लिये शातक्राति का अभियान चलाया, इस अभियान को ओजस् प्रदान करना साधुवर्ग का दायित्व है, इसके लिए साधुवर्ग को जहा साधना के पथ पर अविचल रूप से आरूढ रहना है, वहीं अपनी साधनागत अनुभूतियो की अभिव्यक्ति द्वारा सामान्यजन के लिए सुदृढ साधना-सेतु का निर्माण भी करते चलना है। "शान्त-क्रान्ति" आत्म-साधना से ही परात्म-साधना के उदय का अभियान है जो आत्म पक्ष, परात्म-पक्ष एव परमात्म पक्ष तीनो को उजागर करने मे सक्षम है। साधु समाज ने विगत कुछ वर्षो मे सम्यक् ज्ञानार्जन की दिशा मे अच्छी दूरी तय की है, रथ बढ़ रहा है, पथ भी प्रशस्त हो रहा है ।

– आचार्य श्री नानेश [1]

---

1 प्रवचनाश

अर्थ सहयोगी परिचय

'जिन्दगी के बदलते रूप' के प्रस्तुत सस्करण का प्रकाशन सघ/शासननिष्ठ, गुरुदेव के प्रति अनन्य आस्थावान सुश्राविका श्रीमती नगीना देवी तातेड (चादनी चौक, दिल्ली-110006) के अर्थ सौजन्य से हुआ है। आपका जन्म खण्डेला (राज.) मे सवत् 1986 में धर्मप्रेमी स्व श्रीमान जमनी सहायजी के घर हुआ था। पितृ परिवार में 4 पुत्रिया व एक पुत्र थे परन्तु आप बचपन से ही अपने पितृ श्री व मातु श्री स्व श्रीमती धनकंवरजी की लाडली रही। उनसे विरासत मे प्राप्त धार्मिक/नैतिक शिक्षा व सेवा, सघ निष्ठता के सस्कारों को वृद्धिगत रखा। आपने अपनी शिक्षा चांदनी चौक स्थित एस.एस. जैन पाठशाला में पूरी की।

आपमें धर्म के प्रति अटूट आस्था है व आप स्वय को त्याग एव तपस्या मे व्यस्त रखती हैं। आपने 4 वर्षीतप 1 मासखमण सहित 21 उपवास व 11 उपवास की लडी पूर्ण की है। धार्मिक क्षेत्र के साथ आप सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी सक्रिय हैं। दिल्ली की अनेक सस्थाओं से सम्बद्ध रहकर आप बहुआयामी सेवा कर रही हैं। श्री एस. एस. जैन महिला सगठन (चादनी चौक, देहली-6) की अध्यक्षा रहकर आप इसके चहुमुखी विकास हेतु समर्पण भाव से कार्य कर रही हैं। अपने स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए धार्मिक/सामाजिक कार्यों मे आपकी सेवा अनुरकणीय है।

आपका विवाह दिल्ली के सुख्यात घराने मे स्व श्री कल्लूमल जी तातेड के सुपुत्र श्रीमान मोहनलालजी के साथ सवत् 2001 में हुआ। आपके पांच सुयोग्य पुत्र (सर्व श्री विमलचन्दजी, नेमीचन्दजी, कुशलचन्दजी, महताबचन्दजी एव सजयजी जैन) हैं, जो सफल व कुशल व्यवसायी हैं तथा धार्मिक सस्कारों से पूर्ण भी। श्री नेमीचन्दजी तातेड सघ के उपाध्यक्ष हैं और संघ के सर्वतोमुखी विकास हेतु सजग व समर्पित हैं। श्रीमती तातेड के एक सुपुत्री-श्रीमती अंजू सकलेचा है तथा 5 पौत्र व 5 पौत्रिया भी। पूरा परिवार सघनिष्ठ व आचार्य भगवन्, युवाचार्य भगवन् स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. आदि के प्रति अटूट श्रद्धानिष्ठ हैं।

प्रकाशकीय

स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म सा. द्वारा प्रणीत 'जिन्दगी के बदलते रूप' उपन्यास का तृतीय संस्करण पाठको के हाथों में प्रस्तुत करते हुए असीम प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। तीन संस्करणो से कृति की रोचकता व लोकप्रियता स्वय सिद्ध है।

निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने मे साधुमार्गीय हुक्मेश सघ का विशिष्ट एव महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके संस्थापक आद्याचार्य महान् क्रियोद्धारक श्री हुक्मीचदजी म.सा. ने आगमिक धरातल पर क्राति कर तत्कालीन शिथिलाचार के उन्मूलन हेतु विशुद्ध एव सयममय जीवन का आदर्श उपस्थित किया था, जिससे प्रभावित होकर अनेक भव्य मुमुक्षुओ के सयम अगीकृत करने एव 'सागार धर्म' स्वीकार कर देशव्रती श्रावक-श्राविकाओ द्वारा चतुर्विध सघ का प्रवर्तन हो गया। शास्त्र सम्मत साध्वाचार आधारित क्रान्ति की इस धारा को पश्चात्वर्ती आचार्यों ने अनवरत जीवन्त बनाये रखा है। फलत. सम्प्रति साधुमार्गी परम्परा की पृथक् पहचान है। इस परम्परा के प्रभावक आचार्यों मे श्री शिवलालजी म.सा. प्रकण्ड विद्वान तथा परम तपस्वी थे और ज्ञान व क्रिया की प्रखरता के प्रतीक भी। श्री उदयसागर जी म.सा. मे विलक्षण प्रतिभा तथा विचक्षण प्रज्ञा का शुभ सयोग था। आप साध्वाचार व संयम के सुवासित पुष्प गुच्छ थे। श्री चौथमल जी म सा. निर्ग्रन्थ शिरोमणि व महान् क्रियावान तो थे ही उत्कृष्ट साधना के प्रतीक भी। श्री श्रीलालजी म.सा. ने साधना, सारल्य व तपश्चर्या की त्रिवेणी प्रवाहित की तो ज्योतिर्धर श्रीमद् जवाहराचार्य ने आत्मधर्म को राष्ट्रधर्म से जोडकर धर्म व शासनप्रभावना को युगीन आयाम प्रदान किये। उनके कालजीय विचार एव जीवन-दर्शन परिवर्तित जीवन मूल्यो के वर्तमान युग मे भी प्रासगिक, समीचीन एव ऊर्ध्वारोहण सहायक हैं। इसी क्रम मे शान्त क्रान्ति के अग्रदूत श्रीमद् गणेशाचार्य ने साध्वाचार, सयम दृढता एव आत्मसाधना द्वारा स्वय को श्रमण-सस्कृति का सजग प्रहरी सिद्ध किया। उनकी स्मृति मे श्री गणेश जैन ज्ञान भडार, रतलाम की स्थापना की गई, जिसमें 42 हजार प्रकाशित/हस्तलिखित ग्रन्थ सग्रहीत हैं। प्रस्तुत कृति की पाडुलिपि उसी भडार मे प्राप्त कर प्रकाशित की गई है।

इस धर्म सघ के अष्टमाचार्य वर्तमान शासनेश समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिवोधक, जिनशासन प्रद्योतक, अध्यात्मयोगी परम पूज्य प्रात स्मरणीय 1008 श्री नानालालजी म.सा. बहुमुखी प्रतिभा के धनी व विरल विभूति हैं। आपने विषमता, तनाव व सघर्षयुक्त विश्व को समता-दर्शन की अमिय धारा प्रदान की तो

अर्थ सहयोगी परिचय

'जिन्दगी के बदलते रूप' के प्रस्तुत सस्करण का प्रकाशन सघ/शासननिष्ठ, गुरुदेव के प्रति अनन्य आस्थावान सुश्राविका श्रीमती नगीना देवी तातेड़ (चांदनी चौक, दिल्ली-110006) के अर्थ सौजन्य से हुआ है। आपका जन्म खण्डेला (राज) में संवत् 1986 में धर्मप्रेमी स्व श्रीमान जमनी सहायजी के घर हुआ था। पितृ परिवार में 4 पुत्रिया व एक पुत्र थे परन्तु आप बचपन से ही अपने पितृ श्री व मातु श्री स्व श्रीमती धनकंवरजी की लाडली रही। उनसे विरासत में प्राप्त धार्मिक/नैतिक शिक्षा व सेवा, सघ निष्ठता के सस्कारों को वृद्धिगत रखा। आपने अपनी शिक्षा चादनी चौक स्थित एस.एस. जैन पाठशाला मे पूरी की।

आपमें धर्म के प्रति अटूट आस्था है व आप स्वय को त्याग एव तपस्या में व्यस्त रखती हैं। आपने 4 वर्षीतप 1 मासखमण सहित 21 उपवास व 11 उपवास की लड़ी पूर्ण की है। धार्मिक क्षेत्र के साथ आप सामाजिक व सास्कृतिक क्षेत्रो मे भी सक्रिय हैं। दिल्ली की अनेक सस्थाओं से सम्बद्ध रहकर आप बहुआयामी सेवा कर रही हैं। श्री एस. एस. जैन महिला संगठन (चादनी चौक, देहली-6) की अध्यक्षा रहकर आप इसके चहुंमुखी विकास हेतु समर्पण भाव से कार्य कर रही हैं। अपने स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए धार्मिक/सामाजिक कार्यों मे आपकी सेवा अनुरकणीय है।

आपका विवाह दिल्ली के सुख्यात घराने में स्व. श्री कल्लूमल जी तातेड के सुपुत्र श्रीमान मोहनलालजी के साथ सवत् 2001 में हुआ। आपके पांच सुयोग्य पुत्र (सर्व श्री विमलचन्दजी, नेमीचन्दजी, कुशलचन्दजी, महताबचन्दजी एवं संजयजी जैन) हैं, जो सफल व कुशल व्यवसायी हैं तथा धार्मिक सस्कारो से पूर्ण भी। श्री नेमीचन्दजी तातेड संघ के उपाध्यक्ष हैं और संघ के सर्वतोमुखी विकास हेतु सजग व समर्पित हैं। श्रीमती तातेड के एक सुपुत्री-श्रीमती अजू सकलेचा है तथा 5 पौत्र व 5 पौत्रिया भी। पूरा परिवार सघनिष्ठ व आचार्य भगवन्, युवाचार्य भगवन् स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म सा. आदि के प्रति अटूट श्रद्धानिष्ठ हैं।

प्रकाशकीय

स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. द्वारा प्रणीत 'जिन्दगी के बदलते रूप' उपन्यास का तृतीय संस्करण पाठको के हाथों में प्रस्तुत करते हुए असीम प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। तीन संस्करणो से कृति की रोचकता व लोकप्रियता स्वयं सिद्ध है।

निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने में साधुमार्गीय हुक्मेश सघ का विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके सस्थापक आद्याचार्य महान् क्रियोद्धारक श्री हुक्मीचदजी म.सा. ने आगमिक धरातल पर क्रांति कर तत्कालीन शिथिलाचार के उन्मूलन हेतु विशुद्ध एव सयममय जीवन का आदर्श उपस्थित किया था, जिससे प्रभावित होकर अनेक भव्य मुमुक्षुओं के सयम अंगीकृत करने एव 'सागार् धर्म' स्वीकार कर देशव्रती श्रावक-श्राविकाओ द्वारा चतुर्विध सघ का प्रवर्तन हो गया। शास्त्र सम्मत साध्वाचार आधारित क्रान्ति की इस धारा को पश्चात्वर्ती आचार्यों ने अनवरत जीवन्त बनाये रखा है। फलतः सम्प्रति साधुमार्गी परम्परा की पृथक् पहचान है। इस परम्परा के प्रभावक आचार्यों में श्री शिवलालजी म.सा. प्रकण्ड विद्वान तथा परम तपस्वी थे और ज्ञान व क्रिया की प्रखरता के प्रतीक भी। श्री उदयसागर जी म सा. मे विलक्षण प्रतिभा तथा विचक्षण प्रज्ञा का शुभ सयोग था। आप साध्वाचार व संयम के सुवासित पुष्प गुच्छ थे। श्री चौथमल जी म सा. निर्ग्रन्थ शिरोमणि व महान् क्रियावान तो थे ही उत्कृष्ट साधना के प्रतीक भी। श्री श्रीलालजी म सा. ने साधना, सारल्य व तपश्चर्या की त्रिवेणी प्रवाहित की तो ज्योतिर्धर श्रीमद् जवाहराचार्य ने आत्मधर्म को राष्ट्रधर्म से जोडकर धर्म व शासनप्रभावना को युगीन आयाम प्रदान किये। उनके कालजीय विचार एव जीवन-दर्शन परिवर्तित जीवन मूल्यो के वर्तमान युग मे भी प्रासंगिक, समीचीन एवं ऊर्ध्वारोहण सहायक हैं। इसी क्रम मे शान्त क्रान्ति के अग्रदूत श्रीमद् गणेशाचार्य ने साध्वाचार, सयम दृढता एव आत्मसाधना द्वारा स्वय को श्रमण-सस्कृति का सजग प्रहरी सिद्ध किया। उनकी स्मृति मे श्री गणेश जैन ज्ञान भडार, रतलाम की स्थापना की गई, जिसमें 42 हजार प्रकाशित/हस्तलिखित ग्रन्थ सग्रहीत हैं। प्रस्तुत कृति की पांडुलिपि उसी भडार मे प्राप्त कर प्रकाशित की गई है।

इस धर्म सघ के अष्टमाचार्य वर्तमान शासनेश समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोधक, जिनशासन प्रद्योतक, अध्यात्मयोगी परम पूज्य प्रातः स्मरणीय 1008 श्री नानालालजी म.सा. बहुमुखी प्रतिभा के धनी व विरल विभूति हैं। आपने विषमता, तनाव व सघर्षयुक्त विश्व को समता-दर्शन की अमिय धारा प्रदान की तो

मानव मात्र को सुख-शान्ति हेतु समीक्षण ध्यान का जीवन-सूत्र भी दिया। वस्तुत शाश्वत सत्य व जीवन-मूल्यों को युगीन चेतना से सम्पृक्त कर इस महामनीषी ने व्यसन मुक्ति, सस्कार क्रान्ति, अछूतोद्धार सहित चिन्तन, योग, दर्शन, ध्यान, सयम-साधना व साहित्य प्रणयन मे कीर्तिमान स्थापित किये हैं। उन्हीं का परिणाम है कि इस शताब्दी में साधुमार्गी जैन संघ एक आदर्श धर्मसघ रूप मे मान्य व समादृत है। उल्लेख्य है कि भावी नवम पट्टधर युवाचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. ने भी दर्शन क्रान्ति, सदाचार-शाकाहार, स्वाध्याय व समता समाज के सन्देश दिये हैं, जो स्तुत्य एव अनुकरणीय हैं। आचार्य श्री नानेश की विशिष्टता है कि आप अपने आज्ञानुवर्ती सत सतियाजी की प्रतिभा को उजागर करने हेतु पूर्ण सहयोग एव अवसर प्रदान करते हैं।

प्रस्तुत कृति आचार्य प्रवर के अन्तेवासी सुशिष्य विद्वद्वर्य ओजस्वी व्याख्याता श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. द्वारा प्रणीत है। आपने मात्र 13 वर्ष की आयु में आचार्य श्री की नेश्राय मे दीक्षित होकर पाच वर्षों में ही धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर की सभी परीक्षाए उच्च अकों में उत्तीर्ण कर वरीयता प्राप्त की। इतनी कम उम्र में दीक्षित होने एव जैन सिद्धान्त रत्नाकर परीक्षा उत्तीर्ण करने का श्रेय आपको ही है।

प्रखर मेधा, संयम साधना, प्रभावपूर्ण वक्तृत्वता एव साहित्य सृजन समन्वित आपका व्यक्तित्व आकर्षक है। आपने राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं विशेरू रूप से उत्तरी राजस्थान में विचरण कर जैनेत्तर श्रद्धालुजनों को जैन धर्म की ओर आकर्षित किया है तथा युवावर्ग को धर्माभिमुख करने में अहम् भूमिका का निर्वहन किया है। इतिहास, चिन्तन, मुक्तक, उपन्यास-कहानी, सगीत, संस्मरण, सम्पादन आदि अनेक विधाओं और विषयों पर आपकी गद्य व पद्य में काफी कृतिया पाठकों के समक्ष आ चुकी है। इनमें उल्लेखनीय हैं अष्टाचार्य गौरव गंगा, ऐसे जीए, आत्मन् की दिशा में, मुक्त दीप, जीवन के सत्य, नानेश दृष्टान्त सुधा, संस्कारित नारी, देर है पर अन्धेर नहीं आदि। इनके अतिरिक्त आपने आचार्य प्रवर द्वारा व्याख्यायित अंतगडदशांग सूत्र, भगवती सूत्र जैसे विशालकाय आगमों का अत्यन्त श्रमसाध्य सम्पादन एवं अनुवाद किया है।

आचार-विचार, व्यसन मुक्ति-सस्कार चेतना, धर्म के वैज्ञानिक पहलू एव शास्त्रीय ज्ञान प्रसार द्वारा आपने जिनशासन व नानेशवाणी की अभूतपूर्व प्रभावना की है। आप आचार्य भगवन् के प्रति अनन्य श्रद्धानिष्ठ व सर्वतोभावेन समर्पित हैं। जैनागमों, दर्शन ग्रन्थों, बौद्ध वेदान्त, न्याय तथा हिन्दी/संस्कृत गुजराती की

साहित्यिक कृतियों, व्याकरण ग्रन्थों आदि का तलस्पर्शी अध्ययन कर आपने प्रवचन कला में प्राविण्य प्राप्त किया है। आपके प्रवचनो की विशेषता है धर्म और विज्ञान का समन्वय।

प्रस्तुत कृति मे आपने कथावस्तु को इस प्रकार प्रस्तुत की है कि इसे पढना प्रारम्भ करने पर उत्सुकता बनी रहती है। कथानक, चारित्र चित्रण, कथोपकथन एवं अन्तर्निहित सन्देश की दृष्टि से मुनि श्री का सफल उपन्यास कार रूप उजागर होता है। कथानक उद्देश्य प्रधान है और एक शाश्वत सत्य/तथ्य को अभिव्यक्त करता है जीवन एक सतत प्रवाही सरिता तुल्य है, जो नित नूतन आयाम मे परिवर्तित होता रहता है। सुयोग व सुंसस्कार प्राप्त होने पर यह सुखद व स्वर्ग तुल्य बन जाता है।

प्रस्तुत संस्करण का प्रकाशन दिल्ली निवासी सघ/शासननिष्ठ सुश्राविका श्रीमती नगीना देवी तातेड के अर्थ सौजन्य से हुआ है। सत् साहित्य के प्रकाशन हेतु प्रदत्त अर्थ सहयोग हेतु सघ हार्दिक साधुवाद एवं आभार ज्ञापित करता है।

पूरा विश्वास है कि पाठक इस कृति के सन्देश को आत्मसात कर लाभान्वित होंगे और जीवन को सम्यक् दिशा में अग्रसर कर अन्तरावलोकन कर सकेंगे।

भवदीय

शान्तिलाल साड अध्यक्ष	**सागरमल चपलोत** महामंत्री	**गुमानमल चोरडिया** सयोजक

भवरलाल कोठारी केशरीचन्द सेठिया मोहनलाल मूथा

धनराज बेताला डा सजीव मानावत

(सदस्यगण, साहित्य समिति, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

''अन्त: स्फूर्त''

सत्य को अभिव्यक्ति देने की विविध विधाओ मे एक विधा, कथा भी है। कथा के माध्यम से आबाल-वृद्ध को सहज सरल ढग से शाश्वत सत्य समझाया जा सकता है। कथा की शैली मे जीवन का मौलिक स्वरूप प्रस्तुत करने की परम्परा चिर-अतीत से चली आ रही है।

जैन धर्म में शाश्वत रूप से विद्यमान 'द्वादशांगी' मे भी अनेक शास्त्र कथाओ से भरे हैं। भगवान् महावीर, गौतम बुद्ध, जैमिनि, प्रभृति धर्म प्रवर्तको ने तथा जीसस सुकरात कन्फ्यूशियस आदि अनेक दार्शनिक चिन्तकों ने घटित-अघटित अनेक उदाहरणो के माध्यम से अपने शिष्यो को समझाने का प्रयास किया है। अत यह तो स्पष्ट है कि जन-मानस का आकर्षण कथा के प्रति प्राचीन युग से चला आ रहा है।

आधुनिक युग के परिप्रेक्ष्य में भी यद्यपि जनता का आकर्षण कथा के प्रति है, तथापि कथा के प्रस्तुतीकरण में अन्तर आ गया है, शैली में परिवर्तन आ गया है। आज जिस शैली मे कथा-घटना को प्रस्तुत किया जाता है, वर्तमान की भाषा मे उसे उपन्यास के नाम से संबोधित किया जाता है। आज के युवको का ही नहीं, सामान्य जनता का भी उपन्यास के प्रति गहरा आकर्षण बना है। अत. यह आवश्यक हो जाता है कि उसी विधा में घटनाक्रम प्रस्तुत किया जाए, ताकि जनमानस सही दिशा में गति कर सके।

प्रस्तुत ''जिन्दगी के बदलते रूप'' को उसी विधा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यद्यपि घटनाक्रम काल्पनिक है और सभी पात्र काल्पनिक हैं तथापि इससे सत्य को अभिव्यक्ति मिलती है।

व्यक्ति की जिन्दगी मे समय के साथ अनेक बदलाव आते रहते हैं और अनेक घाव बनते हैं व भरते चले जाते हैं। प्रस्तुत घटनाक्रम मे जिन्दगी की उन विभिन्न अवस्थाओ को प्रगट करने का उपक्रम किया गया है जिनसे मानव मात्र को मानवता-नैतिकता-धार्मिकता की दिशा मे गतिमान होने के लिये सद्प्रेरणा मिले।

समता-विभूति, अनन्त आराध्य, समीक्षण ध्यान योगी, अनल्प उपकारी गुरुदेव आचार्य श्री नानेश का पतित-पावन कृपा वर्षण एवं सुखद सान्निध्य, मुझे साधना मे सतत् गति दे रहा है। साथ ही मुनिकुमारो की ममतामयी माता, शासन प्रभावक, परम उपकारी इन्द्रचन्दजी म. सा के मातृ वात्सल्य एवं उपकारों को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता है। दोनों महापुरुषों के प्रति असीम श्रद्धा को संजोए, प्रस्तुत है-

जिन्दगी के बदलते रूप

—मुनि ज्ञान

29-8-86 शुक्रवार (प्रथमावृत्ति से)

महावीर भवन, नया बास ब्यावर (राज.)

अभिमत

'जिन्दगी के बदलते रूप !'

यह एक ऐसी सचाई है जिसकी प्रत्यक्ष अनुभूति प्रत्येक मानव को पद-पद पर होती है। दुनियां बदलती रहती है, ससार में परिवर्तन निरन्तर होता रहता है, मगर यह सत्य शाश्वत है, अमर है, इसे कोई चुनौती नहीं दे सका, न दे सकता है।

श्री ज्ञानमुनि यथार्थनामा हैं। अध्ययनशील हैं और अपने विशाल अध्ययन और तज्जन्य अनुभव का लाभ जनसाधारण को वितरित करने मे कोई कसर नहीं रखते। जो कुछ प्राप्त करते हैं, उसमे अपने चिन्तन को मिलाकर, उसे कई गुणा करके, सर्वसाधारण को बांट देते हैं। वस्तुत वे एक ऐसे उदीयमान नक्षत्र हैं जिनसे यह आशा की जाती है कि भविष्य मे वे प्रकाशपुञ्ज सिद्ध होगे और समाज को प्रखर ज्योति प्रदान करेगे।

प्रस्तुत पुस्तक का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट हो जाता है। 'नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' कविवर कालीदास की इस उक्ति को बडे विस्तार से मुनि जी ने उपन्यास की विधा मे प्रस्तुत किया है। उपन्यास की विधा अपनाने से पुस्तक सर्वजनग्राह्य, सुबोध और मनोरजक बन गई है। जगह-जगह कतिपय ऐसी सूक्तियो का भी समावेश करके उन्हे विशिष्ट टाइप मे मुद्रित किया गया है जो जीवन मे अतीव उपयोगी हैं एव जीवन निर्माण मे सहायक बन सकती हैं।

पुस्तक रोचक है, शिक्षाप्रद है। 'कला कला के लिए' इस सिद्धान्त को अस्वीकार करके लेखक ने 'कला जीवन के सस्कार के लिए' इस सिद्धान्त को अपनाया है और यही उचित भी है। जो कला मानवजीवन को दिव्य और भव्य बनाने मे सहायक न हो उसका कोई मूल्य नहीं, वह निरर्थक है। यही नहीं, यदि वह विलसिता-विकृतिजनक है तो उसे 'कला' नहीं, काल ही कहना चाहिए। इस तथ्य पर लेखक मुनिश्री ने पूरा ध्यान दिया है।

प्रस्तुत उपयोगी रचना के लिए मुनि श्री धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है पाठकगण इस पुस्तक के निष्कर्ष पर विचार करके जीवन के सत्य को पहचानेंगे।

चम्पानगर, -शोभाचन्द्र भारिल्ल

ब्यावर (राज)

(द्वितीयावृति से)

जिन्दगी के बदलते रूप

मेरीन ड्राइव से दौडती हुई मारुती कार थाना की ओर जा रही थी। कार तीव्र वेग से चली जा रही थी। परन्तु चेम्बूर के चौराहे पर लाल बत्ती जल जाने से तेजी से ब्रेक मारकर रोकते हुए किशोर ने सध्या से कहा– आज की सध्या तो थाना के तालाब मे डूबते सूरज के रमणीय रूप को देखते हुए नाव खेते–खेते बितानी है। सध्या का वह सुनहरा टाईम बडी ही सुखद अनुभूति कराने वाला होता है।

हा–हा शादी से पहले एक बार मैं भाई महेश के साथ गई थी और उस तालाब मे नाव चलाई थी। लेकिन उस समय का आनन्द और था, और इस समय का मजा कुछ और ही आयेगा। सध्या की बात सुनकर किशोर ने कहा, "लेकिन ऐसा क्यो ? उस समय भी तो तालाब वही था, जो इस समय है। सध्या भी वही थी जो आज होगी। सब कुछ तो वही रहेगा। फिर आज का विशेष आनन्द कैसा ?

जरा सकुचाते हुए सध्या ने कहा–थोडा आप समझने की कोशिश करिये। मैं नहीं समझती कि आप मेरा ईशारा नहीं समझते, फिर भी जान–बूझकर मेरे से सब कुछ स्पष्ट कराना चाहते हैं तो सुनिये उस समय मेरे साथ भाई था– तब भ्रातृ–स्नेह प्राप्त था, पर आज मेरे साथ मेरे प्राणनाथ है, जीवन खवैया है, अत आज का आनन्द तो विचित्र प्रकार का होगा ही।

इतने मे लाल बत्ती बुझ गई और हरी बत्ती जल गई। सैंकडो वाहन जो रुके पडे थे, वे एक साथ चल पडे। किशोर भी बातो के सिलसिले के साथ गाडी को रफ्तार देने लगा।

इतने ही मे तो एक चौदह वर्षीय लडका हाथ मे कुछ रुपये लिये तेजी से सडक को पार कर रहा था। उसका ध्यान किसी भी अन्य तरफ नहीं था। बस सामने जो मेडिकल स्टोर्स था, वहा पर जल्दी से जल्दी पहुच जाना चाहता था। उसने ट्रेफिक की परवाह नहीं की, और बढता चला गया। अन्य सजग ड्राइवर तो सतर्कता के साथ गाडी से उसको बचाकर आगे बढ गये। पर अपनी नई नवेली पत्नी के साथ बातो मे आकण्ठ किशोर जो कि ब्रेक लगाना तो चूक गया और एक्सीलेटर पर और अधिक दबाव दे दिया। परिणाम स्वरूप कार पूर्व से भी तेज रफ्तार से चलने लगी। इधर एकदम सामने बालक सडक को पार कर रहा था, किशोर के सतर्क न होने से बच्चा सडक पार करे, उससे पहले ही कार ने उसे कुचल डाला। इस झटके ने किशोर की मादकता खतम कर दी। उसे ज्ञात हुआ कि– एक्सीडेण्ट हो गया है। अगर मैं यहा रुक गया तो यह झोपडपट्टी वाले लोग हालत खराब कर देगे। अब तो भागना ही अच्छा है। यही सोचकर उसने एक्सीलेटर पर और अधिक दबाव डाल दिया। कार हवा से बाते करने लगी।

वह चौदह वर्षीय बालक अतुल, जो कि अपने पिता रामसिह के लिये दवा लेने जा रहा था। पिता को जल्दी से जल्दी दवा मिल जाय, ताकि वे स्वस्थ हो जाय, इस चक्कर मे उसका किसी तरफ ध्यान नहीं था। पर विधि (कर्मो) का विधान कुछ और ही था। कार के झपाटे ने उसे भूमिसात् कर दिया और वह सडक पर तडफडाने लगा। आस–पास के लोगो ने पुलिस मे रिपोर्ट करवाई और तुरन्त ही उसे एम्बुलेस में हास्पिटल पहुचाया गया। माथे मे गहरी चोट आई थी। खून भी बहुत बह चला था। डॉक्टर लोग उसके उपचार मे लग गये थे। उसके जेब में ही उसके घर का पता, एक कागज मे लिखा मिल गया था। घर पर सूचना कर दी गई।

अतुल के पिता रामसिह तो बिस्तर मे पडे थे, उनकी तो उठने–बैठने की भी शक्ति नहीं थी। और माता चन्द्रमुखी आस–पास के फ्लेटो मे काम करने गई हुई थी। अतुल का छोटा भाई 11 वर्षीय अपृर्व [illegible] घर पर

था। उसे जब यह सूचना दी गई तो वह तुरन्त हॉस्पिटल पहुंचा और डॉक्टरो से भाई को बचाने की रिक्वेस्ट करने लगा। डॉक्टरो ने कहा, "वैसे केस गम्भीर है, फिर भी हम बचाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं इसका ब्लड बहुत चला गया है, खून की बोतले चढानी पडेगी। अत इसके लिए पाच सौ रुपये की आवश्यकता है। अगर तुम कहीं से भी पाच सौ रुपये की व्यवस्था कर सको तो इसे खून दिया जा सकता है। अन्यथा यह बचना मुश्किल है।"

जिनके पास दो जून खाने की व्यवस्था भी पूरी नहीं, वे पाच सौ रुपये कहा से लाये और फिर अपूर्व के पास तो एक फूटी कोडी भी नहीं थी। उसका किसी से ऐसा कोई खास परिचय भी नहीं था कि उसे कोई पाच सौ रुपये दे सके, उसका माथा तेजी से घूमने लगा। इतने मे ही उसे अपने धनी–मानी अकल कृष्णसिह की याद आई। जो कि बम्बई की क्रीम जगह बालकेश्वर मे अपने एक करोड के सुन्दर फ्लेट मे निवास कर रहे थे। उसने सोचा क्यो न मैं अकल के पास जाकर पाच सौ रुपये उधार ले आऊ, और फिर धीरे–धीरे मेहनत–मजदूरी करके चुका दूगा। यही सोचकर उसने डॉक्टर से दो रुपये मागकर लिये और जल्दी से सिटी ट्रेन मे बैठकर बॉम्बे सेन्ट्रल पहुचा और भागते हुए बालकेश्वर जाकर चमचमाती चन्द्र प्रकाश बिल्डिग के छट्ठे माले के फ्लेट न 57 पर पहुचा और तेजी से घण्टी बजाने लगा। यह फ्लेट कृष्णसिह का ही था और आज छुट्टी का दिन होने से घर पर ही वीडियो पर पिक्चर देख रहे थे। इन्होंने सोचा कोई दोस्त आया दिखता है। अत वे खुद ही उठे और गेट खोल दिया, पर जब उन्होने देखा सामने फटे हाल अपूर्व खडा है तो उसे देखते ही उनकी नाक भोह सिकुड गई और वे जल्दी ही गेट बन्द करने वाले थे कि अपूर्व उनके पैरो मे पड गया और गिड–गिडाने लगा। अकल मेरे भाई अतुल को बचा लीजिये। बर्बाद हो रहे हमारे परिवार की रक्षा कर लीजिये। मैं आपसे कुछ नहीं मागता केवल पाच सौ रुपये दे दीजिये। आप विश्वास करे मैं आपके पैसे, ब्याज सहित चुका दूगा। अभी इस समय मुझे सख्त पैसो की आवश्यकता है, अतुल का एक्सीडेन्ट हो चुका है। वह अस्पताल मे अन्तिम श्वासे गिन रहा है। डॉक्टरो का कहना है, इसे खून की सख्त आवश्यकता है, इसके लिए पाच सौ रुपये चाहिए।

"अकल मेहरबानी करके पाच सौ रुपये दे दे। मैं आपका उपकार जिन्दगी भर नहीं भूलूगा।" इस प्रकार कहते–कहते अपूर्व के शब्द टूटते चले गये। पर पत्थर दिल कृष्णसिह नही पसीजा सो नहीं पसीजा। वह तो यही सोचने लगा कि यह भिखारी यहा कहा आ गया। पैर को झटका मारते हुए कृष्णसिह ने अपूर्व को एक तरफ उछाल दिया और यह कहते हुए गेट–लॉक कर दिया कि ऐसे भिखारियो को देने के लिए मेरे पास एक पैसा भी नही है। चला जा यहॉ से, नहीं तो पुलिस को फोन करवा के एरेस्ट करवा दूगा। झटके के कारण अपूर्व सामने वाली दिवाल से जा टकराया। आखो मे एकदम अधेरा छा गया। जब कुछ ठीक हुआ तो देखा कि फ्लेट का दरवाजा बन्द हो चुका है। अब अपूर्व की आशा की किरण बुझ चुकी थी।

अब तो उसे चारो ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखलाई देने लगा। बडी मुश्किल से वह हॉस्पिटल पहुचा तो उसे ज्ञात हुआ कि अतुल ने प्राण छोड दिये हैं। उसका भाई ससार छोडकर परलोक की यात्रा के लिए रवाना हो चुका है। इस समाचार से उसके मस्तिष्क को एक बहुत बडा झटका लगा और वह वही गिर पडा, बेहोश हो गया। कुछ घन्टो बाद उसे होश आया तो वह चुपचाप उठकर चल पडा अपनी खोली (झोपडी) की ओर। लाश ले जाने वाला भी कौन था। अत उसे लावारिश लाशो के साथ मुर्दाघर मे फेक दिया गया। अपूर्व खोली मे जाकर पागल की तरह एक कोने मे गिर पडा।

शाम को जब उसकी मा चन्द्रमुखी पहुची तो घर का यह हाल देखकर उसने अपूर्व से पूछा–"अरे ! तू ऐसे कैसे पडा है ? अतुल अभी तक आया नही, क्या बात है ?" इसी बीच सब कुछ सुन समझ रहे बिस्तर पर पडे रामसिह ने चन्द्रमुखी को कहा कि तुम्हारा बेटा अतुल अब कभी भी नहीं आने वाला है। उसका एक्सीडेण्ट हो चुका है। यह सूचना मध्याह्न मे आई थी। अपूर्व हॉस्पिटल पर गया भी और शाम को जब घर पर आया, तब बहुत पूछने पर उसने इतना ही बतलाया कि अतुल की मृत्यु हो गई है। "

चन्द्रमुखी के लिये यह अत्यन्त दु खमय समाचार थे, पति तो पहले ही बिस्तर पर पडे हैं, अतुल और चन्द्रमुखी ही घर का खर्च चला रहे थे। अतुल दिन भर बडे साहबो की बूट पालिश करके जो भी मिलता, वह घर ले आता था और चन्द्रमुखी फ्लेटो मे सेठानियो के यहा कहीं बर्तन माजने, तो कहीं रसोई बनाने तो कहीं कपडे धोने आदि का काम कर, उसे जो भी मजदूरी मिल जाती उससे जैसे तैसे घर खर्च चला रही थी। इसी बीच अतुल की दु खद घटना से चन्द्रमुखी के सारे शरीर मे दु ख की एक तीव्र लहर व्याप गई। दु ख की अति ने उसकी आवाज और आसू भी समाप्त कर दिये वह न तो रो पा रही थी और न आसू ही बहा पा रही थी।

चन्द्रमुखी एक साहसी सन्नारी थी। वह बचपन मे सतो की सगत मे आया–जाया करती थी, उस समय उसने एक योगी से प्रवचन मे सुना था– **"जो हो चुका सो हो चुका वह पुन. होने वाला नहीं है। अत जो नहीं होने वाला है, उसके विषय मे चिंता करके अपने वर्तमान एव भविष्य को नहीं बिगाड़ना चाहिये।"** योगी के ये शब्द चन्द्रमुखी के मस्तिष्क मे गूजने लगे। इन शब्दो से उसे आश्चर्यजनक सम्बल मिला। उसने सोचा जो जाना था, वह चला गया। अब वह वापस नहीं आने वाला है, यदि मैं उसी चिन्ता मे डूबी रही तो अपने पति एव इस छोटे बेटे अपूर्व से भी हाथ धो बैठूगी, मुझे अपना कर्त्तव्य निश्चित करना है। दु ख द्वन्द्वो से साहस के साथ जूझना है। पति की सेवा एव अपूर्व को पढा–लिखा कर होशियार करना है। जिन्दगी के इन तूफानो से डटकर सामना करना है। इन्ही विचारो मे कितना समय चला गया, उसे ज्ञात ही नही हो सका, जब उसने वैचारिक दुनिया से हट कर व्यावहारिक दुनिया मे झाका तो देखा घडी मे रात्रि की बारह बज चुके हैं। अपूर्व पागल की तरह एक तरफ पडा है। उसे लगा कि इसने दिन भर खाना भी नहीं खाया होगा। रामसिह भी विचारो मे खोये पलग पर पडे हैं। साहसी चन्द्रमुखी ने उठकर दु ख की इस विकट बेला मे भी भोजन बनाया और पति एव पुत्र को समझा–बुझाकर भोजन कराया। साहसी नारी ही दु ख को सुख के रूप मे बदल सकती है।

अभी रात्रि बहुत थी। इसलिये वह भी बिस्तर पर जा पडी, पर आज उसे नीद कहा आने वाली थी। विचारो की लम्बी कतार ने उसके मस्तिष्क को घेर लिया और वह सोचती चली गई।

सच है गरीब के सुख–दु:ख को पूछने वाला कोई नहीं हैं। **" दुनिया दौलत की है, उसे दौलत ही प्यारी है इन्सानियत नहीं।"**



(2)

चन्द्रमुखी सुबह से शाम तक काम मे लगी रहती। घर का खाना बनाना एव पति की सेवा सुश्रुषा तो करती ही थी, पर घर का रोजगार चलाने के लिए चार फ्लेटो मे काम करने भी जाया करती थी। प्रत्येक फ्लेट से उसे मासिक सौ रु मिलते थे, चारो फ्लेटो से कुल चार सौ रुपये मासिक की उनकी इन्कम थी। चार सौ ये और तीन–चार सौ रुपये अतुल बूट पालिश करके कमा लेता था। इस प्रकार सात आठ सौ रुपयो से घर खर्च जैसे–तैसे चल रहा था। पर अब अतुल तो परलोक की यात्रा के लिये सबसे नाता तोडकर जा चुका था। चन्द्रमुखी अपनी सीमित आय से मुश्किल से घर खर्च चलाने लगी थी। अपूर्व तो अभी बच्चा ही है। यद्यपि है प्रतिभाशाली, पर अभी तो भाई के सदमे ने उसे विक्षिप्त–सा बना रखा है। चन्द्रमुखी को अपूर्व की भी बडी चिन्ता बनी रहती थी। अतुल तो चला गया और अपूर्व यदि इस प्रकार पागल ही बना रहा तो फिर क्या होगा ? आज तो थोडा बहुत कमा लेती हू, पर जब मैं अशक्त हो गई तो फिर भूखो ही मरना पडेगा। चन्द्रमुखी तो अपूर्व को पढा–लिखाकर ग्रेजुएट बनाना चाहती पर चाहने से क्या हो क्योकि उसके पास आर्थिक सुविधा भी नहीं थी और फिर अभी अपूर्व गमगीन–सा बना हुआ था। खैर–वह अपने दिल पर पत्थर रखकर कर्त्तव्य की वेदी पर चढी मशीन की तरह कार्य मे लगी हुई थी।

जब वह सेठ किशोरीलालजी के यहा बर्तन साफ कर रही थी। उस समय सेठ किशोरीलाल की दृष्टि दूर से उसके ऊपर पडी। उसके सुन्दर चेहरे एव यौवन को देखकर सेठ किशोरीलाल मुग्ध हो गये। सेठ किशोरीलाल 70 वर्ष के बूढे थे, पत्नी का स्वर्गवास हो चुका था। बेटे–बेटियो, पोते–पोतियो से भरा–पूरा परिवार था। धन सम्पत्ति की कोई कमी नहीं थी। सेठ किशोरीलाल के कोई काम तो था नहीं क्योकि व्यापार का कार्य तो बेटो एव पोतो ने सम्भाल लिया था। इसलिये वे घर पर ही बैठे आराम किया करते थे। बेटे को व्यापार से फुर्सत नहीं थी तो बहुओ को घर के कार्य एव श्रृगार प्रसाधन से ही फुर्सत नहीं थी। पोते–पोती भी

स्कूल कॉलेज चले जाते थे। छुट्टी होने पर या तो स्टडी रूम मे चले जाते या फिर दोस्तो के साथ घूमने चले जाया करते थे। कुल मिलाकर सेठ किशोरीलाल से दो मिनिट भी बात करने की फुर्सत किसी के पास नहीं थी। सेठ किशोरीलाल धार्मिक प्रवृत्ति के भी नहीं थे, जिससे कि वे राम–कृष्ण महावीर किसी का भी नाम स्मरण करके अपना समय काट सके। वे तन से जरुर बूढे हो चुके थे, पर मन अभी भी नव–अगडाई ले रहा था। पत्नी के चलने के बाद उनकी कामवासना ने और भी अधिक उग्ररुप धारण कर लिया था। पर करे तो क्या करे, लोक लाज भी कोई चीज होती है। बेटे–पोतो के सामने वे कुछ भी कह नहीं पाते थे, मन–मसोस कर चुपचाप अपने रूम मे सिगार के कश खींचते हुए पडे रहते थे।

सेठ किशोरीलाल की दृष्टि मे चन्द्रमुखी का सुन्दर रूप समा गया था। कामुकता उनके ऊपर हावी होती जा रही थी। पर अपने बेटे–बहुओ की लाज के कारण वे चन्द्रमुखी से बोल भी नहीं पाते। बस दूर से ही उसे चुपचाप निहारा करते थे। किसी मौके की तलाश मे थे कि कैसे भी वे चन्द्रमुखी को अपने वश मे करके अपनी कामुकता की जघन्य हवश पूरी करना चाहते थे। आखिर सेठ किशोरीलाल को एक दिन ऐसा चान्स मिल ही गया। परिवार के सारे ही सदस्य आज प्रात काल खा पीकर सारी तैयारी करके घूमने के लिये कारो मे बैठकर खण्डाला घाट के लिये रवाना हो चुके थे। सेठ किशोरीलाल अकेले ही घर पर थे। झूठे बर्तनो का ढेर पडा था। सेठ किशोरीलाल ने सोचा आज अच्छा मौका है, घर पर कोई नहीं है, चन्द्रमुखी आने वाली है, कैसे भी हो आज तो मुझे अपनी हवश को पूरी करना ही है। सेठ किशोरीलाल मन मे विचारो के तानेबाने बुन रहा था और इधर ठीक टाईम पर चन्द्रमुखी ने बर्तन साफ करने के लिये फ्लेट मे प्रवेश किया। इधर–उधर देखा तो उसे कोई नजर नहीं आया, पर झूठे बर्तनो का ढेर पडा था। उसने सोचा कोई हो या न हो मुझे तो अपना काम करना है, अत वह शीघ्रता से अपने काम मे जुट गई। क्योकि रोज की अपेक्षा आज बर्तन ज्यादा थे। सेठ किशोरीलाल अपने रूम मे बैठे–2 चन्द्रमुखी की सारी हरकतो पर दृष्टि जमाए हुए थे। वे सोच रहे थे कि चन्द्रमुखी, जब फ्लेट मे प्रवेश करेगी और घर मे किसी को भी नहीं

देखेगी तो चोरी करने का अच्छा मौका समझकर कुछ वस्तुए चुराकर जाने लगेगी उस समय मे इसका फोटो खींच लूगा, और फिर उससे कहूगा कि तुमने हमारे फ्लेट से वस्तुए चुराई हैं, अत तुझे थाने मे एरेस्ट किया जायेगा। तब वह घबरा जायेगी और बचाने के लिये मेरी मिन्नत करने लगेगी, उस समय मैं उसे समझा लूगा कि मैं तुझे एक ही शर्त पर बचा सकता हू कि तुम मेरी कामना पूरी कर दो, यदि समय–समय पर तुम मेरी कामना पूरी करती रहोगी तो तुझे बचा भी लूगा और प्रत्येक माह दो सौ रुपये अलग से और दूगा। बस तुम मेरी बात किसी को नहीं कहोगी और मैं–तुम्हारी बात किसी को नहीं कहूगा। पर सेठ किशोरीलाल ने जो सोचा, उसके ठीक विपरीत हुआ। वस्तुए चुराने की बात तो दूर पर इधर–उधर किधर भी नहीं झाकते हुए चन्द्रमुखी तो सीधी अपने काम मे लग गई थी। सेठ किशोरीलाल की पहली योजना पर तो पानी फिर गया पर वे आज का सुन्दर चान्स चूकना नहीं चाहते थे। अत रूम से निकल कर सीधे चन्द्रमुखी के पास चले आये। पर चन्द्रमुखी तो पूर्ववत् अपने काम मे लगी रही। सेठ किशोरीलाल अपनी वाणी मे मधुरता घोलते हुए चन्द्रमुखी से उसके घर की टोह लेने के लिये उसके सुख–दु ख का हाल पूछने लगे।

–"अरे चन्द्रमुखी ! तुम्हारे पति क्या करते हैं ?" चन्द्रमुखी यद्यपि कुछ कहना नहीं चाहती थी। पर सेठ किशोरीलाल की अवस्था को देखकर उन्हे पूजनीय मानकर आदर के साथ जवाब दिया–"सेठजी ! मेरे पति कुछ भी नहीं करते हैं, क्योकि वे बीमार हैं अत खाट पर सोये रहते है।"

–"तुम्हारे लडके कितने हैं ?" किशोरीलाल ने दूसरा प्रश्न उछाला। "पहले तो दो थे, पर बडे लडके की एक्सीडेट से मृत्यु हो जाने से अब एक ही लडका है।"

–"ओहो ! तब तो तुम बडे सकट से गुजर रही हो। कैसे क्या, घर का खर्च चलाती होगी, "जेब से सौ–सौ के दस नोट निकालकर चन्द्रमुखी के सामने फेकते हुए सेठ किशोरीलाल ने कहा, "लो ये रुपये तुम्हारे काम आयेगे। जब भी तुम्हे पैसो की आवश्यकता पडे मुझसे ले जा सकती हो।"

सेठ की इस उदारता का दृष्टिकोण चन्द्रमुखी की विचक्षण बुद्धि से छिपा नही रह सका। इसलिये उसने विनम्र किन्तु अत्यन्त स्पष्ट शब्दो के साथ कह दिया कि "सेठजी आप महान् हैं जो इस प्रकार गरीबो के सुख–दु ख का ख्याल रखते हैं, पर मुझे पैसो की आवश्यकता नहीं है। मैं बिना मेहनत का एक पैसा भी नही लेना चाहती, और फिर मैं तो मजदूरी करके अपना काम चला लेती हू, पर बम्बई मे कई परिवार ऐसे भी हैं, जिनके कोई भी कमाने वाला नहीं है, उन्हे भूखो मरना पडता है। अत. मेरे से भी ज्यादा रुपयो की आवश्यकता उन्हे हैं, आपको यदि अपनी उदारता का परिचय देना हैं तो उन्हे दे, मुझे नही चाहिए रुपये।"

सेठ किशोरीलाल ने अपनी दूसरी स्कीम भी खाली जाती देखकर उसे समझाया कि "देखो ! ऐसा नही करते। तुम्हारे पति का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है और बच्चे को भी पढा–लिखाकर होशियार करना है, जिससे तुम्हारा बुढापा अच्छी तरह से कट सके, इसलिये तुम मेरी बात मान जाओ और मुझे भी अपना समझकर ये रुपये रखलो।"

पर चन्द्रमुखी कोई साधारण औरत नहीं थी, जो चिकनी–चुपडी बातो मे आ जाती। उसे पैसा नही, सतीत्व प्यारा था। उसने साफ शब्दो मे कह दिया "सेठजी मैं भूखा रहना पसन्द करती हू, पर हराम का एक पैसा भी मुझे नही चाहिये।"

सेठ किशोरीलाल ने देखा यह ऐसे मानने वाली नहीं है। इसे समझाने मे देरी लग सकती है। कहीं ये काम करके भाग न जाय, अत सेठ किशोरीलाल ने फ्लेट के मेन–गेट को लॉक करके चाबी अपनी जेब मे रखली, और फिर से चन्द्रमुखी को समझाने की कोशिश करने लगा–

"चन्द्रमुखी वस्तुत तुम्हारे नाम के अनुरुप ही तुम्हारा चेहरा चन्द्रमा की तरह सौम्य और सुन्दर है। तुम्हारा शरीर बर्तन माजने एव गन्दी खोली मे रहने योग्य नहीं है। तुम्हे सुन्दर फ्लेट मे श्रृगार प्रसाधन के साथ आराम करना चाहिये।" सेठ किशोरीलाल ने इन वाक्यो से अपने मन की कुछ अभिव्यक्ति तो कर ही दी। सेठजी के वाक्यो को सुनकर चन्द्रमुखी का सतीत्व जाग उठा। उसने कहा–"सेठजी ! आपको पराई औरत के सामने ऐसी बाते करते शर्म आनी चाहिये। **नारी की सुन्दरता शरीर नहीं, अपितु**

उसका शील एवं पतिव्रत धर्म होता है। जिसका शील नष्ट हो गया वह गदी नाली में पडे कीडे की तरह होती है। भ्रष्ट नारी की शारीरिक सौन्दर्यता का कोई महत्त्व नहीं होता। आप अपना काम करिये और मुझे अपने हाल मे छोड दीजिए।"

किन्तु सेठ किशोरीलाल पर तो काम का भूत सवार था, वे कहा चूकने वाले थे। उन्होने निर्लज्जता के साथ स्पष्ट शब्दो मे बतला दिया "देखो चन्द्रमुखी ! तुम मेरी बात मान जाओ, आज अच्छा मौका है घर मे कोई नहीं तुम और मैं दो ही हैं। एक बार मेरी तृष्णा शान्त कर दो, तुम विश्वास रखो मैं किसी को भी नहीं कहूगा। और तुम्हे इतने पैसे दूगा कि तुम अच्छी तरह अपने पति का इलाज एव पुत्र को पढा–लिखा सको।"

चन्द्रमुखी को ये शब्द तीर की तरह चुभने लगे। आज उसके सतीत्व को ललकारा जा रहा था। चन्द चादी के टुकडो के नीचे उसके बहुमूल्य जीवन को कुचलने की साजिश हो रही थी। पर चन्द्रमुखी इस सुनहरे आकर्षण मे कहा फसने वाली थी। उसने सेठजी को जरा कठोर शब्दो मे कहा–"सेठजी जरा होश मे आकर बात करिये। आप श्रीमन्तो की दृष्टि मे दुनिया मे महत्त्वपूर्ण चीज पैसा ही है। पैसो से आप सब कुछ खरीद लेना चाहते हैं। पर यह मत भूलिये कि **इन्सानियत पैसो से भी बढकर होती है।** हम गरीब हैं तो क्या हुआ पर हमारे पास इन्सानियत है, नैतिकता है। मैं किसी भी कीमत पर अपने सतीत्व को छोडने के लिए तैयार नही हू। अत आपका भला इसी मे है कि आप चुपचाप अपने रूम मे चले जाइये। यदि आपने आगे बढने की हरकत की तो आपके बेटे–बेटियो एव बहुओ के सामने आपका भण्डा फोड कर दूगी। तब आपकी इज्जत दो कौडी की भी नहीं रहेगी।" पर सेठ किशोरीलाल के ऊपर तो काम का भूत इस कदर सवार था कि उसे दूसरी बाते सुनाई ही नही दे रही थी। वह कैसे भी हो, आज तो अपनी कामना पूरी करना ही चाहता था। इसलिये वह चन्द्रमुखी की बात सुनी–अनसुनी करके उसे पकडने के लिए आगे बढ गया। सेठ को अपनी तरफ आते देखकर बर्तन साफ करना छोडकर चन्द्रमुखी फ्लेट से बाहर निकलने के लिये दरवाजे की तरफ भागी। पर देखा दरवाजा तो लॉक है और चाबी का कोई

अता–पता नही है। इतने मे पीछे से सेठ किशोरीलाल की आवाज आई, "अरे चन्द्रमुखी ! ऐसे तुम नहीं भाग सकती। चन्दा कितना ही छिपना चाहे, पर उसे भी तो आकाश मे रहकर सबको शीतल प्रकाश देना होता है। अत जब तक तुम भी मुझे तृप्ति न दे दो तब तक फ्लेट से बाहर ही नही निकल सकती।"

चन्द्रमुखी विवश थी, क्योकि चाबी सेठ की जेब मे थी, जब तक चाबी हाथ मे न लगे, तब तक फ्लेट से बाहर निकलना असम्भव था। आखिर चन्द्रमुखी ने उसे अत्यन्त जघन्य शब्दो मे फटकार लगाई, फिर भी सेठ को सद्बुद्धि नही आई, और दोनो मे गुत्थम–गुत्था होने लगी।

चन्द्रमुखी अपने शील की रक्षा हर कीमत पर करना चाहती थी। सेठ किशोरीलाल के शरीर मे ताकत तो थी पर था आखिर बूढा ही। चन्द्रमुखी ने अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे एक झटका मारा तो वह लडखडाता हुआ पीछे चला गया। पीछे की तरफ एक लम्बा–चौडा दर्पण था अत सेठ किशोरीलाल का माथा उससे टकरा गया। दर्पण के टुकडे–टुकडे हो गये। काच के टुकडे उसके गले मे चुभ जाने से खून निकल पडा और वेदना भी तीव्र होने लगी। वेदना के इस तीव्र वेग से सेठ किशोरीलाल के काम का भूत उतर गया और वह दु ख से कराह उठा। चन्द्रमुखी को तो यह अच्छा अवसर हाथ लगा उसने झट से सेठ की जेब मे हाथ डाला और चाबी निकालकर लॉक खोलकर फ्लेट से बाहर निकल आई और अपनी खोली की ओर बढ चली। सेठ अन्दर पडा कराहता रहा। कोई भी उसे पूछने वाला नही था। आखिर कामी पुरुषो का यही परिणाम होता है।



(3)

वास्तव मे अपूर्व पागल नहीं था। वह सब कुछ सुन समझ सकता था, पर भाई की मृत्यु के शॉक ने उसके चेहरे का बचपन उडा दिया था। वह हर समय एक गम्भीर चितन मे डूबा रहता था। आज भी वह घर पर ही बैठा गहरे चितन मे डूबा हुआ था कि उसने असमय मे मम्मी को खोली मे आते देखा तो उसके मन मे विचार आया कि आज मम्मी रोज की अपेक्षा जल्दी कैसे आ गई ? क्योकि रोज तो वह सेठ किशोरीलाल के यहा काम करने के बाद दूसरे फ्लेट मे भी काम करने जाती थी, पर आज उसका मूढ खराब हो जाने से सीधी घर पर ही चली आयी थी। आज उसका चेहरा भी बहुत उदास एव गमगीन था। आते ही वह बिस्तर पर जा पडी थी। चन्द्रमुखी की यह हालत देखकर अपूर्व से रहा नही गया था। भाई के जाने के बाद वह चुपचाप सोचा करता था, पर आज वह चन्द्रमुखी के पास गया और बोला—"मम्मी क्या बात है। आज तुम इतनी उदास एव दु खी नजर क्यो आ रही हो, क्या हुआ तुम्हे ?"

क्या बताये चन्द्रमुखी उस छोटे से बालक अपूर्व को, चन्द्रमुखी ने सोचा बेटे को घटित घटना बताने से कोई लाभ नहीं। इस घटना को सुनने पर इसके मानस पर और अधिक गलत प्रभाव पडेगा। इसलिये चन्द्रमुखी ने सच्चाई पर पर्दा डालते हुए कहा "पुत्र ! मुझे दु ख इस बात का है कि तुम्हारा भाई तो चला गया और तुम इस प्रकार गमगीन होकर पडे रहते हो तो घर का काम कैसे चलेगा ? मैं तुम्हे पढा—लिखाकर होशियार बनाना चाहती हू, जिससे तुम मेरा और तुम्हारे पिता का नाम उज्ज्वल कर सको। लेकिन तुम मेरी बात सुनने को ही तैयार नहीं हो। इसलिये मैं उदास एव दु खी रहती हू।"

अपूर्व यद्यपि बच्चा था, फिर भी उसकी तर्कणा शक्ति बडी तीव्र थी। उसे यह समझते देर नहीं लगी कि मम्मी मुझसे छिपाने का प्रयास कर रही है। मेरे पढने या नही पढने की समस्या आज की नहीं है, मैं तो भाई की मृत्यु के बाद से अभी तक स्कूल ही नहीं गया हू। इन दिनो मे मम्मी को कभी इतना दु खी नही देखा जितना कि आज देख रहा हू। मेरे नहीं

पढने से मम्मी को दु ख है तो फिर आज ही क्यो, पहले भी होना चाहिये था। अत यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि आज मम्मी के विशेष दु खी होने का असली कारण कुछ और ही है वह मुझे बतलाना नहीं चाहती तो कोई बात नहीं, मुझे उसे आग्रह करके पूछना भी नहीं है। मैं खुद इस बात की खोज करूगा कि वह दु खी क्यो हैं ?

चन्द्रमुखी के मन मे विचारो का उतार–चढाव आने लगा। 'अहो ! आज तो मैं कैसे भी बच गयी पर ये शरीर के भूखे भेडिये कभी भी कुछ कर सकते हैं। फ्लेटो मे काम किये बिना घर खर्च भी नहीं चलता और फ्लेटो मे जाती हू तो ये सफेद पोश शैतान छेडखानी किये बिना नहीं रहते । एक तरफ कर्त्तव्य का पालन है तो दूसरी तरफ सतीत्व का रक्षण है। क्या करे एक तरफ कुआ है तो दूसरी तरफ खाई ! मुझे दोनो से बचना है। सतीत्व का रक्षण भी करना है तो कर्त्तव्य का पालन भी। जब तक अपूर्व बडा न हो जाय, अपनी जिम्मेदारी न सम्भाल ले, तब तक तो मुझे घर खर्च चलाने के लिए काम करना ही होगा। इस खर्च के लिए मैं कभी भी अपने सतीत्व को खण्डित नहीं होने दूगी। सेठ किशोरीलाल के यहा तो अब मैं जा नहीं सकती। क्योकि अब वह कभी भी कुछ भी कर सकता है। पर अन्य फ्लेटो मे तो काम करने के लिये जाना ही होगा। इसी उधेडबुन मे उसे नींद आ गई।

अधकार को चीरती हुई सूर्य की किरणो ने चन्द्रमुखी के अन्दर पुन एक नये जोश का सचार किया और वह फिर से अपने कर्त्तव्य पथ पर आ डटी। पहले की तरह वह फिर से काम करने को जाने लगी। पर भौतिकता की इस अश्लील दुनिया मे कामी एव भोगियो की भी कोई कमी नहीं है। चन्द्रमुखी एक सुप्रसिद्ध व्यवसायी सेठ हजारीमल के यहा भी सध्या को भोजन पकाने जाती थी। सेठ हजारीमल की शादी हुए वर्षों होने के बाद भी लडका नहीं हुआ था। एक लडकी थी, जिसका नाम सुरेखा था। सेठ हजारीमल को अब अपनी पत्नी से कुछ–कुछ अरुचि भी होने लगी थी, क्योकि इतने वर्ष होने पर भी उसके कोई भी लडका पैदा नहीं हुआ था, वैसे भी पत्नी का स्वभाव बडा ही फूहड था। सेठ हजारीमल की दृष्टि भी कई दिनो से चन्द्रमुखी पर जमी हुई थी, वह भी चाहने लगा था कि यह अगर मेरे वश मे हो जाय तो मैं इसे उप–पत्नी बना लू। यह

स्वभाव से भी सुशील लगती है, और इससे मेरे लडके की उत्पत्ति भी हो सकेगी। सेठ हजारीमल ने इन्डायरेक्ट रूप से चन्द्रमुखी के परिवार की स्थिति जान ली थी। पर जब तक उसकी पत्नी फ्लेट मे रहती है, तब तक वह उससे बात नहीं कर सकता था। वह भी इसी अवसर की खोज मे था कि कब पत्नी यहा से हटे और मैं इसे अपनी बनाऊ। एक दिन ऐसा अवसर आ भी गया। पत्नी के पीहर मे उसके भाई की शादी होने वाली थी, इसलिये उसका जाना अत्यावश्यक हो गया। वह अपने पति हजारीमलजी को भी साथ चलने का आग्रह करने लगी। पर सेठ हजारीमल के मन मे तो दूसरे विचार चल रहे थे। वे तो कैसे भी अपनी पत्नी को यहा से हटाने के चक्कर मे थे। अत वे ऐसा अवसर कब चूकने वाले थे। उन्होने कहा–"नहीं मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकता। मेरे ऑफिस मे अभी अत्यावश्यक काम है। विदेश से इम्पोर्ट–एक्सपोर्ट (Import-Export) दोनो ही काम चल रहे हैं। ये तीन–चार दिन तक चलेगे। इन्हे छोडकर मैं नहीं चल सकता। अत तुम जाओ मैं तीन–चार दिन बाद काम पूरा करके आ जाऊगा।" पत्नी मान गयी और वह अपना आवश्यक सामान लेकर पुत्री के साथ पीहर के लिये रवाना हो गई।

इधर सेठ हजारीमल अकेले ही बगले मे रह गए। अब उनके मन मे अनेक प्रकार की विचारणाये उठने लगी। **कामुक हृदय मे सात्त्विक विचारणायें नहीं उठा करती। पत्थर पर कभी कमल नहीं खिला करते।** फ्लेट की नीरवता ने सेठ हजारीमल के मन को और भी अधिक कामुक बना दिया। वह सोचने लगे कि चलो एक काटा तो निकला। पत्नी के घर पर रहने पर तो चन्द्रमुखी से बात भी नहीं कर सकता था। पर अब वह तो पीहर चली गई है। अब कोई आने वाला नहीं है। पूरे फ्लेट मे मैं अकेला ही हू। चन्द्रमुखी, सध्या को भोजन पकाने आने वाली है। कैसे भी हो मैं उसे अपने वश मे जरुर करुगा, और शारीरिक सुख का खूब मजा लूगा। यदि उससे कोई लडका पैदा हो गया तो फिर मेरा वश भी चल पडेगा। चन्द्रमुखी गरीब एव असहाय औरत है। वह पैसे के प्रलोभन मे आकर सहज ही फस जाएगी। एक बार मेरे चक्कर मे फस जाने पर कभी भी वह मेरे से विपरीत नहीं जा सकती। क्योकि मेरे बेडरूम मे ऑटोमेटिक केमरा फिट है। ज्योहि वह मेरे साथ कमरे मे शयन करेगी कि उसका

फोटो खीच जायेगा। उसके बाद वह कभी भी मेरे से विरुद्ध जाने की कोशिश करेगी तो फोटो दिखाकर उसे सहज चुप किया जा सकेगा। क्योकि हर औरत अपने पति के सामने अपने पतिव्रत धर्म का प्रदर्शन करना चाहती है। भले उसका जीवन कितना ही अश्लील रहा हो। मैं जब उसे फोटो दिखाकर फोटो को उसके पति के सामने भेजने का कहूगा, तो वह स्वत डरकर मेरे वश मे रहेगी। बस फिर क्या कहना। वासना के विचारो मे डूबा हजारीमल अपने ही अनुकूल सोचता जा रहा था।

ठीक सध्या को सात बजे चन्द्रमुखी प्रतिदिन की भाति सेठ हजारीमलजी के बगले पर भोजन बनाने पहुची। अन्दर जाकर देखा सेठानी उपस्थित नहीं है। उसने सोचा किसी काम से इधर–उधर गयी हुई होगी। चन्द्रमुखी सीधी किचन मे पहुची और रसोई बनाने मे लग गई। क्योकि बहुत महिने हो गये थे उसे रसोई बनाते–बनाते, अत उसे कौन–सी वस्तु कहा है ज्ञात था। चन्द्रमुखी की हर–हरकत को सेठ हजारीमल अपने रूम मे बैठा देख रहा था और सोच रहा था। बात कैसे और कहा से प्रारम्भ की जाय। **अधर्मी व्यक्तियो का साहस जल्दी से किसी शीलवती सन्नारी के सामने जाकर बोलने का नहीं बन पाता।** सेठ हजारीमल मन मे ताने–बाने बुनने लगे। आखिर सेठ हजारीमल साहस के साथ रूम से बाहर निकले और चन्द्रमुखी को आवाज लगाते हुए बोले "सेठानी तो आज पीहर चली गयी है। पाच–दस दिन तक वह आने वाली नहीं है। अत केवल मेरे लिए खाना बनाना है। पर मैं सोचता हू मेरे अकेले के लिए क्या खाना बनाना। इसलिये तुम अपने लिए व तुम्हारे बच्चो के लिये भी यहीं खाना बना लो, तुम यहीं खा लेना और बच्चो के लिये खाना घर लेकर चले जाना। ताकि तुझे घर जाकर खाना भी नहीं बनाना पडेगा।" इस प्रकार कहते–कहते सेठ हजारीमल किचन के दरवाजे तक चले आये।

चन्द्रमुखी ने सेठजी के वचनो का अत्यन्त सक्षिप्त एव सन्तुलित जवाब दिया–"अच्छा मैं आपके लिये ही खाना बना देती हू, पर मेरे एव मेरे बच्चो के लिये खाना तो मैं घर पर ही बनाऊगी। क्योकि मैं बिना परिश्रम के एक दाना भी खाना पसन्द नहीं करती हू। यहा सध्या को भोजन बनाती हू तो सेठानी मुझे मेहनताना दे देती है। अत भोजन की

आवश्यकता नही।"

—"अरे कोई बात नहीं, मेहनताना तो है ही ऊपर से भोजन और ले लो। यह समझो कि सेठानी की तरफ से मेहनताने मे रुपये और सेठजी की तरफ से भोजन।" सेठ हजारीमल ने चन्द्रमुखी को जब यह कहा तो वह बोली— सेठजी, आप बहुत उदार हैं, पर मुझे यहा के भोजन की आवश्यकता नही। आप डाईनिग रूम मे बैठे, मैं अभी आपके लिए भोजन बना देती हू। "सेठजी सोचने लगे यह तो अगुली रखने जितनी भी जगह नही दे रही है तो फिर कैसे क्या बात आगे बढाई जाय, कैसे भी हो आज तो बात बनानी है। इतने दिनो तक तो मैं मन मे घुटता ही रहा, अब अच्छा अवसर मिला है तो उससे चूकना नही है। डाईनिग रूम मे चक्कर लगाते हुए सेठजी फिर किचन मे पहुच गये, और कहने लगे, "अरे चन्द्रमुखी ! मैं तो भूल ही गया तुझे कहना था कि आज सब्जी क्या बनानी है। तुमने सब्जी क्या बनाई ?

चन्द्रमुखी ने कहा—"आप को कौन—सी सब्जी चाहिये ?

—"आज तो भिण्डी खाने की इच्छा हो रही है।" सौ का नोट सामने करते हुए सेठ हजारीमलजी आगे बोले—'लो यह रुपये लो और बाजार से सब्जी ले आओ।'

—"पर सेठ साहब, रुपये लेकर बाहर जाने की आवश्यकता नही मैंने आज भिण्डी की ही सब्जी बनाई है। सेठानीजी का कहा हुआ है कि तुम आओ तब बाजार से सब्जी ले आया करो, पैसे मेरे से ले लिया करो। इसलिये आज भी मैं सब्जी ले आई थी, और वह भिण्डी ही है।" चन्द्रमुखी ने सेठ हजारीमल को बतलाया।

सेठजी का विचार था कि रुपयो के प्रलोभन से चन्द्रमुखी आकर्षित हो सकती है। इसीलिये तो पाच रुपये की भिण्डी के लिये सेठजी सौ रुपये देने लगे थे। पर उनका यह वार भी खाली चला गया। आखिर सेठजी एक बार फिर डाईनिग हाल का चक्कर लगा कर किचन मे पहुच गए। चन्द्रमुखी की पारखी दृष्टि ने आखिर सेठ हजारीमल के कामुक भावो को पढ ही लिया। तब चन्द्रमुखी ने स्पष्ट शब्दो मे कहा "सेठजी, आप बार—बार क्यो इधर आ—जा रहे हैं ? भोजन बन गया है आप बैठिये, मैं

अभी लेकर आ रही हू।" पर निर्लज्ज सेठ हजारीमल के माथे पर तो काम का भूत जो सवार हो गया था। यह एक ऐसा भूत है कि जब व्यक्ति के माथे पर तेजी से सवार हो जाता है तब वह या तो अपना काम पूरा करके ही उतरता है या फिर चोट खाकर ही भागता है। सेठ हजारीमल के माथे पर भी ऐसा ही भूत सवार हो गया था। सेठजी चन्द्रमुखी को बोले–"अरे चन्द्रमुखी, इतना आक्रोश क्या करती है ? चन्द्रमा भी तो शीतल चादनी छिटकता है और फिर तेरा मुख भी तो चन्द्र जैसा ही है। तेरी वाणी एव जीवन से वह शीतलता छिटके कि जिससे मेरा महिनो का सतप्त जीवन शाति को प्राप्त कर ले।" सेठजी की इन अटपटी बातो को सुनकर चन्द्रमुखी बौखला गयी। वह बोली–"सेठजी ! आप जैसे शरीफ इन्सानो को किसी पराई महिला के सामने इस प्रकार की बात करना उचित नही लगता है। मेहरबानी करके आप यह सब बाते छोडिये और भोजन तैयार हो चुका है, वह कर लीजिये। मैं अब चलती हू।"

हसते हुए सेठ हजारीमल ने कहा–"अरे चन्द्रमुखी ! अब तुम ऐसे नही जा सकती। जब तक कि तुम मेरी सतप्त आत्मा को शात नही कर दो।"

"देखो एक बात बताता हू– तुम मेरी बात मान जाओ तो मैं तुझे घर की सेठानी बना दूगा। घर की सारी सम्पत्ति तुम्हारे चरण चूमेगी। फिर तुम्हे इस प्रकार घर–घर भटकना नहीं पडेगा, चलो मेरे साथ बेडरूम मे।"

सेठ का एक–एक शब्द चन्द्रमुखी के कानो को बींधता चला जा रहा था। वह जोर से चिल्लाई– "अरे शैतान ! वास्तव मे तुम शेर की खाल मे छिपे भेडिये हो। आलीशान बगले मे रहने वाले, ऊची–ऊची सोसायटियो मे घूमने वाले तुम्हारे सफेदपोश व्यक्तित्व के पीछे इस प्रकार की लम्पटता छिपी रहती है, यह मुझे मालूम नहीं था। शीलवती सन्नारियो के सतीत्व को खण्डित करने के लिए ऐसे हथकण्डे रचते हो, इसकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। चल हट मेरे सामने से। मैं किसी भी कीमत पर अपने शील को खण्डित नहीं होने दूगी। हम गरीबो के पास दौलत नहीं है तो क्या हुआ। प्रमाणिकता है, नैतिकता है, चारित्रिकता है। वस्तुत यही जीवन का उन्नत स्वरूप है।"

–"चन्द्रमुखी, मुझे तुम कुछ भी कह दो, पर जब तक मेरे सतप्त जीवन को शात नही करोगी, तब तक यहा से जा नहीं सकोगी।" सेठ हजारीमल ने कहा।

सेठ किशोरीलाल के साथ हुई घटना से चन्द्रमुखी मे जोश तो आ ही गया था। उसने अचानक सेठ हजारीमल को जोरदार धक्का मारा। इसकी सेठ हजारीमल को कतई सम्भावना नहीं थी, अत वह झटके के साथ पीछे हटता चला गया और डाईनिग टेबल से जा टकराया। इधर चन्द्रमुखी भागती हुई फ्लेट के मेनगेट तक पहुच गई। किशोरीलाल जी घर की तरह यहा भी वही हाल था। मेन गेट लॉक था। बाहर जाने के लिए मेन गेट के अलावा और कोई रास्ता भी नही था। सेठ हजारीमल, सेठ किशोरीलाल की तरह दुबले–पतले नहीं थे। वे जवानी की अगडाई ले रहे थे। वे सेठ किशोरीलाल जी की तरह गिरे नहीं, बल्कि डाईनिग टेबल से टकरा कर सेठ हजारीमल जी सम्भल गये, उन्हे ये देखकर बडा गुस्सा आया कि औरत की जात मुझे धक्का देकर भागना चाहती है, पर कहा भाग सकती है, आखिर तो उसे पलटना ही पडेगा। वे झपट पडे चन्द्रमुखी पर अपनी क्षुद्र वासना की पूर्ति करने के लिये । दोनो मे गुत्थम–गुत्था होने लगी। चन्द्रमुखी किसी भी तरह अपने सतीत्व को बचाना चाहती थी। पर सेठ हजारीमल की जकड से वह छूट नहीं पा रही थी। सेठ हजारीमल चन्द्रमुखी को पकड कर अपने बेडरूम मे ले आया और पलग पर पटक कर अपनी क्षुद्र वासनाओ की पूर्ति के लिये आगे बढने लगा। चन्द्रमुखी यद्यपि साहसी थी, पर सेठ हजारीमल के तेज दबाव के सामने उसकी ताकत काम नहीं कर पा रही थी। अब वह आख मूद कर सर्व शक्तिमान वीतराग देव का स्मरण करने लगी। "हे प्रभो ! मुझे इस महासकट से बचा ले। यदि मेरा सतीत्व नष्ट हो गया, तो फिर मैं इस धरती पर जिन्दा नहीं रह सकती। मैं मर जाऊगी, पर भ्रष्ट जीवन के साथ रहना मुझे कतई अभीष्ट नही होगा। क्योकि **औरत का भूषण ही शील है। जिस औरत का शील नष्ट हो जाता है, उसकी आत्मा कलंकित हो जाती है।** भ्रष्ट औरत निष्प्राण देह की तरह ही अपने शरीर को खीचती है। मैं फिर ऐसे मुर्दे शरीर के साथ रहने वाली नहीं हू। ऐसी हालत मे मेरे पति एव अपर्व का क्या होगा। प्रभो ! मैं आपसे अपने शरीर के

रोए–रोए से प्रार्थना करती हू आप मुझे बचा लीजिये। मैंने सुना है आप "तिन्नाण तारयाण" पद के धारक हैं। स्वय भी तिरते हैं और दूसरो को भी तारते हैं, तो भगवन् मेरी डूबती नैया को तिरा दीजिये। आपके इस उपकार को मै कभी नही भुलूगी।" चन्द्रमुखी ने अपनी आत्मा के तार–तार को परमात्मा के तार से जोड दिया था। वह तन्मय चिन्मय होकर भयकर विपत्ति के इन क्षणो मे महाप्रभु का जाप करने लगी थी।

सभी तरह से बेखबर सेठ हजारीमल ज्यो ही अपनी क्षुद्र वासना को पूर्ण करने के लिये पलग की तरफ बढने ही वाला था कि उसे एक झटका लगा और वह घडाम की आवाज के साथ फर्श पर गिर पडा। नाक और मुह से खून आने लगा। इधर से उसके ऊपर हटरो की वर्षा होने लगी। थोडी देर पहले अबला चन्द्रमुखी ने सेठ हजारीमल से प्रार्थना की थी कि आप ऐसा न करे, मेरे शील की रक्षा करे। पर उसने उस अबला की प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया। अब उसी पर जब सरसर की आवाज के साथ हटरो की वर्षा होने लगी तो वह कराह उठा। मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। मेरे प्राण निकल जायेगे, मैं मर जाऊगा "नही–नही, नीच तूने एक अबला के शील को खण्डित करने के लिये हाथ डाला है, जब वह प्रार्थना कर रही थी तुझसे, तो तुम्हारे पर कोई असर ही नहीं हो रहा था, और अब तुम प्राणो की भीख मागने चले हो, ऐसे लम्पट तो भारत माता के लिये कलक हैं। उन्हे कभी भी ऐसी पवित्र भूमि पर स्थान नही मिलना चाहिये", इस कठोर प्रतिध्वनि के साथ सेठ हजारीमल पर निरन्तर हटर पडते रहे। शरीर की चमडी उधडने लगी थी, उसके काम का भूत तो इस काल के यमदूत के सामने कही भाग चला था। चन्द्रमुखी के कान मे सेठ हजारीमलजी के गिरने की धडाम से आवाज आई और फिर हटरो की वर्षा के साथ सेठ हजारीमल की चीखे सुनाई देने लगी। यही नही जब सेठ ने बचाने की भीख मागी तो जो प्रतिध्वनि सुनाई दी, उस आवाज ने तो चन्द्रमुखी के शरीर मे एक करेट का सचार कर दिया। क्योकि यह आवाज और किसी की नहीं उसके अगजात परम प्यारे पुत्र अपूर्व की थी। उसने इस आवाज के सुनने के साथ जब आखे खोली देखा वास्तव मे उसका बेटा अपूर्व ही है। जिसके शरीर मे आज सच मे अपूर्व शक्ति आ गई थी। वह बराबर हटरो का वार करता जा रहा था। सेठ हजारीमल के

लिये तो वह वास्तव मे काल का यमदूत ही था। चन्द्रमुखी ने पुकारा "बेटा–अपूर्व !" मम्मी की इस आवाज ने उसे झकझोरा जब उसने मम्मी की ओर देखा और बोला–"मम्मी तू इस कामी–कायर काम–पुरुष से डर गई क्या ? इस कुत्ते की क्या मजाल जो मेरी मम्मी के साथ कुछ भी कर सके ! मेरे जीते जी मेरी मम्मी को कोई हाथ भी नहीं लगा सकता। ले उठ, सम्भाल यह हटर, और उतार दे इसके भूत को हमेशा के लिये।"

अपूर्व की इस जोशीली बात को सुनकर चन्द्रमुखी के शरीर मे भी अनुपम तेज का संचार हो गया वह उठी और हटर को लेकर झांसी की रानी की तरह सेठ हजारीमल पर पिलपडी। साय–साय की आवाज के साथ हटरो की वर्षा होने लगी। सेठ हजारीमल का शरीर लहुलुहान हो गया। अत्यधिक मार पडने से बेहोशी आ गई थी। मारते–मारते जब चन्द्रमुखी थक गयी तब उसने हटर को एक तरफ फेका ओर उस लम्पट के ठोकर मारती हुई अपने तेजस्वी पुत्र के साथ अपनी खोली की ओर चल पडी। चलते–चलते उसने अपने पुत्र से कहा–"बेटा अगर आज तू समय पर नहीं आता तो मैं प्राण दे देती और सदा के लिये तुझे छोड़कर परलोक की यात्रा पर चली जाती। पर बता तू यहा तक एन टाईम पर कैसे पहुच गया था ? और किस प्रकार उस शक्तिशाली सेठ को पटका था ?"

अपूर्व ने कहा– "मम्मी ! सुनो मैं कैसे आया। कल जब तू घर पर आई थी, और तेरा चेहरा उदास देखा था, तब मैंने तुझसे पूछा था– मम्मी आज उदास क्यो हो ? तुमने उदासी का सही कारण नहीं बताया। यह बात मुझे उसी समय समझ मे आ गयी थी। इसलिये मैंने यह निश्चित किया कि मम्मी जिन घरो मे जाती है, उनकी भी खोज–बीन करनी चाहिये। जो कुछ हुआ है, वह बाहर फ्लेटो मे हुआ है। यह सोचकर आज शाम को मैंने सेठ हजारीमलजी के यहा जाती वक्त तुम्हारा पीछा किया, और तुम इनके बगले मे पहुंची तो मैं भी तुम्हारे पीछे ही दरबान की आख बचाकर अन्दर चला आया था। सीढी की ओट मे बैठकर चुप–चाप सारी हरकत देखता रहा था। जब तू भागती हुई मेन–गेट की ओर जाने के लिये सीढिया उतर रही थी, तब मैं एक तरफ दुबक गया था, इसीलिये तुम्हारी दृष्टि मे नहीं आया पर नीचे बगले का मेन गेट लॉक होने से तुम्हे वापस आना पडा। मैं जीने के अंधेरे मे खडा देखता रहा। आखिर जब तुझे

सेठ हजारीमल ने बेड पर पटक दिया तो मेरा खून खोल उठा। मेरे पास सुरक्षा का कोई साधन नहीं था। मेरी दृष्टि बेड के उस किनारे पडी रिवाल्वर पर पड गयी थी। मैंने देखा यदि थोडी सी भी आवाज की तो सेठ हजारीमल रिवाल्वर उठा लेगे, तब अपन दोनो की जान खतरे मे पड जायगी। ऐसी स्थिति मे सीधा उसका सामना भी नहीं कर सकता था। फिर कैसे क्या करना चाहिये। मेरा दिमाग तेजी से दौडने लगा था। आखिर मैंने युक्ति खोज ही ली। मैं सेठ हजारीमल की पीठ की तरफ खडा था। मैं ठीक उसके पीछे जाकर बैठ गया और बिजली की गति से उनके दोनो पैर फसा कर चौडा कर खीच लिया। बस फिर क्या था– असावधान सेठ हजारीमल धडाम से नीचे गिर पडा। फिर मैंने पास ही मे पडे वायर को उठाकर उस पर बरसाना प्रारम्भ कर दिया। उसे सम्भलने का मौका ही नहीं दिया।

मा अपने बच्चे की दिमागी व साहसी घटना को सुनकर अपने आप मे एक सात्विक गौरव का अनुभव कर रही थी। अब तक वह यही समझती थी कि मैं बेसहारा हू। क्योकि पति तो खाट पर पडे हैं बडे लडके अतुल की मृत्यु हो चुकी है, और छोटा लडका अपूर्व अभी छोटा भी है– और ना समझ भी। पर अब उसे यह अच्छी तरह ज्ञात हो गया था कि अपूर्व मे अपूर्व शक्ति है। वह बडी से बडी विपत्ति से टकरा सकता है, और अपनी प्रखर प्रतिभा से उसे मिटा भी सकता है।

इस प्रकार चन्द्रमुखी और अपूर्व, सोचते–बोलते अपनी खोली की ओर बढे चले जा रहे थे।



(4)

रायगढ कस्बे का रायसिह नामक जमींदार था। जिसके पास करोडो की चल–अचल सम्पत्ति थी। उसके दो पुत्र थे। बडे का नाम रामसिह और छोटे का नाम कृष्ण सिह। सभी ओर से सम्पन्न रायसिह का परिवार सुखमय था। पूरे गाव पर जमींदार रायसिह का दबदबा था। वे गाव में जिधर भी निकल जाते लोग उन्हे बडे अदब की दृष्टि से देखते थे। पर सदा समय एक समान नहीं रहता। जिस प्रकार धूप के बाद छाव और छाव के बाद धूप, रात के बाद दिन और दिन के बाद रात आती ही है, इसी प्रकार से रायसिह के भी उत्कर्ष से अपकर्ष का समय आ चुका था।

उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू घनश्यामदास के आदमी गुप्त रूप से कितने ही दिनो से रायगढ का चक्कर लगा रहे थे, और वहा के श्रेष्ठीवर्यो की खोज कर रहे थे कि किसके यहॉ डाका डालने पर अधिक धन मिल सकता है। इस खोज मे उनके पास जमींदार रायसिह का नाम विशेष रूप से उभर कर आया। गुप्त रूप से डाकू घनश्यामदास के आदमी अब बराबर रायसिह के घर की टोह लेने लगे। इनके घर मे कितने सदस्य हैं। कितने नौकर हैं। कब कौन आता है आदि, सभी जानकारी लेने के बाद घनश्यामदास के पास पहुचे। और सारी स्थिति की जानकारी करवाई।

डाकू घनश्यामदास ने सारी परिस्थितियो की जानकारी करने के बाद उसका गहराई से अध्ययन किया और दिनाक 10 को रायसिह के यहा डाका डालना निश्चित किया। सभी सरदारो का अपना–अपना कार्य निश्चित कर दिया गया।

दिनाक 10 की रात्रि को ठीक दस बजे डाकू घनश्यामदास, अपने गिरोह के साथ सभी अस्त्र–शस्त्रो से लेस होकर दो जीप गाडियो मे रायगढ के बाहर पहुच गया। दो सरदार रायगढ के अन्दर सतर्कता के साथ गश्त लगाने लगे। बाकी सरदार दो–दो, तीन–तीन की टुकडियो मे बटकर ठीक ग्यारह बजे रायसिह के मकान के पास पहुच गये। जमीदार रायसिह का मकान वस्तुत बहुत बडा भव्य एव आकर्षक था, जो रायसिह की श्री सम्पन्नता को मूक रूप से प्रदर्शित कर रहा था। मेन–गेट पर

पुलिस वर्दी पहने, कन्धे पर बन्दूक लटकाये दो पहलवान पहरा लगा रहे थे। पूर्व नियोजित योजना के अनुसार गिरोह के दो सदस्य तो मकान के चारो तरफ अत्यन्त सतर्कता के साथ चक्कर लगाने लगे। दो डाकुओ ने बिजली की सी स्फूर्ति से पुलिस वर्दी पहने पहलवानो के पास जाकर उनके सम्हलने से पहले ही उन पर रिवाल्वर तान दिये और गुर्राये, "शस्त्र नीचे डाल दो और मुह दीवाल की तरफ कर दो अन्यथा गोली से सूट कर दिया जाएगा।" इस अप्रत्याशित घटना के लिये वे पहलवान तैयार नहीं थे। उन्होने जान की रक्षा के लिये हथियार डाल दिये और मुह दीवाल की तरफ करके खडे हो गये। एक डाकू ने उन दोनो की बन्दूके अपने कब्जे मे करली। यह सब घटनाक्रम को दूर खडा डाकू दल बहुत अच्छी तरह देख रहा था। जब उन्होने देखा कि द्वार रक्षको के हथियार डलवा दिये गये हैं तो वे सब मकान की ओर बढ चले और तेजधार वाली छुरी से कपाट को तोडकर निर्द्वन्द, पर सतर्कता के साथ अन्दर घुसते चले गए। पेन्सिल टार्च से डाकू घनश्यामदास ने देखा और जाना कि रायसिह और उसकी पत्नी एक रूम मे सोये हुए हैं। घनश्यामदास के ईशारे को समझकर दो डाकुओ ने स्फूर्ति के साथ सोये हुए दोनो बच्चो को रस्सी से बाधकर रूम से बाहर निकाल लिया। इधर दो डाकुओ ने रायसिह के रूम को भी तोड डाला। खट–खट की आवाज से रायसिह की नीद भी जग गई थी। जमीदार रायसिह भी बहुत अच्छा बन्दूक चालक–निशानची था। पर वह सम्हले उसके पहले ही दनदनाते हुए दो डाकू उसके कमरे मे घुसते चले आये और रायसिह तथा उनकी पत्नी पर रिवाल्वर तानते हुए गुर्राए–"अगर हिलने की कोशिश की तो गोली से सूट कर दिया जाएगा।" जमींदार रायसिह एव उनकी पत्नी गुणवती वही के वहीं खडे रह गये। ठीक इसी समय घनश्यामदास ने आवाज लगाई–"रायसिह ! यदि तुम्हे अपनी और अपने बच्चो की जान प्यारी हे तो चुपचाप तिजोरियो की चाबिया बतला दो। तुमने घनश्यामदास का नाम सुना ही होगा, वही आज तुम्हारे सामने खडा है अगर थोडी सी भी होशियारी खेलने की कोशिश की तो आख खोलकर देख लो तुम्हारे दोनो बेटो पर मेरे आदमी रिवाल्वर ताने खडे हैं, आदेश की देरी हे। गोलिया उनके सीने को चीरती चली जाएगी। तुम्हारे सामने ही तुम्हारे दोनो बच्चो की हत्या करदी

जायेगी। इसके बाद तुम्हारी पत्नी के साथ तुम्हारे सामने ही बलात्कार किया जायेगा और तुम्हे बुरी तरह मौत के घाट उतार दिया जाएगा। सोच लो, तुम्हे क्या करना है ? मैं तीन की गिनती करता हू। इस बीच तुम्हारा निर्णय आ जाना चाहिये। तीन बोलने के साथ अगर तुम कुछ कह देते हो तो ठीक है, अन्यथा तीन की गिनती पूरी होते ही जो मैंने कहा, जिसे तूने सुना ही है, वह आखो से देखने को मिल जाएगा।"

जमीदार रायसिह ने डाकू घनश्यामदास का नाम और उसके कई कारनामे सुन रखे थे वह जो कहता था, उसे वह करके बतला देता था। उसने सुना था कि पास ही माडवगढ के सेठ लक्ष्मीचन्द के यहा डाका डाला था, और उससे तिजोरियो की चाबिया मागी, पर जब उसने तिजोरियो की चाबिया बतलाने से इन्कार कर दिया तो उसने सेठ लक्ष्मीचन्द के जवान बेटे को उसी के सामने शूट कर दिया और उसकी पत्नी के साथ उसके सामने ही डाकूओ ने सामूहिक रूप से बलात्कार किया और सेठ लक्ष्मीचन्द का नाक, कान काट डाला और उसके बाद भी जो कुछ धन उन्हे मिला उसे ले उडे। आज सेठ लक्ष्मीचन्द के पास भले ही कितनी भी सम्पत्ति है पर अब उसकी दो कौडी की इज्जत भी नहीं रह गई।

आज मेरे सामने भी वही परिस्थिति खडी हो गई है। एक तरफ तो पुरुखो की सम्पति हीरे–जवाहरात, सोना, चादी हैं तो दूसरी तरफ अपने बच्चे, पत्नी के चरित्र एव स्वय की जान है। क्या करना चाहिये। रायसिह असमजस मे पड गए। सम्पति देते भी नहीं बन रहा था तो जान गवाते भी नहीं बन रहा था। इसी प्रकार ही विचार मे समय सरकता जा रहा था। डाकू घनश्यामदास बडी पैनी दृष्टि से रायसिह के चेहरे पर उतरते–चढते भावो को पढ रहा था। ठीक समय पर वह बोला– "रायसिह मैं गिनती बोल रहा हू। तुम जो भी हो बोल देना। अब मेरी गिनती चालू है– एक "

रायसिह सोचने लगा 'उफ्फ क्या किया जाय। मुझे अपने बच्चो की तथा सम्पति की भी रक्षा करनी है। पर कैसे करू यदि इन डाकुओ से थोडी भी होशियारी खेलने की कोशिश की गई तो ये कुछ भी कर सकते

है। फिर इतने मे तो दो

डाकू घनश्यामदास ने आवाज लगाई। रायसिह की पत्नी गुणवती भी सब कुछ देख समझ रही थी, पर जब अपने पति को किसी भी निर्णय पर आते न देखकर वह बोली–'प्राणनाथ ! छोडिये सम्पति के मोह को। बतला दीजिये इन्हे चाबिया। सम्पति के पीछे मे अपने बच्चो को मरते नहीं देख सकती, यदि मेरे बच्चे जीवित रहे तो यह सम्पति फिर आ सकती है, पर बच्चे ही चले गये तो भले सम्पति का अम्बार ही क्यो न लग जाय, उससे कभी वश परम्परा चलने वाली नही है। मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप कुछ भी सोचे बिना इन्हे तिजोरियो की चाबिया बतला दीजिये और बच्चो के प्राणो की रक्षा कर लीजिये।"

डाकू घनश्यामदास डाकू था, पर गुण्डा और हत्यारा नहीं वह घरो मे जाकर सम्पति लूटता था पर किसी भी स्त्री के साथ जल्दी से बलात्कार और किसी की हत्या नही करता था। हत्या और बलात्कार तो तभी किया जाता जब सामने वाला व्यक्ति सम्पति देने के लिये तैयार नही होता। ऐसी स्थिति मे किसी की हत्या भी कर दी जाती तो वह स्वय तो नहीं पर उसके साथियो को बलात्कार करने का आर्डर भी देता था। रायसिह के यहा भी वह अपने सिद्धान्त के अनुकूल ही चल रहा था। जब उसने गुणवती को यह कहते हुए पाया तो उसके मन ने सोच लिया कि तीर निशाने पर लगा है। गुणवती की बात समाप्त होने के तुरन्त बाद डाकू घनश्यामदास बोला– "रायसिह क्या सोच रहे हो ? दो तक की गिनती मैं कर चुका हू। अब भी टाईम है। तीन की गिनती के बाद तुम्हारे सामने ही विनाश लीला खडी हो जायेगी। मेरे पास ज्यादा देर रुकने का टाईम नही है। मैं अब तीन की गिनती भी बोलने जा रहा हू और लो यह बोला ती

पत्नी की गुहार और घनश्यामदास की गुर्राहट का रायसिह पर सही असर हुआ, और घनश्यामदास तीन की आवाज लगाने लगा कि एकदम रायसिह चिल्ला पडा–"ठहरो ! मुझे सम्पति से भी ज्यादा अपने बच्चो के प्राण प्यारे हैं। मैं सेठ लक्ष्मीचन्द की तरह सम्पति के पीछे अपने परिवार की बर्बादी नहीं देख सकता। लो उस सामने वाले रूम मे चाबिया है, निकाल लो तुम्हे और जितना भी धन चाहिये, ले जाओ पर मेरे बच्चो की रक्षा होनी चाहिये।"

घनश्यामदास बोला– "हा आए ना अब लाईन पर। विश्वास रखो, अगर तुमने सही तिजोरिया बतलादी तो तुम्हारे परिवार को हानि नही की जायेगी। पर अगर तुमने होशियारी खेलने की जरा भी कोशिश की तो परिणाम तुम जानते ही हो। चलो बढो आगे और अपने हाथो से चाबिया निकालो, तुम्हारे आगे–पीछे मेरे लोग रिवाल्वर ताने चलते रहेगे। पत्नी को एक सरदार ने रिवाल्वर की नोक पर वहीं रोके रखा और अन्य सरदार रायसिह पर रिवाल्वर ताने बढ चले। रायसिह किसी भी प्रकार की होशियारी खेले बिना रूम मे गया और दो दीवालो के बीच सुरक्षित जगह पडी चाबिया उठाली और गुप्त भण्डार की ओर बढ चला। रायसिह के मकान के नीचे जो एक गुप्त रास्ता निकलता था। जिस रास्ते से लगभग सौ फुट जाने के बाद एक तलघर आता था, वह तलघर भी अत्यन्त रमणीय तरीके से बना था। उस तलघर के दक्षिण की ओर एक गुप्त रास्ता था, उस रास्ते से फिर सौ फुट आगे जाने के बाद हीरे–जवाहरातो से भरी तिजोरियो का भण्डार आता था। रायसिह बिल्कुल उसी रास्ते से बढ चला। डाकू गिरोह के सदस्य भी सतर्कता के साथ उसके पीछे–पीछे बढे चले जा रहे थे। तिजोरियो के पास पहुच कर रायसिह ने सारे ताले खोल दिये और उनके पट भी खोल दिये। हीरो के प्रकाश से सारा तलघर जगमगा उठा। डाकुओ की आखो मे एक चमक उभर आई। रायसिह बोला "यह धन है, अब तुम्हे जितना चाहिये ले जाओ।" घनश्यामदास के इशारे को पाते ही गिरोह के दो चार सदस्यो ने तिजोरियो मे भरे कीमती रत्नो एव सोने को निकाल उन्हे अपने मजबूत बोरो मे भर लिया। तिजोरिया खाली कर दी गई। फिर उसी रास्ते से बाहर चले आये। बाहर आकर के घनश्यामदास ने अपने लोगो के द्वारा रायसिह और गुणवती को भी रस्सी से बधवा दिया, ताकि ये जल्दी से हिल–डुल न पाये। बोरे लेकर बाहर चले आये। बाहर खडे द्वार रक्षको को भी रस्सी से बाध–कर अन्दर पटक दिया गया और मेन–गेट को बाहर से बद करके ताला लगा दिया गया।

डाकू घनश्यामदास ने मुह से सुरीली–सी आवाज निकाली जो कि इशारा था। जिसे समझकर मकान के चारो और गश्त लगा रहे डाकू चले आये और डाकू दल उसी सतर्कता के साथ रायगढ मे दो–तीन टुकडियो

मे बट कर शहर के बाहर निकल गया। रास्ते मे उनके घूम रहे आदमी भी इशारा पाकर निश्चित स्थान पर चले आए, और पहले से ही स्टार्ट जीप गाडियो मे जा बैठे। गाडियो मे बैठते ही जीपे हवा से बाते करने लगी। कुछ देर मे तो वे रायगढ से पचासो किलोमीटर दूर अपने सुरक्षित स्थान पर जा पहुचे।

जमींदार रायसिह, जो अब तक करोडो की सम्पति का मालिक था, वह अब कगाल बन गया। पुरखो से जिसके पास सम्पति थी, वह उसकी आखो के सामने लूट ली गयी। सच है—जब पाप का उदय आता हैं, तब करोडो की सम्पत्ति भी मिनटो मे चली जाती है और जब पुण्य का उदय आता है तब गरीब भी करोडो का मालिक बन बैठता है। जो व्यक्ति जैसा कर्म करता है, वैसा ही भोगना भी पडता है। किये हुए कर्मों को भोगे बिना छुटकारा नहीं हो सकता।



(5)

प्रात काल जब रायगढ की गलियो मे लोगो का आवागमन बढने लगा तो कईयो की दृष्टि जमींदार रायसिह के भवन की ओर पडी तो उन्हे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मकान के मुख्य द्वार पर ताला पडा है और द्वार रक्षक भी नहीं है। यह कैसी विचित्र बात है। क्योकि–जमीदार रायसिह बाहर भी चले जाते तो भी द्वार रक्षक तो वहा खडे ही रहते। मुख्य द्वार का तो चौबीस घण्टे पहरा चलता है। और रायसिह भी तो कल तक यहीं थे। उन्हे भी बाहर जाते देखा नहीं गया। तो फिर क्या बात है ? कही अनहोनी घटना तो नही घट गई है, लोगो मे बडी तेजी से फुस–फुसाहट होने लगी। भवन के बाहर सैकडो व्यक्ति एकत्रित हो गए पर कोई भी भीतर जाने की हिम्मत नही जुटा पा रहा था, आखिर दो–चार नौजवानो ने साहस किया और वे बढे, पर मुख्य द्वार तो बन्द था, वे पिछवाडे से ऊपर चढकर भवन मे झाकने लगे तो उन्हे यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ–अरे ! यह क्या रायसिह, गुणवती एव उनके बच्चे रस्सियो से कसे बेसुध हो रहे हैं। जरूर कोई अनहोनी घटना लगती हैं। नौजवान बाहर आये और लोगो को भीतर की घटना से अवगत कराया। आखिर लोगो ने ताला तोडकर भीतर प्रवेश किया और उन सब के रस्से काटकर उन्हे बन्धन मुक्त किया। घण्टो रस्से से बधे होने से उनके हाथ–पैर अकड गए थे और वे बेसुध भी हो गए थे। ग्रामवासियो ने तुरत उपचार प्रारम्भ किया। हाथ–पैरो की मालिश की। ठण्डे पानी का छीटा देकर उनकी मूर्छा तोडी गई। कुछ ही घण्टो के उपचार से रायसिह और उनकी पत्नी गुणवती और उनके लडके स्वस्थ हुए। लोगो के पूछने पर रायसिह ने रात्रि मे घटी घटना को सक्षिप्त मे बतला दी। डाकू घनश्यामदास का नाम सुनते ही लोगो के कान खडे हो गए। क्योकि डाकू घनश्यामदास का भय सैकडो किलोमीटर की दूरी तक फैला हुआ था। वह इतनी सफाई एव सतर्कता के साथ डाका डाला करता था कि प्रशासन की पकड मे न आ सके। प्रशासन भी आज तक उसे पकड नहीं पाया था। इसीलिए भद्रिक लोग डाकू घनश्यामदास का नाम सुनते ही भयभीत हो जाते थे। डाकू घनश्यामदास ने रायसिह के यहा डाका डाला इस बात की पूरे रायगढ

मे चर्चा फैल गई। लोग कहने लगे डाकू घनश्यामदास ने जमींदार रायसिह की पुरखो से अर्जित सम्पत्ति को लूट लिया। रायसिह को कगाल बना दिया।

रायसिह ने यद्यपि समझदारी से काम लिया था। सपति को छोडकर परिवार की रक्षा की थी। पर सपति के चले जाने का दु ख भी उन्हे अब अन्दर ही अन्दर कचोट रहा था। दुनिया पैसो की पुजारी है। जिसके पास पैसा होता है उसकी सब जगह अच्छी प्रतिष्ठा भी होती है। पहले तो विद्वान की सर्वत्र पूजा की जाती थी, पर अब विद्वान् तो फुटपाथ पर घूमते नजर आते है, पर धनिक मर्सिडिज कारो मे घूमते रहते हैं। समाज मे भी उन्ही की प्रतिष्ठा होती है। जमींदार रायसिह भी पैसे वाले थे, इसलिये पूरे रायगढ मे उनका दबदबा था, पर जब लोगो को यह ज्ञात हो गया कि रायसिह के पास अब कुछ भी नही है तो लोगो ने धीरे–धीरे उनका अदब, सत्कार, सम्मान करना भी कम कर दिया। लोगो के बदलते व्यवहार ने भी रायसिह के हृदय पर गहरी चोट की। रायसिह की शान शौकत भी धीरे–धीरे गिरती चली गई। मित्रो के व्यवहार मे भी अब फर्क पडने लगा। वे भी अब रायसिह से कतराने लगे। क्योकि अब उनके पास पैसा नही है और बिना पैसो के धनपति मित्रो से अब मित्रता कैसी। सपत्ति क्या लूट गई रायसिह की इज्जत भी लूट गई। जमीदार रायसिह अब एकान्त मे बैठे–बैठे चिता मे घुलने लगे। रामसिह, कृष्णसिह भी अभी छोटे ही थे। जब तक वे पढ–लिखकर बडे न हो जाय तब–तक उनसे कमाने की आशा ही नही की जा सकती थी। वे कब पढ–लिखकर होशियार बनेगे और कब पैसे कमायेगे। यह सब होगा भी या नहीं, यह भी सदेहास्पद है। क्योकि मेरे पास अब इतनी सम्पत्ति भी नहीं है कि मैं इन्हे पढा–लिखाकर ग्रेज्युएट बना सकू। और जो खेत–खलिहान हैं, उनका प्रबन्ध भी मेरे से नहीं हो सकता। अब कैसे क्या जिन्दगी का बसर होगा।

इस प्रकार जमींदार रायसिह सदा विचारो मे डूबे रहते। अत्यधिक चिता ने रायसिह को निढाल कर दिया। वे इतने अशक्त हो गये कि अब उनमे चलने–फिरने की भी शक्ति नहीं रही। आखिर सेठ रायसिह ने खाट पकड ली। बीमार हो गये, घर का सारा भार अब गुणवती पर आ पडा।

घर खर्च भी चलाना और पति का इलाज भी कराना और घर मे पैसे नहीं। गुणवती ने ऐसी विकट परिस्थिति मे भी साहस से काम लिया। उसने खेतो की विशाल जमीन का कुछ टुकडा बेच डाला। उससे प्राप्त हुए पैसो से वह घर खर्च भी चलाने लगी और पति का भी योग्य उपचार करने लगी। महिनो तक वह पति की सेवा करती रही। पैसा भी पानी की तरह बहाया पर परिणाम शून्य ही रहा। जितना इलाज कराने के लिये प्रयत्न किया, मर्ज उतना ही बढता चला गया। रायसिह की हालत दिन प्रतिदिन गिरती चली गई। कहते हैं– खूटी को बूटी नहीं। आयु ही समाप्त हो जाये तो कोई दवा–दारू नहीं चलती। बहुत कुछ पुरुषार्थ करने के बाद भी गुणवती का सुहाग उजड ही गया। रायसिह इस दुनिया को छोडकर परलोक की यात्रा के लिए रवाना हो गये। रामसिह, कृष्णसिह के ऊपर से पितृछाया उठ गई। दोनो बच्चे ही थे, फूट–फूट कर रोने लगे। आखिर कब तक रोते। चाहे कितना ही प्रिय हो पर जाने वाले के साथ कोई नहीं जाता। कुछ ही दिनो के बाद शोक कम पड गया। गुणवती के ऊपर अब और अधिक भार पड गया। रामसिह चौदह वर्ष का और कृष्णसिह ग्यारह वर्ष का ही था। उसे दोनो बच्चो की परवरिश करनी थी। नकद कैश रुपये तो उसके पास मे थे नहीं। इसलिये उसने घर खर्च चलाने के लिये अब शेष खेत भी बेच डाला। पर कहते हैं। बूद–बूद करते घडा भर जाता है तो बूद–बूद करते घडा खाली भी हो जाता है। आखिर बिना आय के होने वाला व्यय कब तक चलता ? दिन–प्रतिदिन हो रहे व्यय से गुणवती की चिन्ता बढती चली गई। मा की चिन्ता को देखकर रामसिह, जो अब कुछ घर की परिस्थितियो को समझने लगा था, उसने कहा– "मा तुम दु खी क्यो हो ? गुणवती ने कहा–"बेटा ! क्या करूँ ? तुम्हारे पिता तो चले गये। सम्पत्ति डाकुओ ने लूट ली खेत–खलिहान भी बिक गये हैं। और आय का कोई स्रोत नहीं है। व्यय निरन्तर होता जा रहा है ऐसी परिस्थिति मे घर खर्च एव तुम दोनो के पढने लिखने के आवश्यक साधनो को कैसे जुटाया जाय, इसके लिये मेरी चिन्ता बढती जा रही है। रायगढ मे तो अपन बहुत बडे जमींदार के रूप मे प्रतिष्ठित रहे हैं। ऐसी जगह पर मैं कुछ काम भी करू तो वह अपनी पुरखो की प्रतिष्ठा के खिलाफ जाता है।"

मा की बात सुनकर रामसिह ने कहा– "मा ऐसे चिता करने से कुछ भी नहीं होने वाला है। यहा तो अपन मजदूरी नहीं कर सकते हैं तो कोई बात नहीं। अभी तो अपने पास कुछ पैसे हैं। यहा से बम्बई चले चलते हैं। वहा अपने को कोई पहिचानने वाला नही। तुम मेरी पढाई की चिन्ता छोडो। पहले उदर–पोषण के लिये सोचना है। मैं वहा पर मजदूरी कर लूगा और उससे जो कुछ भी मिलेगा उससे घर खर्च चल जायगा।"

दु ख और हर्ष के आसू बहाते हुए गुणवती ने कहा "अरे लाडले ! क्या तू मजदूरी करेगा ? नही–नही। जिसके जाने के लिये हर समय वाहन खडा रहता था, जिसके आदेश की प्रतीक्षा के लिये सेवक खडे रहते थे। क्या वह अब मजदूरी करेगा ? नही बेटा। मेरे रहते हुए ऐसा नही हो सकता।"

रामसिह ने हठपूर्वक मा को समझाते हुए कहा–"मा अब तुम भूल जाओ कि हम किसी रियासत के मालिक, करोडो के स्वामी थे। अतीत की घटनाओ को एक स्वप्न समझकर छोड दो। उन्हे सोचने से दु ख के अलावा और कुछ नही मिलता है। अभी वर्तमान के विषय मे सोचना जरुरी है। मैं जो कह रहा हू, वह ठीक कह रहा हू, अब हमे शीघ्र रायगढ छोड देना चाहिये। क्योकि अभी तक तो खेत ही बिके हैं। यदि यही पर रहे तो फिर पुरखो की निशानी इस हवेली को भी बेचना पडेगा। पर यदि यहा से चले जायेगे तो वैसा नहीं होगा। कम से कम पुरखो की निशानी तो अपने कब्जे मे रहेगी।" पुत्र की सूझ–बूझ भरी बात को सुनकर गुणवती को सुखद आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगी कि रामसिह ठीक कहता है। अब अगर यहा रहेगे तो यह मकान भी बिक सकता है। तब तो रही–सही इज्जत भी मिट्टी मे मिल जायगी।

गुणवती ने कहा–"अच्छा पुत्र ! तुम्हारी यही इच्छा है तो अब यहा से चले चलते हैं।"

कर्म किसी को नही छोडते, कर्मो के आगे बडो–2 को झुक जाना पडता है। जब कर्म उदय मे आते हैं तो राजा भी रक और रक भी राजा बन जाता है। कर्म करते समय ज्ञात नही होता, पर जब उदय मे आते हैं तब उसका दारूण परिणाम ज्ञात होता है। ❑

(6)

बम्बई सेन्ट्रल पर गुणवती अपने दोनो बच्चे रामसिह और कृष्णसिह के साथ रेल से नीचे उतर आई। बम्बई जैसे महानगर मे किसी को कोई फुर्सत नही है। सभी अपने–अपने कार्यो मे मशीन की तरह दौडते नजर आते हैं। गुणवती का यहा कोई परिचित भी नहीं था। अत ट्रेन से उतरते ही ठहरने की समस्या खडी हो गई। यद्यपि गुणवती के पास मे पाच हजार रुपये थे। जिन्हे लेकर वह यहा चली आई थी। इन रुपयो से किसी अच्छे होटल मे रह सकते थे। पर गुणवती ने विचार किया कि हम यहा घूमने तो आये नहीं हैं। यदि पैसे यो ही खर्च हो गए तो भूखो मरना पडेगा। उसने बडी सूझबूझ से काम लिया। बम्बई सेन्ट्रल से लोकल ट्रेन मे बैठकर चेम्बूर जा पहुचे। वहा पर एक खाली खोली की खोज करके दो सौ रुपये महिने के हिसाब से उसे किराये पर ले ली। रहने की समस्या तो फिलहाल हल हो गई। 15 दिन के खाने के लिये भी दाल–आटा आदि सामग्री खरीद ली गयी। रहने और खाने की समस्या का समाधान होने के बाद गुणवती सोचने लगी, अब मुझे फ्लेटो मे काम पर लग जाना चाहिये ताकि उससे आय होती रहे। बिना आय के तो यह पैसा भी खत्म हो जाएगा। इन दोनो बच्चो को पढा–लिखाकर होशियार करना है। इसके लिये पैसो की आवश्यकता रहेगी ही। वह आस–पास के फ्लेटो मे काम पाने की कोशिश करने लगी। मा को इस प्रकार प्रयत्न करते देखकर रामसिह ने कहा–"नही मा ऐसा नहीं हो सकता। मेरे रहते तुम नौकरी करने नही जा सकती। अब तो मैं काम करने लायक हो गया हू। मैं मजदूरी करके भी पैसा एकत्रित कर लूगा। पर तुम्हे नौकरी करने नहीं जाने दूगा। अब मुझे पढना नही है। पहले परिवार का पालन करना अनिवार्य है। मा मैं नही पढ सकता तो कोई बात नहीं, छोटे भाई कृष्णसिह को अवश्य पढा–लिखाकर होशियार करेगे।" रामसिह की साहसभरी वाणी को सुनकर गुणवती गद्गद् हो गई। उसने कहा "पुत्र! तुम करोगे क्या ? इतनी बडी नगरी मे कहा मजदूरी करने जाओगे ?"

"माँ जब तुम जा सकती हो तो क्या मैं नही जा सकता ? एक बात है तुम मुझे भार ढोने वाला एक हाथ ठेला दिलादो, जिस पर भार रखकर मैं इधर–उधर पहुचा दूगा। उससे जो कुछ भी मजदूरी मिलेगी, उससे अपना काम चल जायगा।"

आखिर मा को रामसिह की बात माननी ही पडी। पास ही की खोली मे रह रही पद्मा से गुणवती ने बहुत जल्दी दोस्ती बना ली थी। गुणवती ने पद्मा से पूछा–बहिन ! यहा लकडी का ठेला कहा मिल सकेगा ?" पद्मा जो वर्षों से वहा रह रही थी। इसलिये कौन वस्तु कहा मिल सकती है, यह उसे ज्ञात था ही। उसने गुणवती को बतला दिया। गुणवती ने वहा पहुचकर अपने पुत्र के लिये 500 रुपये मे लकडी का ठेला खरीद लिया।

रामसिह सुबह नाश्ता करके भोजन की पोटली साथ मे बाधकर सुबह–सुबह ही घर से निकल जाता। दिनभर मजदूरी के लिए इधर–उधर घूमा करता। नया–नया होने से उसे मजदूरी कैसे की जाय इसकी जानकारी नहीं थी। फिर भी दिन भर मजदूरी के लिये घूमने के कारण उसे एक–दो काम मिल ही जाते। जिसमे वह दस–बारह रु कमा लेता। इस प्रकार रामसिह प्रतिदिन दस–बारह रुपये कमाने लगा। पर वह जानता था कि दस–बारह रुपये से क्या होने वाला है। क्योकि दो सौ रुपये तो खोली का किराया ही है। 400 रुपये कम से कम भोजन खर्च है। 200 और 400=600 तो ये हो जाते है। अभी तो कृष्णसिह को पढाना भी है। और वह भी कान्वेट स्कूल मे, ताकि ग्रेज्युएट बन सके। उसके लिये भी 200 रुपये प्रतिमाह चाहिये। इस प्रकार 800 रुपये जब तक मैं न कमा लू, तब तक घर खर्च चल नहीं सकता। दो–चार महिने तक तो रामसिह 300–400 रुपये महिना कमाता रहा। पर जब काम करने मे होशियार हो गया तो उसकी कमाई भी बढने लगी। दिन भर कडी मेहनत करता था। अब वह 700–800 रुपये प्रति महिना कमाने लग गया। कृष्णसिह के स्कूल का एक वर्ष तो खराब हो गया था। अब अगले वर्ष से उसे कान्वेट स्कूल मे भर्ती करा दिया गया। कृष्णसिह प्रतिभा सम्पन्न था और तन्मयता के साथ पढाई करता था। रामसिह और गुणवती दोनो कृष्णसिह की सुख सुविधा का ख्याल रखते थे। कृष्णसिह की पढाई भी

अब निरन्तर चलने लगी, वह अच्छे अको मे उत्तीर्ण होता। रामसिह तो दिन भर मजदूरी मे लगा रहता। इस प्रकार जैसे–तैसे गुणवती की गाडी चल पडी।

कुछ ही वर्षो बाद जब रामसिह बीस वर्ष का नौजवान हो गया तो मा की ममता ने विचार किया कि अब इसका विवाह कर देना चाहिये। जब जमींदार थे, तब तो किसी बडे जमींदार के यहा शाही ठाठ–बाठ के साथ विवाह होता। खैर कोई बात नहीं आज भी खाते–पीते तो अवश्य हैं। ऐसी स्थिति मे रामसिह को कुवारा नहीं रखना है। बहुत दिनो के विचार के बाद गुणवती ने अपने मन की बात रामसिह के सामने रख ही दी। रामसिह ने कहा–"मा तुम क्या विचार करती हो ! मैं शादी–वादी के चक्कर मे नहीं पडना चाहता। अपने खाने के लिये भी बडी मुश्किल से गुजारा कर पाता हू। और इधर कृष्णसिह ज्यो–ज्यो आगे की क्लासो मे बढता जा रहा है, त्यो–त्यो इसका खर्च भी बढ रहा है। मुझे इसके खर्च को हर कीमत पर पूरा करना है। इसकी पढाई को बराबर जारी रखना है। जब कृष्णसिह पढ–लिखकर होशियार हो जाएगा तब अपने दु ख के दिन कट जायेगे। इसलिये तुम मेरी शादी के चक्कर मे मत पडो।" पर गुणवती कहा मानने वाली थी। वह बोली "पुत्र ! ऐसा न कहो। मेरे मन की मुराद तो तुम्हे पूरी करनी ही पडेगी। मैं वर्षो से सोच रही थी कि मेरे घर मैं बहू आएगी। सास–बहू बडे प्रेम से रहेगी। और अब तो मेरी उम्र भी ढलने लगी है। ऐसी स्थिति मे घर के काम को चलाने के लिये भी किसी महिला की आवश्यकता है ही। इसलिये तुम शादी करलो। बहू आएगी, घर का काम भी सभाल लेगी, और जो वर्षो से जिन्दगी नीरस बनती जा रही है, उसमे भी सरसता आ जाएगी।"

मा के मन की गुहार के सामने रामसिह को झुकना पडा। और कुछ दिनो के लिये कृष्णसिह की पढाई की सारी व्यवस्था करके गुणवती और रामसिह अपनी सचित सम्पत्ति को लेकर रायगढ लौट आए। वर्षो बीत जाने से भवन भी सुनसान हो गया था, कचरे की अधिकता से खण्डहर सा प्रतीत होने लगा था। गुणवती ने मकान की सफाई की और दोनो वहा रहकर अगले कार्य की योजना बनाने लगे।

रामसिह ने कहा–"मा ! वैसे तो आज भी कई जमींदार अपने को दहेज देकर बेटी दे सकते हैं। पर मा मुझे परोपार्जित धन नही चाहिये। क्योकि **दूसरों के कमाये धन मे कभी भी जिन्दगी के सुख की खुशबू नहीं आती। दूसरों के कमाये धन पर जीने वाला निष्कर्मण्य बन जाता है।** इसलिये तुम ऐसा करो कि दहेज के चक्कर को छोडकर योग्य लडकी की तलाश करो। जो सहनशील एव घर को चलाने मे सक्षम हो।" गुणवती को भी रामसिह के सूझबूझ भरे विचार जच गए।

एक दिन गुणवती और रामसिह पास ही गाव मे किसी से मिलने जा रहे थे। रास्ते मे खेतो पर गन्ने की फसल खडी थी । जाते–जाते उन्होने देखा कि किसी खेत मे पशु घुस गये थे और वे फसल को नष्ट कर रहे थे। उस फसल की सुरक्षा के लिए एक अठारह वर्षीय नवयुवती बैठी हुई थी। जब उसने पशुओ को फसल नष्ट करते देखा तो तुरन्त उठी और पशुओ को खेत से बाहर धकेला। पशु एक खेत से हटे तो दूसरे खेत मे घुस गए और उस खेत को नष्ट करने लगे। उस खेत का उस समय कोई सरक्षक नहीं था। युवती से देखा नहीं गया और वह उस खेत मे भी पहुची और वहा से भी पशुओ को बाहर धकेला। यही नही सारे ही खेतो से पशुओ को धकेलकर दूर भगा दिया। युवती का यह करिश्मा रामसिह और गुणवती दोनो देखते रहे। गुणवती ने सोचा वस्तुत यह लडकी स्वहित के साथ ही पर का भी हित करने वाली है। यह लडकी मेरे रामसिह के योग्य लगती है। रामसिह भी उस लडकी की योग्यता को परख रहा था। लडकी मे योग्यता तो थी ही, साथ ही उसका रूप भी सुन्दर था। रामसिह का मन भी उसके गुण व रूप पर रीझ गया। पर वह बोला कुछ नहीं। गुणवती ने ही उस नवयुवती से पूछा–"अरे तुम्हारा नाम क्या है ?"

नवयुवती बोली–"चन्द्रमुखी।" वस्तुत तुम चन्द्रमा जैसे मुख वाली सुन्दर और शीतल हो।"नाम की प्रतिक्रिया करते हुए गुणवती ने आगे पूछा–"तुम किस गाव की और किसकी लडकी हो !" नवयुवती –"मैं कुन्दल गाव के निवासी श्री रघुवीरसिह जी की पुत्री हू।"

—"अहो बहुत अच्छा। हम भी उसी गाव जा रहे हैं। तब तो रघुवीरसिह जी से भी मिलना होगा। अच्छा तो बता तुम्हारे कितने भाई बहिन हैं ?" गुणवती के पूछने पर चन्द्रमुखी बोली "दो बहिने और तीन भाई है।"

"शादी किस–किस की हुई है ?" गुणवती ने अपने मतलब का प्रश्न उछाला। चन्द्रमुखी ने कहा "अभी दो भाई की शादी हुई है।"

"बहुत अच्छा ! अभी तो हम चलते हैं तुम गाव आओगी ना तो हम तुम से मिलेगे।" ऐसा कहते हुए गुणवती रामसिह के साथ आगे बढ गयी। रास्ते मे गुणवती ने रामसिह से कहा— "पुत्र ! मुझे तो यह लडकी तुम्हारे लिये योग्य लगती है। वस्तुत यह घर–गृहस्थी बहुत अच्छे ढग से चला सकती है। क्योकि "पूत के पग पालने मे ही छिपे नही रहते" की कहावत के अनुसार मैंने देखा जब इस लडकी के खेत मे पशु घुस आए तो इसने वहा से तो उन्हे निकाल दिया। पर वही पशु दूसरो के खेत मे घुसकर फसल नष्ट करने लगे, उस खेत का कोई सरक्षक वहा नहीं था, तब इस युवती ने वहा से भी पशुओ को खदेडा। यही नहीं अन्य खेतो की खडी फसल नष्ट न कर दे, इसलिये उन पशुओ को उसने दूर तक भगाकर अन्य खेतो के फसल की भी रक्षा की। यदि लडकी स्वार्थी होती तो अपने फसल की ही रक्षा करती। दूसरो के खेतो की रक्षा के लिये उतनी भाग–दौड क्यो करती। पर इसने दूसरो के फसल की रक्षा की, इसका मतलब यह अपनी रक्षा के साथ दूसरो की रक्षा भी चाहती है। जिसके अन्दर स्व–पर रक्षण का भाव हो, वह घर–गृहस्थी अच्छे ढग से चला सकती है। वैसे भी इसके बोलने–चालने का ढग भी अच्छा है, और सुन्दर भी है। मुझे तो यह पसन्द आ गयी। तुम्हे पसद हो तो बात आगे बढाई जाय।" रामसिह को भी चन्द्रमुखी देखने के साथ ही पसन्द आ गयी थी। रामसिह ने कहा—"मा ! जब तुम्हे पसद है तो मुझे पसद है ही।"

रामसिह की अनुमति हो गयी थी। गुणवती कुदलगाव पहुचते ही अन्य आवश्यक कामो को निपटाकर रघुवीरसिहजी से बात करने के लिये उनके घर पहुच गयी। रायगढ के जमींदार रायसिह का नाम दूर–दूर के

गावो तक फैला हुआ था। उनके ऐश्वर्य की गाव–गाव मे चर्चा हुआ करती थी। कुन्दल गाव भी रायगढ के पास ही का कस्बा था। अत रघुवीरसिह जी से भी रायसिह का नाम छिपा नही था। उनकी समृद्धि भले खतम हो गई थी पर उनका नाम और इमान खतम नहीं हुआ था। जब उन्हे यह ज्ञात हुआ कि जमींदार रायसिह की धर्मपत्नी गुणवती उनके घर आयी है तो वे दौडे हुए चले आये। सोचने लगे इतने बडे घराने की महिला आज मेरे घर कैसे आई है। गुणवती को अपने घर पाकर रघुवीरसिह जी ने बहुत अच्छा स्वागत किया। औपचारिक बाते हुई। इन्ही बातो के दौरान गुणवती अपनी मुख्य बात पर आ गई। उसने रघुवीरसिह जी से पूछा, "क्या चन्द्रमुखी आपकी पुत्री है ?" रघुवीरसिह जी ने कहा–"हा, मेरी पुत्री है।"

"बडी योग्य और सुशील है। क्या अभी तक उसकी शादी नहीं की ?" गुणवती ने बात आगे बढाई। रघुवीरसिह जी बोले–"हा कोशिश चल रही है। पर अभी तक मामला जमा नहीं है। क्योकि योग्य लडका मिलता है तो दहेज की माग होती है। पर मेरे पास इतना पैसा नहीं है कि मैं दहेज दे सकू, और बिना दहेज के योग्य लडका नहीं मिल रहा है।"

गुणवती बोली–"अगर ऐसी बात है तो आपकी समस्या को मैं हल कर देती हू। आप मेरे लडके रामसिह के साथ चन्द्रमुखी का विवाह कर दे। मुझे दहेज नहीं चाहिये।"

–"पर यह कैसे हो सकता है ? कहा तो आपका घर–घराना और कहा रायसिह के पुत्र रामसिह और कहा कुन्दल गाव का मैं रघुवीर, जो खेती–बाडी करके जीवन–बसर करता हू। आपका और मेरा मुकाबला कहाँ है।"

–"आप यह सब बाते जाने दीजिये। नीतिकार कहते हैं कीचड मे भी हीरा पडा हो तो उठा लेना चाहिये। वस्तुत आपके घर चन्द्रमुखी बहुत गुणवान कन्या है। आप नि सकोच मेरे पुत्र के साथ लग्न कर दे। गुणवती ने जब यह कहा तब रघुवीरसिह बोले– जब आपकी ही ऐसी इच्छा है तो मैं ऐसे सम्बन्ध से बहुत खुश हू कि मेरी लडकी बडे खानदान मे जायेगी।"

बस फिर क्या था। सम्बन्ध पक्का कर दिया गया और सादे समारोह के साथ गुणवती ने चन्द्रमुखी के साथ रामसिह का विवाह कर दिया। घर का ऑगन बहू से शोभा पाने लगा। कुछ दिन और रायगढ रहकर गुणवती, रामसिह और चन्द्रमुखी बम्बई अपनी खोली मे लौट आये।

चन्द्रमुखी ने घर का काम बहुत अच्छे ढग से सम्भाल लिया। बहुत कम खर्च मे घर गृहस्थी चला लेती थी। गुणवती को अब काम से कुछ राहत मिलने लगी। चन्द्रमुखी के घर मे आ जाने से घर मे एक नये ही आनन्द का सचार हो गया। यह सत्य है कि **सन्नारी से घर का मुर्झाया आगन भी बहार हो जाता है और कुनारी से घर का बहार आगन भी उजड जाता है। नारी घर की सुरक्षा कर सकती है तो नारी ही घर का विनाश भी कर सकती है।** चन्द्रमुखी तो सुशील और शीलवती नारी थी, इसलिये गुणवती के घर का ऑगन खुशियो से भर गया। दौलत की कमी होते हुए भी उसके गार्हस्थ्य सुख मे कोई कमी नहीं थी।

चन्द्रमुखी अपने देवर कृष्णसिह का भी बहुत ख्याल रखती थी। कृष्णसिह के खाने–पीने का तो वह ध्यान रखती ही थी पर उनके कपडे धोने, इस्त्री करने, बूट पालिश करने आदि छोटे–बडे सारे कामो को वह खुद निपटा देती थी। जिससे कृष्णसिह को अधिक–से–अधिक पढने का समय मिल सके। कुल मिलाकर चन्द्रमुखी के घर मे आने से तीनो ही प्राणी बहुत ही खुश थे। रामसिह के क्रमश दो पुत्र हुए, पहले का नाम अतुल और दूसरे का नाम अपूर्व रखा गया। गुणवती का आगन पोतो की किलकारियो से गूजने लगा।



(7)

सुबह—सुबह ही जब रामसिह ने नवभारत टाइम्स उठा कर देखा तो मुख पृष्ठ के कोने पर उसे एक फोटो दिखलाई दिया जिसे देखते ही उसकी आखो मे चमक उभर आयी। अरे यह फोटो तो मेरे भाई कृष्णसिह का है। रामसिह जल्दी—जल्दी समाचार पढने लगा। उसमे लिखा था कॉलेज का छात्र कृष्णसिह इन्जीनियरिंग की परीक्षा मैं बैठे एक लाख विद्यार्थियो मे प्रथम आया।

रामसिह ने इसी के साथ दूसरी पत्रिका 'बम्बई समाचार' को उठा कर देखा तो उसमे भी कृष्णसिह की फोटो और ये समाचार छपे थे कॉलेजनो छात्र कृष्णसिह इन्जीनियरनी परीक्षा मा एक लाख विद्यार्थिओना वच्चे प्रथम आव्यो छे, आ माटे बधाई।

रामसिह को पक्का विश्वास हो गया कि मेरा भाई कृष्णसिह, एक लाख विद्यार्थियो मे प्रथम आया है। अब तो उसकी खुशियो का कोई पार नही। रामसिह के वर्षों की मेहनत आज सफल हुई थी। रामसिह ने अपनी कुर्बानी देकर जिस बीज को बोया और कठिन परिश्रम करके जिसे सींचा था। उसी बीज ने आज वृक्ष का रूप धारण कर लिया था। वर्षों के अध्ययन के बाद कृष्णसिह ने आज एक लाख विद्यार्थियो के बीच प्रथम स्थान पाया था। रामसिह भागा—भागा अपनी मा के पास गया और खुशियो से झूमता हुआ मा से बोला—"मा—मा आज बहुत खुशी का दिन है।" रामसिह प्रसन्नता मे इतना झूम उठा था कि उसके मुह से शब्द ही नही निकल पा रहे थे। गुणवती ने रामसिह को इतना खुश वर्षो बाद आज पहली बार देखा था। वर्षो पहले जब इसके पिता रायसिह थे, तब तो घर मे धन दौलत भी भरपूर थी। रायसिह, अपने बच्चो को हर हालत मे खुश रखते थे। पर उनके जाने के साथ ही बच्चो की खुशिया भी मानो सदा—सदा के लिए चली गयी थी। जिन्दगी ने एक नया मोड ले लिया था। रामसिह पर तो पारवारिक बोझ भी बहुत पड गया था। वह तो सुबह से शाम मेहनत—मजदूरी ही किया करता था। घर—परिवार को चलाने की चिन्ता उसे सदा बनी ही रहती थी। उसके चेहरे ने असमय मे ही एक

गम्भीर प्रौढता का रूप ले लिया था। वर्षो बाद उसके चेहरे पर इतनी प्रसन्नता देखने को मिल रही थी। गुणवती ने कहा –"अरे पुत्र ! खुशी मे इतना क्या बावला हो रहा है, जरा मुझे भी तो बता क्या बात है ? तेरी खुशी का क्या राज है, जिससे मैं भी तेरी खुशी बटा लू।" मा–बेटे की बात को सुनकर रसोई मे काम कर रही चन्द्रमुखी भी बाहर निकल आई और सासूजी के पास जा खडी हो गई। रामसिह ने आज का नवभारत टाईम्स और बम्बई समाचार मा के हाथ मे देकर कृष्णसिह का फोटो दिखलाते हुए कहा–"मॉ यह कृष्णसिह का फोटो है जिसे अखबार वालो ने छापा है और लिखा है कि यह कृष्णसिह इन्जीनियरिंग की परीक्षा मे, एक लाख विद्यार्थियो के बीच प्रथम आया है।" गुणवती को यह सब देख–सुन कर अमित प्रसन्नता की अनुभूति हुई। उसने अखबार को अपने सीने से लगाकर आखे मूद ली उसके चेहरे से लग रहा था कि उसे आज कितनी खुशी है। जिसकी अनुभूति ही की जा सकती है। चन्द्रमुखी को भी कृष्णसिह के प्रथम आने से बहुत खुशी थी। उसने तो आज भोजन का रग ही बदल दिया। जो दाल रोटी वह बनाने जा रही थी उसे बन्द कर आज कृष्णसिह के प्रथम आने की खुशी मे उसने गर्म–गर्म हलवा, खीर–पूडी, पकोडे और विविध प्रकार की मिठाईयॉ बना डाली।

बस अब सबको कृष्णसिह की ही प्रतीक्षा थी। वैसे कृष्णसिह रहता तो घर पर ही था। पर घर छोटा होने से उसकी पढाई मे बाधा आती थी। ऐसी स्थिति मे रामसिह ने भाई के अध्ययन की सुविधा के लिये उसे छात्रावास मे दाखिल करवा दिया था। कृष्णसिह कभी छात्रावास मे रहता तो कभी घर पर। अपनी सुविधा के अनुसार वह आया–जाया करता था। जैसा कि सबको ज्ञात था कि आज रिजल्ट घोषित होने वाला है। इसलिये कृष्णसिह और उसके सभी दोस्त एक ही जगह एकत्रित थे। सभी को बेताबी से आज के दैनिक पत्रो का इन्तजार था। जब उनके हाथ मे भी अखबार आया और उसमे कृष्णसिह का फोटो सहित नाम छपा पाया तो सभी देखते ही रह गए। अरे कृष्णसिह तो हम सबसे आगे निकल गया। आज लाखो–करोडो लोगो मे उसका नाम फैल गया है। यह तो एक लाख विद्यार्थियो मे प्रथम है। सभी दोस्त कृष्णसिह से चिपक गये। "वाह दोस्त ! तुमने तो पढ–पढ कर छलाग मार दी है। कहा से कहा उछल

गये हो। अरे बाबा कोई बात नही, इस उछाल मे हमे भी साथ रखना," सभी दोस्त कृष्णसिह को अपनी-अपनी बात कहे जा रहे थे। इसी बीच एक बोला-"अरे यह सब बाते तो बाद मे करेगे। पहले आज की बात तो हो जाय। कम से कम आज तो मुह मीठा कर ले।" सभी एक साथ बोले-"हा-हा। आज की दावत तो कृष्णसिह को हम देगे, और फिर बाद मे जिन्दगी भर कृष्णसिह हमे दावत देगा।" सभी हस पडे और चल पडे 'फाइव स्टार' होटल मे। कृष्णसिह वैसे आर्थिक दृष्टि से कमजोर था, उसका भाई रामसिह जैसे-तैसे मजदूरी करके उसे पढा रहा था पर दोस्तो के बीच उसकी प्रतिष्ठा बहुत बडे जमीदार के पुत्र के रूप मे ही थी। क्योकि दोस्तो मे जब भी उसके घर के विषय मे पूछा तो उसने यही बताया कि मेरे पिता रायसिह, रायगढ के जमींदार थे, वे तो स्वर्गवासी हो गये पर मेरा ज्येष्ठ भाई रामसिह सारा कारोबार सम्भालते हैं। ऐसी बातो से दोस्तो के दिमाग मे वैसे भी उसके प्रति सम्मान तो था ही और अब प्रथम आ जाने से उसका भविष्य दोस्तो की दृष्टि मे और अधिक उज्जवल दिखलाई देने से कृष्णसिह का सम्मान ज्यादा बढ गया था।

'फाइव स्टार' होटल के हॉल मे पहुचकर सभी दोस्त कुर्सिया खींचकर बैठ गए। बेरे आर्डर के लिये तैयार खडे थे। एक दोस्त बोला आज तो 'सेण्डवीच' खाई जाय तो दूसरा बोला नही आज तो बगाली स्वीट खायेगे तो तीसरा गुजराती दोस्त बोला-नही आज 'श्री खण्ड' खाया जाय। सभी अपनी-अपनी खींच करने लगे। बडी मुश्किल से यह विवाद दो-चार वस्तुओ के लिये निश्चित हुआ। बेरे को आर्डर दे दिये गये। एक के बाद एक वस्तु डाईनिग टेबल पर आने लगी। सभी दोस्त बातो के चटखारे के साथ खाने लगे। खाते-खाते रमेश कृष्णसिह को बोला- "यार ! अब तो तुम्हारी जिन्दगी भर की लॉटरी खुल गई है। बहुत पैसे कमाओगे, करोडपति बन जाओगे। तब क्या हमारी याद रखोगे ?"

महेश बीच मे ही बोल उठा-"डीयर ! दुनिया दौलत की है, उसे दौलत ही प्यारी है।"

इतने मे राहुल बोला-"जब दौलत का रग आ जाता है तो पुराने रग फीके पड जाते हैं।"

प्रशात बोला भाई !–"**दौलत का रग ही इतना किरमीची रंग है कि उस पर दूसरा रंग चढता ही नहीं।**"

दिनेश बोला–"डीयर ! कृष्णसिह को भी अब दौलत का रग चढने वाला है।"

परेश बोला–"फिर तेरी और मेरी कीमत गिर जायेगी।"

इस प्रकार सभी दोस्त बातो का कहकहा लगाते हुए कृष्णसिह के मन को कुरेदने लगे। अन्त मे कृष्णसिह बोला– "यह सत्य है कि दौलत का रग किरमीची रग होता है, जिसके चढने के बाद दूसरा रग उस पर नहीं चढता, फिर भी कम से कम मैं तुम लोगो को तो नही भूलूगा।"

इन बातो ही बातो मे सभी दोस्तो ने प्लेटे साफ करदी और होटल से बाहर चले आये। एक–दूसरे से विदाई ली और अपने घर की ओर बढ चले। कृष्णसिह को भी आज अपने घर जाना था। उसने सुबह ही सूचना कर दी थी कि अभी तो मैं नहीं आ सकता क्योकि दोस्तो के साथ जाना पडेगा। शाम को पाच बजे मैं घर लौट आऊगा। और चार बज चुके थे। इसलिए सीधा घर की ओर चल पडा।

रामसिह, गुणवती, चन्द्रमुखी सुबह से ही उसकी प्रतीक्षा मे थे। और अब तो उन्हे बेताबी से इन्तजार था कि कृष्णसिह आने वाला है। पाच बजे तक सारी तैयारिया करली गयी थी। ठीक पाच बजे कृष्णसिह घर की चौखट पर आ पहुचा। गुणवन्ती ने उसके ललाट पर कुकुम का तिलक लगाया, कृष्णसिह ने माता को प्रणाम किया। गुणवन्ती ने उसे हजारो हजार साल जीने का आशीर्वाद देकर छाती से लगा लिया। बेटा तुम कुल के उजियारे बनो, तुम्हारे पिता का नाम रोशन करो ! कृष्णसिह चुपचाप सुनता रहा। उसके बाद उसने रामसिह एव चन्द्रमुखी को भी प्रणाम किया। सभी का मन आज खुशियो से भर गया था।

रामसिह और कृष्णसिह स्नान आदि से निवृत हो साथ ही भोजन करने के लिए बैठ गए। चन्द्रमुखी रसोई से भोजन लाने लगी और गुणवन्ती उन्हे परोसती गई। भोजन के साथ ही स्नेह भरी बाते भी चलती रही। अतुल और अपूर्व भी अपने पापा और चाचा के साथ बैठकर ही भोजन कर रहे थे। अतुल सात वर्ष का और अपूर्व पाच वर्ष का हो गया

था। वे भी अब कुछ–कुछ समझने लगे थे।

अतुल ने आज अच्छी–अच्छी मिठाईया देखकर पापा से पूछ लिया, "पापा ! आज तो बहुत बढिया मिठाईया बनी है। रोज तो बनती नही है, आज ही कैसे बनी ?" रामसिह ने समझाया "पुत्र ! आज तुम्हारे चाचा एक लाख विद्यार्थियो मे प्रथम आये हैं। इस खुशी मे आज मिठाईया बनी है। अब तो तुम्हारे चाचा बहुत बडे बन जायेगे। तुम भी अगर इसी तरह से पढाई करोगे तो महान् बन जाओगे। फिर तुम्हारी खुशी मे भी मिठाईया खिलायेगे।" अतुल, अपूर्व पापा की बाते सुनते रहे, और मिठाईया खाते रहे। कुछ दिनो तक घर मे खुशिया मनाई जाती रही।



(8)

कृष्णसिह के पास बडे–बडे मिल मालिको के नौकरी करने के लिए ऑफर आने लगे। कृष्णसिह को सभी अपने ही पास रखने के लिये तैयार थे। कोई पाच हजार तो, कोई आठ हजार, तो कोई दस हजार रुपये मासिक वेतन देने के लिये कह रहा था, साथ ही रहने के लिये बढिया फ्लेट एव घूमने के लिये कार भी। आखिर कृष्णसिह ने सेठ बशीलालजी की मिल मे दस हजार रुपये मासिक पर रहने के लिये हा भर ली। सेठ बशीलाल ने उसे दादर मे एक अच्छा सा फ्लेट दे दिया और एक एम्बेसेडर कार भी।

कृष्णसिह अब विचार करने लगा। मुझे दस हजार रुपये प्रतिमाह मिलेगे। यदि ये सब रुपये मैं अपने भाई रामसिह या मॉ को दे दूगा तो मेरे पास क्या बचेगा ? और मुझे तो अभी खूब पैसा कमाना है, जब तक मेरे पास कुछ रकम इकट्ठी न हो जाय तब तक मैं कोई स्वतन्त्र काम भी नहीं कर सकता। सब रुपये मा को देने पर, जब कभी रुपये की आवश्यकता होगी तो मॉ से मागने पडेगे, और कुछ भी काम करूगा, तो उसमे भाई और मा का हस्तक्षेप भी रहेगा। मेरे पास स्वतन्त्र रूप से कुछ भी नहीं रह पायेगा। मुझे इनके बन्धन मे रहना पडेगा। ऐसी स्थिति मे क्यो न मैं मेरे पास ही रुपये एकत्रित कर लू। मा और भाई को तो अभी मालूम नहीं है कि इसे महीने मे कितने रुपये मिलने वाले हैं। उन्हे तो जो कुछ मैं बतलाऊगा, वे उसी पर विश्वास कर लेगे।

कृष्णसिह के मस्तिष्क पर स्वार्थ का पर्दा पड गया। अब उसे अपना ही अर्थ सिद्ध करना दिखने लगा। जिस भाई ने मेहनत–मजदूरी करके उसे पढाया लिखाया होशियार किया था। यो कहा जाय कृष्णसिह की पढाई के पीछे रामसिह ने अपना सब कुछ लुटाया था। आज जब कृष्णसिह पढ–लिखकर होशियार हो गया तो वह अपने स्वार्थ के पीछे भाई से भी दूरी बना रहा है। कृष्णसिह अपने भाई और मा गुणवती के पास पहुचा और कहने लगा कि सेठ बशीलालजी के यहा मेरी नौकरी लग गई है। पाच हजार रुपया महिना मिलेगा, पर काम अधिक होने से मैं

रोज–रोज यहा नहीं आ सकूगा। वहीं एक फ्लेट किराये लिया है उसी मे रहना होगा। कभी–कभी मिलने आ जाया करूगा। रामसिह और गुणवती ने उसकी बात पर सहज ही विश्वास कर लिया और बोले "कोई बात नहीं, तुम वहीं पर रहो, कभी–कभी मिलने तुम आओगे ही और तुम्हारा पता बतला दो तो कभी–कभी हम आ जायेगे।" रामसिह की बात सुनकर कृष्णसिह बोला–"भैया ! ऐसे नहीं। आप लोग वहा नहीं आ सकोगे। क्योकि, वहा दूसरे अफसर लोग बहुत आते रहते हैं। उनसे बातचीत करने मे ही समय चला जाता है। वहा मिलने की स्थिति नहीं रहेगी, इसलिये आप न आवे, मैं स्वय ही यदा–कदा यहा आता रहूगा।"

कृष्णसिह ने यह बात यह सोचकर ही कही थी कि ये लोग अगर वहा आयेगे तो धीरे–धीरे इन्हे सारे भेद की जानकारी मिल जायेगी व दूसरे आदमी, जो मेरे पास आते रहेगे, उन्हे अगर इन्होने अपना परिचय दिया कि मैं कृष्णसिह का भाई हू तो इनकी दयनीय स्थिति देखकर मेरी पॉजीशन डाउन हो जाएगी। जबकि लोगो के सामने मैंने अपनी प्रतिष्ठा यह जमा रखी है कि मैं रायगढ के बहुत बडे जमींदार रायसिह का पुत्र हू। पिता तो स्वर्गवासी हो गए, मेरा भाई रामसिह जमीन–जायदाद आदि को सम्भालता है। करोडो की सम्पत्ति है। पर जब रामसिह को लोग इस हालत मे देखेगे तो मेरी इज्जत पर पानी फिर जाएगा। यही सोचकर कृष्णसिह ने अपने फ्लेट का पता भी नहीं बताया।

वाह रे स्वार्थ ! कहा तो रामसिह ने कृष्णसिह को पढाने के लिये दिनभर मजदूरी करके भूखे पेट सोना मजूर कर लिया, पर कृष्णसिह की पढाई को बन्द नहीं होने दी। और यहा कृष्णसिह जो अपने स्वार्थ के वश मे होकर अपने भाई को भी भाई मानने के लिए तैयार नहीं है। दुनिया स्वार्थ की है, **जब तक कोई स्वार्थ सधता है, तभी तक संबंध हैं स्वार्थ के हटने पर कोई किसी का नहीं रहता है।**

कृष्णसिह गदी बस्ती की खोली को छोडकर अपने सजे–धजे फ्लेट मे रहने चला गया। घूमने के लिये भी उसे कार मिल गई थी। अब तक की दुनिया उसकी ओर थी और अब वह रईसजादो के एयासी की दुनिया मे आ गया था। जब चपरासी एकदम अफसर बन जाता है तो चपरासी अवस्था मे रहे दोस्तो की ओर दृष्टि भी नहीं डालता। यही हालत

कृष्णसिह की बनने लगी थी। कृष्णसिह का परिचय अब बडे–बडे सेठ साहूकारो, अफसरो से होने लगा। उसकी सोसायटी भी उन्ही श्रीमतो से जुडती चली गयी।

सेठ बशीलाल की मिल मे वह मैनेजर के पद पर कार्यरत है। सारे मिल का सचालन उसी के हाथ मे है। सैंकडो व्यक्ति उसके नीचे काम करते हैं। सभी उसे बडे सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। स्वय सेठ बशीलाल भी उसका पूरा सम्मान करते हैं। कृष्णसिह को इण्डस्ट्री मे अपनी प्रतिष्ठा जमानी है–इसलिये वह बडी लगन एव निष्ठा के साथ काम करने लगा। जिस किसी से भी उसका परिचय होता तो वह अपने परिचय मे यही बतलाता कि मैं रायगढ के बडे जमींदार रायसिह का पुत्र हू। मेरे बडे भाई रामसिह जी रायगढ में करोडो का व्यापार सभाल रहे हैं, उन्होने मुझे अलग से मिल लगाने के लिये कहा, किन्तु मैंने सोचा कि अभी तो डिग्री ही ली है, जब तक प्रेक्टिकल नॉलेज न हो जाय तब तक मिल नहीं लगाता। अभी तो मैं सेठ बशीलालजी की मिल मे मैनेजर के पद पर कार्यरत हू।

इस परिचय से श्रीमतो एव अफसरो पर उसका दूसरा ही प्रभाव पडता। कृष्णसिह लोगो को यह बतला देना चाहता है कि मैंने पैसो के अभाव मे नौकरी नहीं की है, अपितु प्रेक्टिकल नॉलेज पाने के लिये नौकरी की है। जिससे लोगो पर उसका प्रभाव रहे, क्योकि कृष्णसिह को अभी शादी भी करनी है, और उसकी महत्वाकाक्षा है कि वह किसी करोडपति–अरबपति की लडकी से विवाह करे, ताकि दहेज मे उसे लाखो की सम्पत्ति मिल सके। इसके लिये जब तक वह स्वय को पैसे वाला नहीं बतलायेगा तब तक पैसे वाले उसे अपनी लडकी नहीं देगे इसीलिये वह सारे नाटक खेल रहा था।

एक महिना पूरा होते ही कृष्णसिह को दस हजार रुपये मिल गए। उसमे से पाच हजार रुपये तो उसने सेफ बचा लिये। पाच हजार रुपये लेकर अपनी निजी कार से नहीं अपितु लोकल ट्रेन से ही खोली पर गया, क्योकि कार से जाने पर रामसिह के बच्चे भी उसमे घूमने की जिद कर सकते हैं। बच्चो को कार मे बिठाऊ तो ऐसे गदे एव फटे हाल बच्चो को मेरी कार मे यदि किसी ने देख लिया और कहीं इन बच्चो ने मेरा परिचय

दे दिया तो मेरी इज्जत धूल मे मिल सकती है। रामसिह और गुणवती भी कार मे घूमने के लिये कह सकते हैं। ऐसी अनेक सभावनाओ को टालने के लिए, लोगो मे अपनी छवि एक रईस की तरह बतलाने के लिये वह अपने घर पर गुप्त रूप से ही पहुचा और गुणवती तथा रामसिह के सामने जाकर कहने लगा– "ये पाच हजार रुपये मिले हैं, उसमे ढाई हजार रुपये आप रखलो और ढाई हजार रुपये मैं रखता हूँ, क्योकि मुझे वहा फ्लेट आदि का किराया भी लग जाता है।"

वाह रे स्वार्थ ! दस हजार मे से पॉच हजार तो पहले ही काट लिये। पाच हजार मे भी ढाई हजार और रख लिये वेतन का चौथा हिस्सा ही कृष्णसिह ने मा के हाथ मे थमाया। **जब व्यक्ति स्वार्थ मे अन्धा हो जाता है, तब मां भाई के सम्बन्धो को भी भूल जाता है।**

कृष्णसिह के बदलते हुए व्यवहार को रामसिह और गुणवती देखते रह गये। जब से इसने परीक्षा पास की, तभी से इसका व्यवहार बदलता जा रहा था। मॉ और भाई के प्रति निरतर उपेक्षित बनता जा रहा था। फिर भी रामसिह और गुणवती सब सहन करते जा रहे थे। पर आज कृष्णसिह ने पहले महिने के पाच हजार रुपये, जो मिले थे वे पॉच हजार ही मॉ को न देकर ढाई हजार रुपये अपने पास ही रखकर ढाई हजार ही दिये। यह रामसिह और गुणवती दोनो को बहुत अखरा। आत्मीयता का तकाजा तो यह था कि पाच के पाच हजार रुपये मा के हाथ मे थमाने चाहिये थे और जो भी खर्च चाहिये, वह मॉ से मॉग कर लेना चाहिये। पर कृष्णसिह ने तो मॉ के हाथ मे देने के पहले ही ढाई हजार रुपये रख लिये। रामसिह को और गुणवती दोनो को इस बात से गहरी चोट लगी। जिस कृष्णसिह के लिये उन्होने क्या नहीं किया था। रामसिह चिथडे कपडे मे रहता पर कृष्णसिह के लिये अच्छी पोशाक बनाता। खुद रूखी रोटी खा लेता, पर कृष्णसिह को जेब खर्च भी बराबर देता। यही नहीं, बल्कि खून–पसीने की कमाई के हजारो रुपये खर्च करके उसे इग्लिश मीडियम मे पढाया। गुणवती के साथ रामसिह की पत्नी चन्द्रमुखी भी कृष्णसिह का पूरा ध्यान रखती थी। उसके कपडे आदि तो धोती ही थी। जब कृष्णसिह भोजन के लिये आता तो उसे गरम–गरम बनाकर ही देती थी। परिवार के सभी सदस्य अपना कम, कृष्णसिह का ज्यादा ध्यान रखते थे। किन्तु अब

उसका परिणाम ठीक उसके विपरीत आने लगा। कृष्णसिह का तो अब उस खोली मे मन ही नही लगता। उसे तो उसमे बदबू आने लगी। मा और भाई भी उसे नही सुहाते, उपेक्षा के साथ वह बाते करता। मुश्किल से दो–तीन घण्टे रहकर कृष्णसिह काम की अधिकता का बहाना बनाकर खोली से निकल पडा। धन के मद मे कृष्णसिह को मॉ भाई बेगाने लगने लगे थे।

रामसिह और गुणवती को अपनी सुनहरी कल्पनाओ का महल ढहते नजर आने लगा। रामसिह सोचने लगा कोई बात नहीं, कृष्णसिह कुछ भी करे, मैंने तो भाई के प्रति अपने कर्त्तव्य को निभा दिया। वह अब मेरा ध्यान रखे, या न रखे यह उसके ऊपर है। मॉ भी गम खाकर रह गयी।

पैसों का अंधापन ऐसा होता है कि जो व्यक्ति की भीतरी प्रज्ञा को नष्ट कर डालता है। बाह्य अंधता जितनी घातक नहीं, उतनी भीतरी अंधता घातक है। कृष्णसिह के आन्तरिक चक्षु अब बुझते जा रहे थे। उसके नेत्रो पर धन का चशमा लग गया था। उसे धन ही प्यारा लगने लगा और धनवानो के साथ ही उसे उठना–बैठना सुहाता था। निर्धन मा और भाई के साथ वह ऊपरी व्यवहार रखता था, सच्चाई मे तो मॉ, भाई को देखना भी वह पसद नही करता अभी उनसे उसे तुच्छ स्वार्थ पूर्ण करना था, इसलिये व्यवहार बनाए हुए था।



(9)

एक ही वर्ष मे कृष्णसिह ने अच्छी तरक्की कर ली। सेठ बशीलाल की मील मे दुगुना प्रॉफिट हुआ। सारी इण्डस्ट्री मे कृष्णसिह का नाम फैल गया। बडे–बडे मील मालिक, कृष्णसिह को सम्मान की दृष्टि से देखते और अनेक विषयो मे उसका परामर्श लेते, बडे–बडे श्रीमत अपनी लडकी का विवाह कृष्णसिह से करने के लिये उत्सुक हो उठे। उनकी दृष्टि मे तो कृष्णसिह के परिवार का कोई भी सदस्य यहा नहीं था। दूसरी बात अब जमाना भी तेजी से बदल चुका था। पहले जमाने मे तो मॉ–बाप जैसा भी निश्चय कर देते, बेटा मान जाता था। पर आज ऐसा नहीं होता। मॉ–बाप का निर्णय एक तरफ धरा रह जाता है, बेटे की पसद जो होती है, वही काम आती है। इसलिये अपनी बेटी के विवाह को उत्सुक श्रीमत सीधे कृष्णसिह से ही बातचीत करने लगे। कोई श्रीमत कहता जैसे आप स्मार्ट है, वैसे ही मेरी मोहिनी भी स्मार्ट एव ग्रेज्यूएट है, आपकी और उसकी अच्छी जोडी जचेगी। तो कोई कहता वाह आप मेरी लडकी को तो देखे भगवान करे आप दोनो की जोडी बहुत जचेगी। इस प्रकार सभी अपनी–अपनी बात कहने लगे थे, पर कृष्णसिह का दिमाग कुछ और ही सोच रहा था। उसका दिमाग अब व्यापारी दिमाग बन चुका था। उसे हर क्षेत्र मे व्यापार ही नजर आने लगा था। किसमे अधिक से अधिक लाभ हो सके। यही कृष्णसिह देखा करता था।

कृष्णसिह सभी श्रीमतो का तुलनात्मक अध्ययन कर रहा था। कौन कितना पैसे वाला है, दहेज मे कितना पैसा दे सकता है। कितना अधिक दहेज कौन दे सकता है ? यह कृष्णसिह सोचा करता था।

बडे–बडे श्रीमतो से बातचीत करने के बाद कृष्णसिह को सेठ आनन्दीलाल का सबध जच गया। क्योकि सेठ आनन्दीलाल ने उसे दस लाख रुपये नगद तथा दस लाख का अन्य सामान देना निश्चित किया था। कृष्णसिह लडकी भी देख आया था। वैसे लडकी इतनी सुन्दर एव सुशील तो नहीं थी पर पैसे मिलने वाले थे, कृष्णसिह ने बात बनाई–"देखिये आनन्दीलाल जी सबध का निर्णय तो मेरे ज्येष्ठ भ्राता रामसिहजी और मॉ

गुणवती करेगे। जब तक वे देख न ले, तब तक कुछ भी निर्णयात्मक नही कहा जा सकता।"

"तब तो आप उन्हे यहा बुला लीजिये, कितना टाईम लगता है। रायगढ से शाम को ट्रेन मे बैठेगे, और सुबह यहा पहुच जायेगे।"

"मैं कोशिश करूगा कि वे शीघ्र आ जाय। पर भाई साहब के काम बहुत रहता है। सैकडो बीघा जमीन है। लाखो का लेन–देन रहता है। सारी जमीन जायदाद को सभालना पडता है, वह अकेले हैं। इसलिये समय कम ही मिलता है, मै उनसे पत्र डालकर पूछ लेता हू।"

कृष्णसिह की बात सुनकर सेठ आनन्दीलालजी बोले–"अरे कोई बात नही वे नही आ सकते हो तो हम ही लडकी को लेकर कल कार मे चले जाए तो वे वही देख लेगे।"

आनन्दीलालजी की बात सुनकर कृष्णसिह सकपकाया कहीं उसका झूठ का किला ढह न जाय। इसके लिये वह बात बनाते हुए बोला–"नही–नहीं। आपका वहा जाना तो बिल्कुल ही ठीक नही रहेगा। आपके जाने पर तो बात बनती होगी तो और बिगड जाएगी। वह कैसे ? सेठ आनन्दीलाल जी बीच मे ही बोल पडे। वह यो, हमारे भाई साहब पुराने विचारो के हैं। और माताजी तो उनसे भी दो पैर आगे रखती है। वे तो रायगढ के आस–पास के इलाके मे ही किसी जमींदार की लडकी से शादी करना चाहते है। आप वहा जाये और वे मना कर दे तो फिर मैं भी उन्हे मना नही सकता। उनका निर्णय, अतिम निर्णय होगा। यदि वे पहले मेरे से मिल ले, तो मैं उन्हे अच्छी तरह समझा लू, तभी आपसे मिलना उचित होगा।" सेठ आनन्दीलाल जी के भी बात जच गयी। उन्होने सोचा कही मेरे जाने से बात बिगड न जाय। यदि यह लडका हाथ से चला गया तो ऐसा स्मार्ट लडका मिलने वाला नही है। इसलिये सेठ आनन्दीलाल जी ने रायगढ जाने का विचार स्थगित कर दिया।

कृष्णसिह का बहुत बडा सकट टला। यदि आनन्दीलालजी रायगढ जाने का आग्रह करते तो सारी पोल खुल जाती। अन्त मे आनन्दीलालजी यह कहते उठ चले कि "आप जल्दी ही उन्हे यहा बुला लीजिये। शुभ कार्य में विलम्ब क्यो ? –" अच्छा मैं कोशिश करूगा, कृष्णसिह बोला।

कृष्णसिह अब अगली योजना पर विचार करने लगा। शादी के इस नाटकीय खेल मे गुणवती और रामसिह से भी उसे बहुत बडा पार्ट अदा करवाना था इसके लिये मॉ और भाई सा मृदुल–व्यवहार बनाना आवश्यक था। बस फिर क्या था, अब दो–दो, चार–चार दिन मे ही कृष्णसिह खोली पर पहुचने लगा। जब भी जाता मिठाई का डिब्बा साथ ले जाना नही भूलता। मॉ–भाई से बडे प्रेम से मीठी–मीठी बाते करता। उसके व्यवहार मे जो रुखापन था, उसमे परिवर्तन आ गया। गुणवती व रामसिह सोचने लगे कि कृष्णसिह का व्यवहार बहुत अच्छा बन गया। खैर जब जागे, तभी सवेरा। अब समझ मे आया उसे भाई और मॉ का प्रेम। निश्छल रामसिह और गुणवती को क्या पता कि कृष्णसिह के इस मृदुल व्यवहार के पीछे कितनी बडी कूटनीति है। सच है– जो जैसा होता है वैसा ही दूसरो को भी समझ लेता है। इधर आनन्दीलालजी का बार–बार कृष्णसिह के पास फोन आने लगा कि कब आपके भाई सा एव माताजी पधार रहे हैं। कृष्णसिह ने बात बनाई–"मैंने भाई साहब एव माताजी को पत्र दिया तो भाई साहब का उत्तर आया कि अभी यहा पर बहुत काम है। सैकडो बीघा जमीन पर फसल खडी है, उनको काटना, अनाज निकालना एव पचासो ट्रको मे भरवाकर रवाना करना है। वैसे पचासो आदमी काम कर रहे हैं, फिर भी देखभाल तो करनी ही पडती है। मैं एक महीने से पहले बम्बई किसी भी हालत मे नहीं आ सकता हू, अत आपको एक महीने तक तो कम से कम इन्तजार करना ही पडेगा," कृष्णसिह ने सेठ आनन्दीलाल जी को यह सब फोन पर बतलाया।

सेठ आनन्दीलालजी को कृष्णसिह की बात माननी ही पडी। क्योकि उन्हे भय था कि अगर जल्दी की तो कहीं काम बिगड सकता है। कुछ इन्तजार तो करना ही होगा।

इधर कृष्णसिह बराबर रामसिह और गुणवती से सम्पर्क बनाए हुए था। आखिर एक दिन गुणवती ने बेटे से प्यार भरे शब्दो मे कहा "अब तो तू बहुत बडा एव योग्य हो गया है। अब मैं चाहती हू मेरे एक बहू और आ जाय।" कृष्णसिह तो पहले से ही इसी बात का इन्तजार कर रहा था। मॉ के मुख से यह सुनकर वह गभीरता का लबादा ओढते हुए बोला "मॉ। यह विषय तो तुम्हारा और भाई साहब का है। मैं इसमे क्या कह

सकता हू।"

रामसिह बोला–"ठीक बात है। पर आज का युग बदल गया है। और फिर तुम ग्रेज्युएट एव शहरी जीवन जीने वाले हो, अत लडकी पसद ना पसद तो तुम्हें ही करनी होगी। हॉ यदि तुमने इस दौरान किसी लडकी को पसद कर लिया हो तो वह बतला दो, ताकि हमे भी सुविधा हो जाय।" रामसिह के इन स्पष्ट विचारो को सुनकर कृष्णसिह मन ही मन पुलक उठा। सोचने लगा। बात अपने आप ही बनती जा रही है। भाई साहब स्वय ही पूछ रहे हैं। वह बोला– "भाई साहब। आप क्या फरमाते हैं, भले मैं शहरी जीवन जीने वाला हो गया हू तो क्या हुआ, अपने पुरखो की आन कैसे तोड सकता हूँ। पसद का निर्णय तो आपको ही करना होगा। हा शहर के बडे–बडे श्रीमतो ने मुझसे कई बार अपनी–अपनी लडकी से शादी करने का आगाह किया। सेठ आनन्दीलालजी तो पीछे ही पड गए कि तुम्हे मेरी लडकी से शादी करनी ही होगी। और उन्होने लडकी भी मुझे दिखला दी, पर मैंने यह साफ–साफ बता दिया कि विवाह किसके साथ करना और किसके साथ नहीं करना, इसका निर्णय मेरी मॉ–और बडे भैया करेगे। तब वे ये जिद करने लगे कि जल्दी ही उन्हे बुलाओ ताकि सारा काम निर्णित हो जाय।" यह सुनकर गुणवती बोली "यदि ऐसा है तो चलो हम चलते हैं, और लडकी को भी देख लेते हैं, और निर्णय भी कर देते हैं।"

तब कृष्णसिह बोला– "मॉ। आपका सोचना तो उचित है, पर एक बहुत बडी समस्या है।"

"वह क्या ?" मॉ ने पूछा।

कृष्णसिह बोला– "मुझे विश्वास है कि आप मेरे सुख के लिये सब कुछ करने को तैयार हो जायेगे ? समस्या कुछ ऐसी है कि जिसका समाधान आप ही कर सकते हैं।" यह सुनकर गुणवती बोली–"बेटा। जरुर कहो, तुम्हारे सुख के लिये हमसे जो भी बनेगा, जरुर करेगे।" गुणवती की तरफ से आश्वस्त होकर कृष्णसिह बोला– "मॉ। बात ऐसी है कि मैंने सभी श्रीमतो के सामने यही परिचय दिया है कि "मैं रायगढ के बहुत बडे जमीदार रायसिह का पुत्र हू। पिताजी तो स्वर्गस्थ हो गए।

मेरे बडे भैया रामसिह सैकडो बीघा जमीन, लाखो का लेन–देन तथा करोडो की चल–अचल–सम्पत्ति सभालते हैं। मैं तो यहा पढाई करने आया था, और जब अच्छे अको मे उत्तीर्ण हो गया तो भाई सा ने कहा–तुम बम्बई मे ही कोई फैक्टरी लगा लो। जितने भी पैसे चाहिये यहा से ले लो। पर मैंने सोचा जब तक अध्ययन का प्रेक्टीकल नॉलेज न हो जाय तब तक फैक्ट्री लगाना ठीक नहीं, इसलिये मैं अभी सेठ बशीलाल की मील पर मैनेजर के पद कर कार्यरत हू।

मेरे इस परिचय से श्रीमतो पर अच्छा प्रभाव पडा। मेरी प्रतिष्ठा उन लोगो के बीच जमती चली गई और अब वे अपनी–अपनी लडकी के साथ शादी करने के लिये भी तैयार हो गये। ऐसी स्थिति मे आपका इस रूप मे उनके पास जाना मेरी इज्जत को धूल–घूसरित करना होगा।"

गुणवती बोली–"पुत्र ! तुमने यह ठीक नहीं किया। तुम्हे अपना परिचय सत्य ही देना चाहिये। **मिट्टी का महल आखिर कब तक टिक सकता है। नकली गोल्ड कब तक चमक सकता है। काच का टुकडा कब तक हीरा बना रह सकता है। गधा कब तक सिंह की खाल ओढ सकता है ? एक दिन सच्चाई प्रकट हो ही जाती है। वैसे ही झूठा सम्मान भी ज्यादा नहीं टिकता। सच्चाई एक दिन प्रकट होकर रहती है,** तब बहुत बडी हानि उठानी पडती है। गुणवती की अनुभूतिपूर्ण बात तो एकदम सत्य बात थी पर जिसके धन का चश्मा लगा हो, उसे यह सत्य बात कैसे ग्राह्य हो सकती है।

कृष्णसिह रुआसा होता हुआ बोला–"मा ! अब जो होना था सो तो हो गया। अब यदि उन्हे सही परिचय दिया जाय तो मेरी प्रतिष्ठा तो खतम होगी ही साथ ही मेरी नौकरी भी जाएगी। फिर मै न व्यापार ही कर सकूगा और न नौकरी ही। क्योकि लोगो मे मेरी प्रतिष्ठा खतम हो जायेगी, तब कोई भी लेनदेन नहीं करेगा। ऐसी स्थिति मे आप सोचे क्या किया जाय ?" कृष्णसिह की बात सुनकर गुणवती बोली "हमारा सहयोग इसमे कैसे क्या रहेगा ? क्या करना होगा हमे ?" तब कृष्णसिह ने कहा "मा बस आपको कुछ भी विशेष नहीं करना होगा। केवल इतना ही करना होगा कि आप यहा से रायगढ चले जाये, वहा के मकान को कुछ करीने

से सजा ले और भाई साहब और आप अच्छे कपडे और हाथो मे हीरो की अगूठिया आदि पहने हुए फर्स्ट क्लास के डिब्बे मे नव तारीख को बैठकर दस तारीख को बम्बई पहुच जाय। स्टेशन पर ही सेठ आनन्दीलालजी और मैं स्वागत के लिए खडे रहेगे। बस तुम्हे यही बतलाना है कि मैं करोडो के मालिक सेठ रायसिह की पत्नी और यह रामसिह पुत्र है। इस ढग से चलना–उठना–बैठना है ताकि सेठ आनन्दीलाल को लगे कि वस्तुत यह बहुत ऊचे खानदान के रईस है। बातचीत के दौरान वे बीस लाख दहेज की बात कहेगे, और लडकी दिखलायेगे, तब बात पक्की कर लेना। खर्च के लिए कुछ रुपये तो मैं आपको अभी आकर दे देता हू, और फिर आप रायगढ से आयेगे, तब और दे दूगा।

कृष्णसिह की बात को सुनकर गुणवती एकदम गम्भीर हो गई। "यह कैसे बनेगा ? मेरे से तो इस प्रकार झूठ–मूठ अभिनय नहीं हो सकेगा। जो कुछ हो वह सच्चाई के साथ हो, आखिर एक दिन तो उन्हे मालूम पडेगा ही, तब क्या बीतेगी।

"मा ! अब तुम बिगडी बना दो। पुत्र की प्रतिष्ठा का प्रश्न है। अगर जरा भी सामने वाले को मालूम पड गया तो मेरी इज्जत मिट्टी मे मिल जायेगी।" कृष्णसिह ने समझाया।

गुणवती विचारो मे उलझ गयी। एक तरफ पुत्र की प्रतिष्ठा का सवाल है तो दूसरी तरफ सत्यवादिता का। क्या करना चाहिये ? आखिर मा की ममता की विजय हुई। गुणवती के मन ने निर्णय किया कि पुत्र के हितो की रक्षा करना आवश्यक है, भविष्य मे जो होगा सो होगा। गुणवती बोली–"पुत्र ! बात तो बडी विचित्र रहेगी। पर जब तुम इतना आगे बढ चुके हो, जहा से पीछे हटना नामुमकिन है तो अब तुम्हारे हितो की रक्षा के लिये मुझे जो कुछ भी अभिनय करना होगा, करूगी।"

–"मुझे तुम्हारे से यही आशा थी मा ! कि तुम मेरी बात अवश्य मानोगी। शाम को ही मैं वापस आ रहा हू।" यो कह कृष्णसिह खोली से निकल गया और सारी ही सामग्री एकत्रित कर सध्या को पुन खोली पर पहुचा और गुणवती से बोला–"मा ! यह लो बीस हजार रुपये। मैं उधार लेकर आया हू, बाद मे चुकाता रहूगा। जबकि वह अपने पास से ही लाया

था। यह तुम्हारे लिये वस्त्र आभूषण हैं तथा ये वस्त्र, आभूषण भाभी चन्द्रमुखी के लिये और ये सूट वह हीरे की अगूठिया भैया रामसिह के लिये हैं और ये बाबा सूट अतुल–अपूर्व के लिये। आप सभी यहा से कल ही रायगढ पहुच जाये और वहा से तार करे कि हम नव तारीख की राजधानी एक्सप्रेस के फर्स्ट क्लास के डिब्बे मे बैठकर सवेरे बम्बई आ रहे हैं।" कृष्णसिह ने सारी बात रामसिह एव गुणवती को समझा दी। उन्हे कृष्णसिह के हित के लिये यह नाटक करने के लिये तैयार होना ही पडा।



(10)

दस तारीख को प्रात काल ही सेठ आनन्दीलालजी सज-धजकर अपनी मर्सडीज कार मे बैठकर बम्बई सेन्ट्रल के प्लेटफार्म पर पहुच गए, और चहल-कदमी करने लगे। उन्हे दिल्ली से आ रही राजधानी एक्सप्रेस का बेताबी से इन्तजार था। इधर कृष्णसिह भी श्वेत परिधान मे सजकर उसी प्लेटफॉर्म पर पहुचा। क्योकि आज रायगढ से गुणवती रामसिह, चन्द्रमुखी आदि आने वाले थे। ये समाचार कृष्णसिह ने सेठ आनन्दीलालजी को दे दिये थे। सेठ आनन्दीलालजी इसी का इन्तजार कर रहे थे। वे चाहते हैं कि बम्बई मे कृष्णसिह के परिवार से कोई मिल पाये, उससे पहले ही कृष्णसिह का एगेजमेट मेरी पुत्री सूर्यमुखी के साथ हो जाय तो बेटर रहेगा। क्योकि दूसरो से मिलने पर उनका दिमाग बदल भी सकता है। इसलिये वे सवेरे ही सारी तैयारी करके स्टेशन पर पहुच गये। ठीक नौ बजे राजधानी एक्सप्रेस, सिटी लगाती हुई स्टेशन पर खडी हो गई। एक के बाद एक यात्री उतरने लगे। सेठ आनन्दीलाल और कृष्णसिह फर्स्ट क्लास डिब्बे के बाहर खडे देख रहे थे। इतने मे डिब्बे का फाटक खुला और कृष्णसिह को रामसिह दिखलाई दिया। वह एकदम बोल उठा- "भैया !" और रामसिह के उतरने से पहले ही डिब्बे मे चढकर भ्रातृत्व स्नेह के अतिरेक को प्रकट करने लगा। इतने मे गुणवती और चन्द्रमुखी भी आ पहुची तो कृष्णसिह ने उन्हे भी प्रमाण किया। सभी डिब्बे से बाहर निकल आये। सेठ आनन्दीलालजी ने रामसिह, गुणवती आदि का बडी सरगर्मी से स्वागत किया। और सभी को स्टेशन से बाहर खडी अपनी मर्सडीज कार मे बिठाने लगा। कृष्णसिह ने बीच मे ही कहा-"अरे आनन्दीलालजी अभी तो इन्हे मेरे फ्लेट जाने दीजिये। वहा से फिर आप के घर किसी समय आ जायेगे।" पर आनन्दीलालजी यह अवसर छोडने वाले नहीं थे। बोले "वह भी आपका ही है, यहा-वहा एक ही बात है।" आखिर सेठ आनन्दीलालजी ने उन्हे आग्रह के साथ अपनी गाडी मे बिठा लिया।

रास्ते मे भाई-भाई बात करने लगे। रामसिह ने पूछा "कृष्णसिह ! क्यो अभी तक नौकरी ही कर रहे हो। मैंने तुमसे कहा था ना-अपने वश मे नौकरी करना, गुलामी करना पसद नहीं। तुम जितने रुपये चाहो मेरे

से ले जाओ और फैक्ट्री खरीद लो। अब नौकरी बद करो।"

"अच्छा भैया ! अभी तो मुझे एक साल ही हुआ है। एक साल और रहकर फिर छोड दूगा। अब आप यह बतलाओ। रायगढ का क्या हालचाल है।"

–"क्या बताऊ। तुम यहा हो, मैं अकेला व्यापारिक कार्यों मे बहुत बिजी रहता हू। सैकडो बीघा जमीन मे फसल पक चकी थी, उसे कटवाई, अनाज निकलवाया बेचा और खेत मे अन्य बीज बोये। लाखो रुपये के लेन देन को भी सम्भालना पडता है और जो फर्म मुनीम लोग चला रहे हैं, उनकी भी बराबर देखभाल करनी पडती है। टाईम बिलकुल ही नहीं मिलता। यह तो तुम्हारे बहुत आग्रह से दो दिन के लिए चला आया।"

सेठ आनन्दीलालजी दोनो भाईयो की बाते सुनकर सोचने लगे, "अहो ये कितने बडे खानदान के हैं। इनके पास रुपये–पैसो की तो कमी ही नहीं है। पुराने जेवरात, हीरे कितने होगे, जिसका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। कृष्णसिह भी कितना होशियार, ग्रेज्युएट और स्मार्ट है, कैसे भी हो अपनी लडकी का सबध इससे तय कर लेना चाहिये।

दस मिनिट की यात्रा के बाद गाडी मेरीन–ड्राईव की एक बिल्डिग के विशाल पोर्च मे आकर खडी हुई। सभी गाडी से नीचे उतर आए। लिफ्ट से तीसरी मजिल के 21 नम्बर खूबसूरत फ्लेट में प्रवेश किया। फ्लेट वैसे देश–विदेश की मूल्यवान वस्तुओ से सजा था और तो और भी विशेष ढग से सजाया गया था। फ्लेट के विशाल हाल मे सेठ आनन्दीलालजी ने सभी को सम्मान के साथ बिठलाया। रामसिह बहुत उपेक्षापूर्ण व्यवहार के साथ किधर भी आकर्षण भरी दृष्टि से नहीं देखते हुए अपने ख्वाब के साथ बैठ गया। आखिर वह भी एक बहुत बडे जमींदार का लडका है और करोडो की सम्पत्ति का मालिक है। **किसी भी चीज को ज्यादा आकर्षण की दृष्टि से देखना, एक दृष्टि से स्वय को अभावग्रस्त बतलाना है।** रामसिह अपने को किसी भी ढग से गरीब नहीं बतलाना चाहता था।

टेबुल पर सोने के थालो में बहुत ही सुन्दर रीति–नीति से बना भोजन आ गया। क्योकि सेठ आनन्दीलालजी जानते थे कि ये जमींदार लोग है, स्टील की थालियो को देखकर कहीं अन्यथा न सोच बैठे।

इसलिये पहले से ही सोने की थालियो का प्रबध किया गया था। भोजन के साथ ही बातो का सिलसिला भी चल पडा। सेठ आनन्दीलालजी ने कृष्णसिह के साथ अपनी लडकी के लिये प्रस्ताव रख ही दिया और दहेज मे बीस लाख देने का भी प्रस्ताव रख दिया।

गुणवती कहने लगी–"देखिये। पैसे–वैसे की कोई बात नही है। हमे दहेज से कोई लालच नही। लडकी योग्य होनी चाहिए और कृष्णसिह को पसद आनी चाहिए।" "मा जी ! आप विश्वास रखे हमारी सूर्यमुखी पढी–लिखी, सुन्दर और सुशील है।" इस प्रकार कहते हुए आनन्दीलालजी ने सकेत के माध्यम से सूर्यमुखी को हॉल मे आने का सकेत दे दिया था। पहले से ही तैयार सूर्यमुखी ने धीरे–धीरे हॉल मे प्रवेश किया, आकर गुणवती को विनीत प्रणाम किया और एक तरफ खडी हो गई। गुणवती ने सूर्यमुखी से दो–चार बात की तब तक भोजन भी हो गया था। सभी उठ खडे हुए जाने के लिये। सेठ आनन्दीलालजी के मन मे हल–चल हो रही थी कि अब–तक निर्णय के कोई आसार नजर नहीं आए तो वे पूछ ही बैठे रामसिह से "क्यो साहब ! क्या कुछ निर्णय रहा ?"

रामसिह–बोले "देखिये निर्णय तो हम कर देगे, पर पसद नापसद का जहा तक सवाल है, यह कृष्णसिह का विषय है।" जब आनन्दीलालजी ने प्रश्न भरी दृष्टि से कृष्णसिह की ओर देखा तो कृष्णसिह नीची दृष्टि डाले चुप खडा रहा। **"मौन स्वीकृति लक्ष्मणम्"** मान लिया गया। जाते–जाते ही सेठ आनन्दीलालजी ने उसी समय ग्यारह हजार रुपये निकालकर रामसिह के हाथ मे रख दिये, और सबध पक्का कर लिया। दो–चार दिनो मे ज्योतिषी को बतलाकर अगले माह की 20 तारीख को सबध का निर्णय कर लिया गया। बडी जोर–शोर से सेठ आनन्दीलालजी ने विवाह की तैयारिया प्रारम्भ कर दी। बीस तारीख भी सन्निकट आ गई और धूम–धाम से कृष्णसिह का सूर्यमुखी के साथ विवाह भी हो गया। दहेज मे उसे दस लाख नगद और दस लाख जेवरात आदि मिले। कृष्णसिह ने बडी ही सफाई से सारे पैसे–जेवरात अपने कब्जे मे कर लिये। कोई भी मूल्यवान वस्तु उसने गुणवती और रामसिह के हाथो मे नही रहने दी। गुणवती एव रामसिह का परिवार भी अब कृष्णसिह के साथ ही फ्लेट मे रहने लग गया।

रामसिह की पत्नी चन्द्रमुखी अपने नाम के अनुरूप ही चन्द्रमा के समान शीतल और सौम्य थी तो कृष्णसिह की पत्नी सूर्यमुखी भी अपने नाम के अनुसार ही तेज तर्राट स्वार्थी, निष्कर्मण्य थी।

सूर्यमुखी अभी नई–नई होने से घर का सारा काम चन्द्रमुखी ही सभालती थी। सूर्यमुखी को उसने कभी कोई भी काम करने के लिये नहीं कहा। वह जानती थी, यह बडे बाप की बेटी है, काम नहीं करेगी। गुणवती जरूर थोडा बहुत चन्द्रमुखी के काम मे हाथ बटा देती थी। कृष्णसिह तो दस बजते ही कार मे ऑफिस चला जाता तो शाम को आठ बजे ही घर लौटता था। रामसिह के अभी कोई काम नहीं था। इसलिये वह ज्यादातर फ्लेट पर ही रहता था। थोडा बहुत बाहर का काम कर दिया करता था। कुछ दिनो तक गाडी ठीक–ठाक चलती रही। सूर्यमुखी, घर के किसी भी काम मे हाथ नहीं लगाती थी। सवेरे उठते ही उसे बेड टी मिल जाती। उसके बाद स्नानादि कार्यों मे लग जाती तो घटे भर तक नही निपटती। डाइनिग टेबुल पर नाश्ता किया और फिर अपने श्रृगार–प्रसाधन मे लग जाती थी। मन बहलाने के लिये रेडियो सुना करती, टी वी देखा करती या फिर कोई उपन्यास पढकर टाइम बिता देती थी। पर आखिर यह कब तक चलता ?

चन्द्रमुखी को एक दिन कुछ ज्वर हो गया तो गुणवती ने सूर्यमुखी को भोजन बनाने के लिये कह दिया। आज उसे प्रथम बार अहसास हुआ कि अब उसे काम करना होगा।

सूर्यमुखी बोली–"सासूजी भोजन बनाने के लिए कोई नौकरानी क्यो नहीं रख लेते ?

गुणवती ने कहा– "बहू! भोजन तो अपने हाथो से बनाना चाहिये। क्योकि नौकर अच्छा तथा सफाई से भोजन नहीं बना सकते और न ही उनके भोजन मे सरसता ही आ पाती हैं। इसलिये भोजन तो गृहणियो को ही बनाना चाहिये।"

सूर्यमुखी की इच्छा तो नहीं थी कि वह भोजन बनाये, पर नई–नई होने से सासूजी के सामने भी ज्यादा नहीं बोल सकी और अनिच्छा से ही भोजन बनाने बैठ गई। जैसे–तैसे उसने भोजन बनाया। पर उसका मन

आज उद्विग्न था। शाम को कृष्णसिह के आते ही, आज चन्द्रमुखी तो बुखार का बहाना बनाकर सो गई। घर का सारा का सारा काम मेरे ऊपर आ पडा। आपकी माताजी ने भी चन्द्रमुखी का पक्ष खीच लिया और मुझे कहने लगी तुम भोजन बनाओ। आज तो मैंने उनके कहने पर भोजन बना दिया। पर अब मुझसे बार–बार भोजन नही बनेगा। चन्द्रमुखी नही बना सकती तो नौकर रख लीजिए।" सूर्यमुखी की बात को सुनकर कृष्णसिह ने उसे समझाया–"प्रिय–तुम दु खी मत बनो। तुम काम मत करना, भाभी करेगी तो ठीक है– नहीं तो नौकरानी रख दूगा। पर इतनी सी बात के पीछे दु खी होना ठीक नही है।" कृष्णसिह के आश्वासन पर सूर्यमुखी खुश हो गई।

कृष्णसिह सवेरा होते ही माता के पास पहुचा और कहने लगा–"क्या हो गया है, भाभी को, जो कल रसोई नहीं बनाई।" गुणवती ने सोचा कि कृष्णसिह को क्या मालूम कि कल रसोई किसने बनाई ? यह तो ऑफिस था, जरूर सूर्यमुखी ने इसे कहा है, अहो ! कैसी नारी है यह, छोटी सी बात भी इसके पेट मे न टिकी। शादी के बाद एक बार रसोई बनानी पड गई तो जाकर अपने पति से शिकायत कर दी। निश्चय ही यह कुलक्षणा नार है। मन की बात मन मे ही दबाते हुए गुणवती ने कृष्णसिह से कहा–"कल तो रसोई सूर्यमुखी ने ही बनाई थी, क्योकि चन्द्रमुखी को बुखार आ गया था। बुखार की हालत मे वह रसोई नही बना सकती थी, इसलिये सूर्यमुखी को रसोई बनाने के लिये मैंने ही कहा था।"

कृष्णसिह बोला– "मा ! वह अभी नई–नई है, उसे रसोई बनाने का भी इतना अभ्यास नही। भाभी रसोई न बना पावे तो तुम बना लिया करो, परन्तु उसे रसोई बनाने के लिये मत कहा करो।"

कृष्णसिह की बात से गुणवती को बहुत बडा धक्का लगा। सोचने लगी "अहो ! यह अपनी पत्नी के पीछे इतना पागल हो गया है, जो रसोई बनाने के लिये मुझे कह रहा है। सपत्ति और पत्नी के गुमान मे इसका दिमाग फिरता जा रहा है। इन दिनो न तो मुझे प्रणाम करता है, और न रामसिह को ही। और आज तो रसोई बनाने के लिए भी मुझे कह रहा है," पर गुणवती सब बात पी गई, इतना ही बोल पाई "ठीक है।"

सूर्यमुखी के दिन तो प्रसाधन, क्लबो मे और पिक्चरो मे ही बीतते जा रहे थे, घर का सारा वजन चन्द्रमुखी और गुणवती पर ही पड गया। कृष्णसिह का गुमान भी बढता जा रहा था, अब उसकी दृष्टि मे गुणवती, रामसिह और चन्द्रमुखी की इज्जत एक सम्मानित नौकर की तरह रह गयी थी, जो कि घर का कामकाज करते थे।

एक दिन सूर्यमुखी रात्रि के समय रामसिह के बेडरुम की ओर से अपनें बेड–रूम मे जा रही थी, तब उसके कानो मे कुछ खुसर–फुसर की आवाज सुनाई दी, तो उसका मन सुनने को हुआ। वह धीरे से दरवाजे के बाहर ही कान लगाकर सुनने लगी। चन्द्रमुखी अपने पति रामसिह को कह रही थी–"प्राणेश्वर ! इस फ्लेट से तो अपनी चेम्बूर वाली खोली ही अच्छी है। जहा अपन सम्मान के साथ तो रहते थे, यह तो बडे घराने का रण्डापा है। जहा सब कुछ मिलता है, पर पति नही, वैसे ही यहा पर भी रहने को फ्लेट आदि सुविधा तो है, पर इज्जत नहीं। आपका भाई कृष्णसिह जिसे पैसो का इतना अभिमान चढ आया है कि वह मुझे तो क्या आपको और सासूजी–गुणवती जी को भी कुछ नही समझता। उनकी दृष्टि मे अपन एक नौकर से ज्यादा कुछ नही हैं। सच पूछा जाय तो ऐसी जगह मेरा तो मन घुटता जा रहा है। इससे तो मुझे उस खोली मे रहना बहुत पसद है। सूर्यमुखी काम तो नहीं करती है सो नहीं करती। पर समय–समय पर अपने धन की ऐठ भी मारती रहती है। अतुल–अपूर्व को उसने कभी प्यार–स्नेह की दृष्टि से नही देखा, सदा घृणा की दृष्टि से ही देखा है।

रामसिह भी बोला–"बात तो तुम्हारी सत्य है। पर यहा से अब निकला कैसे जाए ? यहा से जाये तो अपने को तो क्या कृष्णसिह की इज्जत जाती है। इसकी इज्ज्त के लिये अपने को कितने–कितने नाटक खेलने पडे हैं।"

"पर अब कृष्णसिह का काम निकल गया तो उसका ध्यान हमारी तरफ से एकदम हट गया," चन्द्रमुखी ने कहा।

"मैं उसे समझाने की कोशिश करूगा।" रामसिह बोला। सूर्यमुखी के दिमाग मे यह वार्तालाप चक्र की तरह तेजी से घूमने लगा। वह सोचने

लगी–क्या ये लोग चेम्बूर की गदी खोली मे रहने वाले हैं ? मैंने तो सुना था कि ये रायगढ के रईस करोडो के मालिक रायसिह के पुत्र हैं ? क्या मेरे साथ बहुत बडा छल हुआ है वह सीधी अपने रूम मे पहुची और धम से बेड पर पड गई।"

"कृष्णसिह ने मेरे पिता के साथ बहुत बडा छल करके शादी की है। अपने को न मालूम कितना बडा रईस बतलाया था इन्होने, मेरे पिता तो बस इनके पीछे पागल हो गये थे कि ऐसा पैसे वाला और ऐसा लडका मिलना बहुत मुश्किल है। पर आज जो कुछ भी मैंने सुना उससे तो एकदम स्पष्ट है कि ये तो एकदम गरीब घराने के हैं"। सूर्यमुखी मन ही मन सकल्प विकल्प करती रही।

कृष्णसिह ऑफिस से आकर जब अपने रूम मे गया तो सूर्यमुखी को इस कदर पडे देखकर उसके पास गया और बोला–"प्रिय ! क्या बात है, आज सुस्त क्यो हो। कोई दर्द–वर्द हो तो डॉक्टर को दिखला दू। घर मे रहते–रहते ऊब आ गई हो तो चलो थोडा घूम आये। ऐसे चुपचाप पडी रहोगी तो बहुत जल्द ही बीमार हो जाओगी।"

कृष्णसिह की प्यार भरी वाणी को सुनकर उसे लगने लगा "मेरे पति तो वस्तुत स्मार्ट और होशियार ही हैं, पर हो सकता है ये गरीब रहे हो, अपनी इज्जत को ढकने के लिए इन्होने ऐसा नाटक खेला हो। पर जब ये लोग मुझे देखने आये थे तब तो रायगढ से ही गाडी मे बैठकर आये थे। फिर चेम्बूर कहा से रहने लगे। जेठजी एव सासूजी ने कपडे आदि भी ऐसे पहने थे, जैसे कोई बहुत बडे रईस हो। आखिर रहस्य क्या है ?" इतने मे कृष्णसिह फिर बोला–"चलो–चलो उठो थोडा घूम आये।" सूर्यमुखी ने सोचा "बाहर चलकर ही पूछना अच्छा है, यहा तो मेरी तरह दूसरा भी कोई सुन सकता है।" वह उठ गई और थोडा सा मेकअप कर पति के साथ फ्लेट से बाहर आ कार मे जा बैठी। कृष्णसिह खुद कार ड्राइव करने लगा। थोडी देर के बाद जुहू पर जा पहुचे। गाडी को लॉक कर दोनो जुहू पर घूमने लगे। सामान्य बातचीत होती रही पर सूर्यमुखी का मन तो उबल रहा था, सब कुछ कहने के लिये। आखिर वे दोनो जुहू किनारे हवा खाने के लिये बैठे, तब सूर्यमुखी कहने लगी–"आपने मेरे

पिता के साथ बहुत बडा धोखा किया है।"

चौककर कृष्णसिह एकदम बोला–"क्या हो गया है तुम्हे ? कैसी बात कर रही हो तुम ? कौन सा धोखा दिया मैंने उनको ?"

सूर्यमुखी–"आज मुझे सब कुछ मालूम पड गया है। अब आप मुझसे छिपाने की कोशिश न करे। आपका परिवार तो चेम्बूर की गदी खोली मे रहने वाला था। यह फ्लेट भी आपका नहीं, मिल मालिक का है।"

"अरे क्या बकती हो तुम ? किसने बरगलाया है ? तुमको, यह सत्य है कि मैं रायगढ के रईस रायसिह का पुत्र हू, आज भी रायगढ मे हमारा बहुत बडा महल है।" कृष्णसिह थोडा तेजी से बोल पडा।

सूर्यमुखी–"देखिये, तेजी मे आने की आवश्यकता नहीं। मैं जो कुछ कह रही हू ठोस प्रमाण के आधार पर कह रही हू। होगे आप रईसजादे के पुत्र पर चेम्बूर की खोली मे क्यो रहते थे ? आज भी आपकी खोली है वहा पर।"

कृष्णसिह समझ गया, जरूर इसे कुछ न कुछ सुराख मिल ही गया है, अब यह समझ नही सकती।

तब कृष्णसिह कुछ शात होता हुआ बोला–"सूर्यमुखी ऐसा कुछ नहीं है। यह तो जब हम यहा आए थे, तब कोई परिचित नहीं था, इसलिये चेम्बूर की खोली मे रहे थे। दूसरी बात सम्पत्ति तो हमारे पास मे थी ही, हा बाद मे डाकू डाका डालकर ले गये थे पर सम्पत्ति तो थी ही। अब इन बातो से तुमको क्या करना है। तुम तो बहुत आराम से रहो ना। तुम्हारे किसी चीज की कमी हो तो बोलो।"

सूर्यमुखी समझ गयी कि बात मे सच्चाई जरुर है। उसने ठानली कैसे भी हो, अब कृष्णसिह से सारी बात खुलाकर जानना है। वह कृष्णसिह को बहुत प्यार और स्नेह देते हुए बोली–" आप बहकते क्यो हो। अब तो मैं आपकी हो गई हू। यह घर ही मेरा घर है। आप ही के साथ रहने वाली हू। फिर इस घर की बात मेरे से ही छुपाई जाय तो क्या मैं पराई हू ?" कृष्णसिह बोला–नहीं–नहीं तुम तो इस घर की सदस्या हो। " तो फिर आप मुझे सारी बात सुनाओ। आधी–अधूरी बातो से अनेक

भ्रातिया रह जाती है।" सूर्यमुखी बीच मे ही बोली।

कृष्णसिह त्रियाचरित्र समझ नहीं सका, और उसने घर की सारी बाते सत्य–सत्य रूप मे सूर्यमखी को बतला दी।

अब क्या था । घर मे सूर्यमुखी के व्यवहार मे और भी तेजी से परिवर्तन आ गया। क्योकि रईसजादी तो वही थी ना, चन्द्रमुखी तो गरीब घराने की लडकी थी और दहेज भी कुछ नही लेकर आयी थी, जबकि सूर्यमुखी के पिता ने बीस लाख का दहेज दिया था। अब तो सूर्यमुखी का नूर सातवे आसमान पर चढने लगा। सीधे मुह तो वह किसी से बात ही नहीं करती थी। अतुल–अपूर्व कभी उसके पास चले जाते तो वह उन्हे दुत्कार देती और कभी–कभी तो थप्पड मारकर भगा देती थी।

चन्द्रमुखी को भी पर्दे की आड मे कुछ न कुछ सुना दिया करती थी। "गन्दी खोली मे रहने वाले अब फ्लेट मे मौज मार रहे हैं। काम भी तो कुछ करना पडता नहीं है। बाप ने कुछ दिया नहीं तो भी यहा अपना बडप्पन बतलाती है।" ऐसी अनेक जली–कटी बाते चन्द्रमुखी को सुना दिया करती थी। फिर भी सौम्यशीला चन्द्रमुखी सब पचाकर चल रही थी। अतुल नव वर्ष का और अपूर्व सात वर्ष का हो चुका था। दोनो इगलिश मीडियम स्कूल मे पढने जाया करते थे। दोनो ही स्मार्ट एव पढने मे तेज थे। चन्द्रमुखी सदा इन्हे सदाचार एव विनम्रता की शिक्षा देती थी। दोनो लडके प्रात उठते ही प्रभु स्मरण कर सभी बडो को प्रणाम करते थे। आण्टी सूर्यमुखी भले उन्हे घृणा की दृष्टि से देखती। कुछ अण्ट–सण्ट सुना भी देती पर चन्द्रमुखी की सीख थी कि वे कुछ भी कहे, करे पर तुम्हारे से तो बडी हैं, तुम्हे तो प्रणाम करना ही है, इसलिये दोनो बच्चे सूर्यमुखी को भी बराबर प्रणाम करने उसके रूम मे जाया करते थे।

सूर्यमुखी, किसी न किसी बात को लेकर रोज अपने पति कृष्णसिह को इन लोगो के विपक्ष मे भडकाया करती थी। कभी कहती कि "जेठानी को सामान रखने का बिल्कुल सलीका नहीं है, नई की नई विदेश की काच की प्लेट फोड डाली।" तो कभी कहती "सासूजी ने डाईनिग टेबुल खराब कर डाली। तो कभी कहती अतुल–अपूर्व ने धक्के मे कुर्सी तोड डाली।" इस प्रकार कुछ न कुछ वह कृष्णसिह को कहती रहती थी। कृष्णसिह भी

पत्नी की बातो मे आकर कभी माँ को तो कभी भाभी चन्द्रमुखी को सुना दिया करता था "यह फ्लेट है खोली नहीं, जरा सफाई से रहा करो, और अतुल–अपूर्व को तो डाट–फटकार एव मार भी दिया करता था। रामसिह का दिल यह सब सुनकर अत्यन्त दु खी हो जाता। जिस कृष्णसिह के पीछे अपने आपको बरबाद कर डाला, आज वह उसी के परिवार को इस कदर फटकार रहा है। पर रामसिह मन–मारकर रह जाता।

दिन–प्रतिदिन भाई–भाई मे दूरी बढती जा रही थी, वे एक घर मे रहकर भी मन से कोसो दूर थे। आखिर कब तक यह चलता ? एक दिन वह भी आ गया जिसने भाई–भाई के चल रहे कच्चे रिश्ते तो तोड डाला।

अतुल और अपूर्व बाहर के रूम मे बैठे एक–दूसरे से मस्ती कर रहे थे मस्ती ही मस्ती मे अतुल ने अपूर्व को धक्का दिया तो अपूर्व धक्के खाकर रूम मे पडी कृष्ण की मूर्ति से टकराता हुआ एक तरफ जा पडा। कृष्ण की मूर्ति मिट्टी की थी, अत गिरते ही टुकडो मे बदल गयी। मूर्ति को टूटती देख दोनो भाईयो की मस्ती जाती रही और भय के मारे घबराने लगे अब क्या होगा। आज तो जोरदार डाट पडेगी। अकल क्या कहेगे ? मम्मी–पापा क्या कहेगे ? इसी घबराहट मे वे बाहर निकले तो बाहर रामसिह खडे थे, उन्होने दोनो को घबराते देखा तो समझ गए, कोई विशेष बात हुई है, उन्होने रूम मे जाकर देखा तो बच्चो की घबराहट का कारण समझ मे आ गया, कृष्ण की मूर्ति टूटी हुई पडी थी। वे बाहर आये, दोनो को डाटने लगे। "यह क्या तरीका है मस्ती करने का ? तुम्हारी मस्ती से कितना नुकसान हो गया।" रामसिह ने भी डाटा तो चन्द्रमुखी ने भी बच्चो को खूब डाटा–फटकारा, पर जो हो चुका था, वह तो वापस आने वाला नहीं है। मूर्ति फूट गई तो अब डाटने से तो वह साबत होने वाली नहीं थी।

जब सूर्यमुखी को ज्ञात हुआ कि अतुल–अपूर्व ने मस्ती–मस्ती मे श्री कृष्ण की मूर्ति तोड डाली तो उसे झगडा करने का आज अच्छा अवसर हाथ लग गया। क्योकि कृष्णसिह, श्रीकृष्ण का पक्का भक्त है। रोज सवेरे कृष्ण की मूर्ति के सामने जाकर वह श्रीकृष्ण की भाव–भक्ति के साथ उपासना करता और उसके बाद अन्न–जल मुह मे डालता है। जिस मूर्ति के सामने कृष्णसिह, श्रीकृष्ण की उपासना करता था वही मूर्ति तो

अतुल–अपूर्व द्वारा टूटी थी। सूर्यमुखी जानती थी कि मूर्ति को टूटी देखकर कृष्णसिह अवश्य पूछेगे कि यह किसने तोडी ? और तोडने वाले पर बिफर पडेगे। क्यो न आज कृष्णसिह को इनके विपक्ष मे भडकाया जाय। जिससे वे इनको घर से बाहर निकाल दे। इनके घर से निकलने पर तो घर मे मेरा ही राज्य रहेगा। अभी सासू–जेठानी के रहते हुए मुझे कोई भी काम करने मे सकोच होता है। इनके घर से निकलने पर सारा पिण्ड ही छूट जाएगा।

रात्रि को आठ बजे कृष्णसिह फ्लेट मे आया तो सभी गमगीन नजर आ रहे थे ?"क्या बात है ?" पर कृष्णसिह ने किसी को पूछा नहीं और न ही किसी ने उसे बतलाया। वह कपडे बदलने के लिए सीधा अपने बेडरूम मे चला गया। वहा सूर्यमुखी तो पहले से ही उसका इन्तजार कर रही थी। सूर्यमुखी ने कृष्णसिह को दूसरे कपडे दिये, वह उन्हे लेकर पहनने लगा–इसी बीच कृष्णसिह ने सूर्यमुखी से पूछा–"आज क्या बात है, घर के सभी लोग सूस्त क्यो नजर आ रहे हैं, कहीं कोई गडबड लगती है।"

सूर्यमुखी ने कहा– "आप गडबडी की पूछते हैं तो बहुत बडी गडबड हो गई है। वह यदि आपको मालूम पडेगी तो आपको बहुत दु ख होगा। इसलिये आप उस गडबड को न जाने तो ही बहुत अच्छा है।"

कृष्णसिह बोला–"ऐसी क्या गडबड हो गई है जिसे सुनकर मुझे दु ख होगा, तुम बतलाओ ना ? मैं जरूर उसे सुनना चाहता हू, नहीं तो मैं चैन से नहीं रह सकूगा।"

"क्या बताऊ मैं, मुझे खुद को बहुत दु ख हो रहा है। आपके भाई साहब के लडके बहुत ही उद्दण्ड हैं। वे पूरे फ्लेट मे इधर–उधर छलागे मारते रहते हैं, यह कोई खेल क्षेत्र तो है नहीं। इनकी दौड–धूप से कई बार गिलास, कप–प्लेट, आदि टूट गये, काफी नुकसान भी हुआ, लेकिन आपके भाई साहब ने उन्हे कूदने–फादने से नहीं रोका। मैंने भी देखा बच्चे हैं, कोई बात नहीं धीरे–धीरे ठीक हो जाएगे। इसलिये मैंने तो आपको कभी कोई शिकायत नही की। किन्तु आज तो उन बच्चो ने गजब ढा दिया है।" कृष्णसिह बीच मे ही बोल पडा–"आखिर क्या बात है ? क्या

किया है उन बच्चो ने ? बता तो सही।"

सूर्यमुखी–"और क्या करते ! इधर–उधर कूदते–फादते पहुच गये हॉल मे और वहा पर धक्का–धूम करते हुए भगवान कृष्ण की मूर्ति के लगाया एक धक्का और उसे धरती पर पटक कर दो टुकडे कर दिये।"

कृष्णसिह–" हैं ! क्या कृष्ण की मूर्ति को उन सूअरो ने तोड डाला।" कृष्णसिह के शब्द कठोर होते चले गये।

सूर्यमुखी–"तो फिर मैं क्या बतला रही थी। मैंने कहा था ना आप दु खी हो जाएगे घटना सुनकर। आपको विश्वास न हो तो वहा जाकर देख लीजिये। आपको मूर्ति के दो टुकडे देखने को मिल जाएगे।"

कृष्णसिह झपटता हुआ, वहा पर पहुचा तो उसे सच्चाई मे कृष्ण की मूर्ति के दो टुकडे देखने को मिले। मूर्ति के दो टुकडे देखते ही उसका गुस्सा सातवे आसमान पर चढ गया। बस कृष्णसिह गुस्से मे पाव पटकता हुआ अतुल–अपूर्व के पास पहुचा और उनके बाल पकडते हुए बोला–"अरे ! कमीनो ! यह कोई खेलने की जगह थी जो धमा–चौकडी मचा रहे थे। भगवान की मूर्ति को तोड डाला, तुम लोगो ने।" बस मुह चलाने के साथ ही कृष्णसिह के हाथ भी बराबर चलने लगे। वह तडातड–तडातड उन बच्चो को मारने लगा। रामसिह और चन्द्रमुखी मूक बने हुए यह नाटक देख रहे थे। क्योकि वे जानते थे कि बच्चो की गलती है तो मार भी पडेगी ही। पर गुणवती से यह सब देखा नहीं गया। वह बीच मे आई और कृष्णसिह से बच्चो को छुडवाती हुई बोली। "यह क्या कर रहा है ?" इन फूल सरीखे बच्चो को क्यो मार रहा है ? हुआ तो यही ना कि मूर्ति टूट गई तो दूसरी ले आना पर उसके टूट जाने से गुस्से मे इन्हे मारना तो इसका हल नहीं है।"

कृष्णसिह का गुस्सा गुणवती के ऐसा कहने से और भी अधिक भडक गया, वह चिल्लाया–"तुम लोगो के कारण ही बच्चे बिगडते जा रहे हैं। इन्हे कभी फ्लेटो मे रहना भी आया है। उन गदी खोलियो मे रहे हैं, उनके दिमागो मे वह गदगी भरी हुई है। इसी कारण यहा फ्लेटो मे भी गदगी फैला रहे हैं। सारा फ्लेट तहस–नहस कर दिया, भगवान कृष्ण की मूर्ति तोड डाली, आज इनकी खबर लिये बिना छोडने वाला नहीं।" बात

बिगडती देखकर रामसिह ने कृष्णसिह को समझाने की दृष्टि से बहुत शात भाव से कहा–"देखो कृष्णसिह। वस्तुत इन दोनो से गलती हो गई है, क्योकि बच्चो का स्वभाव सहज ही चचल होता है। इन्होने चापल्य वश ऐसा कर दिया है, जिससे श्री कृष्ण की मूर्ति टूट गई। बच्चो ने जो कुछ किया वह अनजान मे किया है, पर तुम्हारी भावनाओ को ठेस पहुचाने के लिये कुछ नहीं किया है। और गल्ती तो बडे–बडे इन्सानो से भी हो जाती है, अत बच्चो को इस नादानी को लेकर तुम्हे इतना उग्र नहीं बनना चाहिए। प्रेम से भी तो इन्हे समझाया जा सकता है।"

रामसिह के इन शब्दो ने आग मे घी का काम किया कृष्णसिह और अधिक भभक गया चिल्लाया–"क्या तुम पैसे कमाते हो ? दिन भर यहा पडे रहते हो और खाने को सबको चाहिये। और तुम लोग खाते तो जो खाते ही हो और नुकसान भी कर देते हो। तुम लोगो ने खोलियो मे रहना और टीन के बर्तनो मे खाना सीखा है, तुम्हे क्या रहना आए ऐसे फ्लेटो मे। भगवान की मूर्ति तोड दी, तुम्हारे छोकरो ने और ऊपर से तुम इनका पक्ष ले रहे हो, ऐसे भाई भतीजे मुझे नहीं चाहिए।" कृष्णसिह क्या मालूम क्या–क्या बकता चला गया।

कृष्णसिह के इन कटुबाणो से रामसिह को कितना दु ख हुआ होगा, इसकी अभिव्यक्ति नहीं दी जा सकती। रामसिह सोचने लगा–"अरे यह तो जैसे हमको समझ रहा है हम हराम का खाना खा रहे हैं। अपने को भारभूत समझे हुए है। इसका व्यवहार तो रोज ही उखडता जा रहा था पर आज तो यह मन का सारा गुबार उगल पडा। अब इसके घर मे हमे नहीं रहना चाहिये। आज भी मुझ मे परिवार का पेट भरने जितनी तो हिम्मत है। हम तो इसकी इज्जत न बिगडे, इसके लिये यहा रुके हुए थे जब इसे अपनी इज्जत की भी परवाह नहीं तो हम यहा फिर किसके लिये रहे। बिना सम्मान के मोहन भोग भी जहर के तुल्य है।"

रामसिह ने कृष्णसिह का कुछ भी प्रतिवाद नहीं किया और न ही उसने जो सेवाए कृष्णसिह के लिये की थी, उसकी दुहाई ही दी। रामसिह ने तो उसे अपना कर्त्तव्य समझा था। वह चुपचाप कृष्णसिह के पास से हटकर अपने रूम मे चला गया। चन्द्रमुखी उससे पहले ही रूम मे पहुच गई थी। दोनो के चेहरे पर बहुत खेद जनक भाव छाए थे।

कुछ क्षणो की नीरव शाति के बाद मौन को तोडते हुए रामसिंह ने कहा–"प्रिये अब यहा रहने की स्थिति नहीं है इस फ्लेट से तो अपनी खोली बहुत अच्छी है।" चन्द्रमुखी–"प्राणनाथ ! मैं तो पहले से ही चाह रही थी, पूर्व मे भी कहा था और अब भी मेरा यही कहना है कि हम यहा से चले चले। सम्मान के साथ खुद की कमाई की सूखी रोटी भी मीठी लगती है। शाति के साथ तो रहेगे और बच्चो को भी मार तो नहीं खानी पडेगी। चलिये ! अब तैयारी कीजिये। और आज शाम को ही अपन यहा से चले चले। अब यहा का अन्न–जल भी खाना श्रेयस्कर नहीं है।"

रामसिह और चन्द्रमुखी ने सामान समेटा। उनके पास था ही क्या। कपडे भी जो कृष्णसिह ने बनाए थे, उन कपडो को लेना दोनो ने उचित नहीं समझा। बस वे पुराने कपडो को लेकर अतुल और अपूर्व दोनो बच्चो के साथ रूम से बाहर निकलकर हॉल मे चले आए।

मॉ गुणवती के दु ख की भी आज कोई सीमा नही थी। कृष्णसिह ने न गुणवती का लिहाज रखा था और न ही रामसिह का। पैसे के मद मे चूर हो वह दोनो को ही अनर्गल बोलता चला गया था। आज गुणवती को अतीत की घटनाए याद आने लगी। क्या–क्या नही किया था इसके लिये। इन बच्चो के पीछे सपत्ति छोडी, गाव छोडा और रामसिह ने तो कृष्णसिह के लिये अपनी जिन्दगी लगा दी, पर कृष्णसिह गद्दार निकला और इस प्रकार मुह फट बोल रहा है !

गुणवती विचार मग्न ही थी कि इसी बीच उसने रामसिह को परिवार सहित हॉल मे आते देखा तो बोली–"अरे रामसिह ! कहा चल दिये ?" जवाब दिया रामसिह ने–"मा ! जिस घर मे सम्मान न हो, जहा हम बोझ माने जाते हो ऐसे घर से तो मेरी वह खोली अच्छी, जहा मैं शाति से जी सकू। इसलिये मैं अब इस घर को सदा के लिये छोडकर परिवार सहित खोली मे जा रहा हू। अगर तुम भी चलना चाहो तो मैं सहर्ष ले जाने को तैयार हू।"

गुणवती ने सोचा–" अब मुझे भी ऐसे कपूत बेटे के साथ नहीं रहना है। भले इसके पास क्यो न सम्पति हो, पर इज्जत नहीं वहा रहकर क्या करना ?" गुणवती को दोनो बेटो के रूपो पर बडा आश्चर्य हो रहा था।

कहा रामसिह और कहा कृष्णसिह। एक दिन है तो दूसरा रात। एक पानी तो दूसरा आग। एक आम है तो दूसरा कबीट। एक अमृत है तो दूसरा जहर। गुणवती बोली–"पुत्र मुझे यह फ्लेट और यह झूठी शान–शौकत नही चाहिये। मैं भी तुम्हारे साथ उस पवित्र खोली मे चलने के लिए तैयार हू। जहा ईमान और धर्म रहते हैं। वहीं मेरा भी निवास रहेगा।" मॉ गुणवती भी रामसिह के साथ चल दी, ज्यो ही फ्लेट के बाहर गुणवती ने पैर रखा कि अति दु ख से उसे हार्टअटैक हो गया और वह घडाम से नीचे गिर पडी। रामसिह ने तुरन्त उसे सभाला और अपने घुटने पर सुलाया तो लगा मॉ बेहोश हो चुकी है। चन्द्रमुखी पास वाले फ्लेट से तुरन्त पानी ले आई। रामसिह उस पर पानी का छिडकाव करने लगा। कुछ ही देर मे गुणवती ने आखे खोल दी अपने को रामसिह की गोदी मे पाकर बडी प्रसन्नता की अनुभूति हुई। उसने अन्त मे यही कहा–"पुत्र । अब मेरी जिन्दगी के अन्तिम क्षण आ चुके हैं। अब मैं अधिक जीने वाली नहीं हू। तुमने मेरी जो सेवा की है वह भूल नहीं सकती। मेरा अन्तिम आशीर्वाद यही है कि तुम्हारा जीवन सुखमय बीते। दुनिया मे तुम्हारा नाम रोशन हो। खानदान की इज्जत तुम्हारे हाथ कहते–कहते गुणवती के शब्द टूटते चले गए।

रामसिह चिल्लाया–"मॉ । मॉ । मॉ । ऐसा नहीं हो सकता, तुम मुझे छोडकर नहीं जा सकती। हम गरीब हैं तो क्या हो गया ? पर तुम्हारा निर्वाह करने जितना बल तो है मेरे मे।" पर टूटी की बूटी नहीं। गुणवती ने सदा के लिये आखे मूद ली थीं।

रामसिह के पास एक पैसा भी नहीं था। जैसे–तैसे आस–पडोस से उसने पैसे उधार लिये और श्मशान मे जाकर मॉ का अन्तिम सस्कार किया।

गुणवती के इस प्रकार फ्लेट के बाहर मर जाने से बिल्डिग के लोगो की भीड जमा हो गई थी। जब रामसिह, गुणवती के शव को ले गया तो लोगो ने कृष्णसिह से पूछा–"साहब । ये कौन लोग थे ?" इस अप्रत्याशित प्रश्न से कृष्णसिह सकपका गया। सोचा क्या जवाब दू इन्हे ? यह कहू कि मेरी मॉ और भाई थे, तो मेरी इज्जत मिट्टी मे मिल जाएगी।

कृष्णसिह ने बात बनाई, बोला—"ये लोग मेरे फ्लेट में काम करने आए थे। चैम्बूर की गन्दी खोली मे रहते थे, मैं किसी काम से उधर गया था, वहा इन लोगो ने मुझे कुछ काम देने के लिए कहा था मैंने सोचा हम घर मे दो ही हैं। अगर ये आ जाए तो मिसेज का मन भी लग जाएगा और काम भी सम्भाल लेगे। पर आखिर है तो गन्दी बस्ती के लोग ही ना। कई बार इन्होने छोटी—मोटी चोरी करी तो भी मैंने सहन कर लिया पर आज तो ये कमाल ही करने जा रहे थे। मिसेज किसी काम से बाहर गई थी और ये मेरे बेडरूम मे पहुच गए अलमारी की चाबी खोज कर निकाली, अलमारी भी खोल चुके थे, उसमे पडी नोटो की गड्डिया जो कल शाम को ही मैं ऑफिस से लाया था। बैंक बन्द हो जाने से घर ही ले आया था। उन रुपयो को ही ये उठाने जा रहे थे कि इतने मे मिसेज पहुच गई और उसने रगे हाथो इन्हे पकड लिया, फिर तो ये बहुत घबराए, माफी मागने लगे। इन्हे भय लगने लगा कि कही हमे पुलिस मे नहीं दे दे। पर मैंने इन्हे कुछ नही कहा, बस यही कहा कि अब तुम मेरे घर रहने लायक नहीं हो, चुपचाप यहॉ से चले जाओ। ये सब मेरे फ्लेट से निकले ही थे कि फ्लेट के बाहर इसकी बुढिया मॉ गिर पडी और खत्म हो गई इसका मैं क्या कर सकता हू ?

सब लोग कृष्णसिह की घटना को सच्ची मानकर अपने फ्लेटो में चले गए।

वाह रे स्वार्थ ! आज मॉ और भाई भी पराए हो गए। जिनके बल पर जो पला था। वह उन्हे नौकर, चोर और लुटेरा बतलाता है। मॉ के मर जाने पर भी वह उसके पास नहीं जा सका। दौलत ने कृष्णसिह के मन की आत्मीयता ही सुखाली थी। भाई—भाई का प्रेम खत्म हो चुका था। **मॉ-बेटे का स्नेह दौलत के नीचे दब चुका था।**

सूर्यमुखी की योजना शत—प्रतिशत सार्थक हो गई थी। स्वय कृष्णसिह ने ही परिवार वालो को घर से बाहर निकाल दिया था। अब तो उसे किसी प्रकार का डर नही रह गया था, सारे फ्लेट मे उसका स्वच्छद—अधिकार राज्य हो गया।

❑

(11)

रामसिह ने अपनी भार–वाहन लकडी की गाडी सम्भाली और मजदूरी करने की तैयारी करने लगा। पर लगभग एक वर्ष हो जाने से गाडी भी खराब हो चुकी थी। रामसिह के पास उसे भी ठीक कराने के लिए पैसा नहीं था। पर आसपास के लोग भले थे। सुख–दु ख मे काम आने वाले थे। उन्होने रामसिह को गाडी ठीक कराने के लिये पैसे दिये, दो चार दिन की खाने की सामग्री भी। रामसिह अब पहले की ही तरह गाडी चलाने लगा। जो कुछ भी पैसा लोगो से उसने उधार लिया था सबसे पहले उसे चुकाया। और जैसे–तैसे घर खर्च चलाने लगा। अतुल और अपूर्व की पढाई भी चल रही थी। पर कहते है–"दुबले के दो असाढ" कहावत के अनुसार रामसिह के साथ एक ऐसी ही दुर्घटना घट गई। एक दिन रामसिह गाडी चला रहा था सामने से एक ट्रक आई। ड्राइवर कुछ पिए हुआ था, उससे स्टेयरिंग सम्भल नहीं सकी और ट्रक रामसिह की गाडी से जा टकराई। गाडी के दो टुकडे हुए ही साथ ही रामसिह के पैर मे गहरी चोट लगी। उसे हास्पिटल पहुचाया गया। फ्रेक्चर हो चुका था। पक्का पट्टा बाध दिया। अब उससे कोई भी काम नहीं हो सकता था। बस खोली मे एक खाट पर पडा रहता। घर मे कोई अर्जित सम्पत्ति तो थी नहीं कि जिससे बिना कमाए भी घर खर्च चलाया जा सके। चन्द्रमुखी सोचने लगी–"अब क्या किया जाय," अतुल 14 वर्ष का हो चुका था और अपूर्व 11 वर्ष का था। अतुल ने चन्द्रमुखी से कहा–मम्मी ! घर की परिस्थिति को देखते हुए अब मैं ज्यादा पढ नहीं सकता। घर का खर्च चलाना पहले आवश्यक है। मैं भी मजदूरी करने योग्य हो गया हू। अब मजदूरी करके पैसे कमाऊगा।" पिता की काष्ठ की गाडी तो टूट चुकी थी। इसलिये अतुल ने पास के घर से 25 रुपये उधार लिये और उससे बूट–पॉलिश करने की डिबिया एव थोडी–बहुत आवश्यक सामग्री खरीद ली।

जिसे लेकर अब वह ऑफिसो के बाहर पहुचने लगा। और अत्यन्त ही सम्मान के साथ ऑफिसरो से कहता–"साहब क्या आपके बूट–पॉलिश कर दू ?" अतुल की सम्मान भरी वाणी मे कुछ ऐसा जादू था कि लोग उसे मना नहीं करते। अतुल भी बहुत सफाई एव ईमानदारी के साथ

पॉलिश करता था, शूज चमक उठते। ऑफिसर खुश होकर उसे पैसे दे देते थे और कह देते कि अब रोज तुम ही बूट पॉलिश कर दिया करो। एक बार जो भी उससे बूट पॉलिश करवा लेता फिर दूसरो से नहीं करवाना चाहता। इस प्रकार अतुल दिन भर मे दस–पन्द्रह रुपये कमाने लगा। पर घर का खर्च तो प्रतिदिन का 20 से 25 रुपये था। इधर रामसिह का इलाज भी करवाना था। इसलिये चन्द्रमुखी ने भी कुछ न कुछ काम करने की सोची और वह भी दूरस्थ फ्लेटो मे पहुच गई और महिलाओं से काम की याचना करने लगी। महिलाओ ने शरीफ औरत देखकर एक ने कहा "तुम रोज मेरे यहा कपडे धो दिया करो। तुम्हे सौ रुपया महीना दे देगे।" एक ने कहा मेरे यहा बर्तन साफ कर दिया करो, मैं भी सौ रुपये महीना दे दूगी।" एक ने कहा कि "फ्लेट का कचरा निकाल कर रोज गर्म पानी से साफी लगा दोगी तो मैं तुम्हे सौ रुपये मासिक दूगी" तो चौथी ने कहा कि शाम को आठ बजे आकर मेरे यहा भोजन बना दिया करो मैं भी सौ रुपये महीना दूगी।"

चन्द्रमुखी ने चारो ही बहिनो के काम की हा भर ली। अब चन्द्रमुखी प्रतिदिन स्फूर्ति के साथ अपने घर का काम निपटा कर फ्लेटो मे काम करने जाने लगी। इस प्रकार चार सौ रुपये उसे और 400 रुपये अतुल को मासिक मिलने लगे। आठ सौ रुपये से घर का खर्च चलने लगा। अपूर्व की पढाई बराबर जारी रखी गई। समय बडी तेज गति से दौडता चला जा रहा था। इधर कृष्णसिह भी समय की गति के साथ बढता जा रहा था। दो साल मे उसके पास अच्छे पैसा जमा हो गए थे। कृष्णसिह ने बैंक से भी लोन ले ली और एक करोड रुपये मे बिक रही कपडे की मिल को खरीद ली। उसका नाम कृष्णसिह मिल्स लिमिटेड रख दिया। अब वह नौकरी को छोडकर अपनी मिल को सम्भालने लगा। दिमाग तो था ही और परिश्रम भी पूरा करता, परिणाम स्वरूप प्रथम वर्ष मे ही पचास लाख रुपये की इन्कम हुई। बाद मे तो वह कमाता ही गया और थोडे ही अरसे मे करोडपति बन बैठा। अब तो कृष्णसिह दादर से भी हटकर बालकेश्वर मे–चन्द्रप्रकाश बिल्डिग–के छठे माले पर पचास लाख की लागत के फ्लेट नम्बर 57 मे ऐश करने लगा। कृष्णसिह के भी एक लडका और एक लडकी का जन्म हुआ। लडके का नाम राजेश और

लडकी का नाम सावित्री रखा गया। कृष्णसिह उनकी परवरिश किसी शहजादे से कम नहीं करता था। खाने–पीने की और घूमने की कोई कमी नहीं थी। हर प्रकार के आधुनिक साधन कृष्णसिह के पास थे, पर रामसिह के परिवार के दु खो का अन्त नहीं हुआ था। रामसिह का पैर तो दो महीने मे ठीक हो गया पर कमजोरी इतनी आ चुकी थी कि उससे उठा–बैठा भी नहीं जाता था। तब काम तो किया ही नहीं जा सकता था। चन्द्रमुखी और अतुल ही बराबर काम करते थे। एक दिन फिर एक दर्दनाक घटना घटित हुई। अतुल हाथ मे रुपये लेकर पिता के लिये दवा लेने जा रहा था और रास्ते मे मारुति कार से टकरा गया। उसे अस्पताल ले जाया गया और घर पर सूचना दी तो चन्द्रमुखी तो फ्लेटो मे काम करने गई हुई थी, रामसिह पलग पर लेटे थे। अपूर्व स्कूल जाने की तैयारी कर रहा था। आगतुक ने ये समाचार सीधे अपूर्व को ही जाकर दिये।

यद्यपि अपूर्व बच्चा था, फिर भी उसमे गजब का साहस एव विकसित माइण्ड था। वह भागा हुआ हॉस्पिटल पहुचता है, पर वहा डॉक्टरो ने उससे खून के लिए पाच सौ रुपये मागे तो वह कहा से लाता। कृष्णसिह का एड्रेस उसे मालूम था। वह वहाँ पर गया भी पर कृष्णसिह ने पैसे देने की बात तो दूर रही उसे दुत्कार कर धक्के मार कर निकाल दिया। इधर अतुल की मृत्यु हो गई। अपूर्व को इस बात की गहरी चोट लगी। वह गुमसुम रहने लगा। पर चन्द्रमुखी के साथ सेठ हजारीमल द्वारा किये गये व्यवहार ने उसके भीतर मे नवचेतना का सचार कर दिया और आज वह एक विजय सैनिक की तरह माँ के साथ सेठ हजारीमल के यहा से निकलकर अपनी खोली मे पहुचा था। चन्द्रमुखी को भी अपने पुत्र की वीरता पर गर्व हुआ। आयु मे छोटा होते हुए भी दिमाग एव कार्य करने की शक्ति मे वह बडो–बडो के कान काटता था।

खोली मे आने के बाद उसने चन्द्रमुखी से कहा "मम्मी ! क्यो उनके घर जाती हो ? अब कभी भी वहा मत जाना। इन हैवानो ने यदि तुम्हारे हाथ भी लगा दिया तो मैं मर मिटूगा पर उन्हे नहीं छोडूगा।" चन्द्रमुखी ने कहा "पुत्र ! तुम्हारा कहना उचित है, पर क्या करू ? तुम्हारे डैडी तो बीमार पडे हैं। अतुल थोडा बहुत कमा लेता था पर वह भी चला गया। अब घर खर्च चलाने के लिये कुछ तो करना ही पडता है।"

"पर मम्मी तुम्हे अब वहा नही जाना। मैं सब कुछ छोडकर तुम्हे कमाई करके दूगा और जितनी चाहिये उतनी दूगा फिर उन हैवानो की नौकरी करने की क्या आवश्यकता है ?"

"पुत्र ! तुम अभी छोटे हो, अभी तुम्हारे पढने के दिन हैं, थोडा पढ–लिखकर होशियार हो जाओ। फिर जब कमाने लग जाओ तो मैं इनके घरो मे नहीं जाऊगी। अभी तुम्हारी पढाई छुडाना नहीं चाहती। अतुल ने भी पढना छोडकर काम करना प्रारम्भ किया तो वह भी चला गया। अब तुम ही हमारी बुझती जिन्दगी के टिमटिमाते दीपक हो। इसलिये अभी मन लगाकर पढाई करो। बाद मे खूब कमाना।"

पर अपूर्व को चन्द्रमुखी की बात बिल्कुल नहीं सुहाई। वह अपनी मा को उन राक्षसो के फ्लेटो मे भेजने के लिये कतई तैयार नही था। उसने कहा– मम्मी ! यदि तुम्हारी भावना मुझे पढाई कराने की है तो सुनलो मैं पढूगा भी और काम भी करूगा, दोनो करूगा पर तुम्हे अब वहा नहीं जाने दूगा।"

अपूर्व, आज कुछ ज्यादा ही भावावेश मे था पर उसकी बुद्धि बराबर काम कर रही थी।

चन्द्रमुखी ने उसे समझाने के लहजे मे कहा–"अच्छा बाबा अच्छा, पहले तुम कमाओ तो सही, जब कमाने लग जाओगे तो मेरे जाने की क्या आवश्यकता है ?" अपूर्व चन्द्रमुखी के सामने यह कहता ही चला गया–" मम्मी ! आज मेरा हृदय खौल रहा है। इन श्रीमतो के कारनामो को देखकर जिन्होने अपने को बर्बाद करने के लिये कोई कसर नहीं छोडी। जिनके दिमागो मे रिश्ते, मानवता, नैतिकता का कोई मूल्याकन नहीं है, बस दौलत ही जिनके दिमाग मे नाचती है, आज मैं तेरी सौगन्ध खाकर ईश्वर की साक्षी से प्रतिज्ञा करता हू, मैं तुम्हारे कहे अनुसार पढाई भी करूगा और पैसे भी कमाऊगा पर जिस कृष्णसिह ने मेरे डेडी को बर्बाद किया और हमे दाने–दाने का मुहताज कर दिया। मेरे भाई की जिन्दगी के लिये जो पाच सौ रु भी नहीं दे सका, ऐसे कृष्णसिह को सबक सिखाकर ही रहूगा। उसे बता दूगा कि धन के मद मे किया गया अनर्थ कितना घातक होता है। दूसरी प्रतिज्ञा मेरी यह है कि जिस नीच ने मेरे

भाई पर कार चलाई थी और भाग गया इसलिये कि कहीं मैं पकडा नहीं जाऊ। ऐसे दुष्ट को भी सबक सिखाकर रहूगा। तीसरी प्रतिज्ञा मेरी उस हजारीमल के लिये है, जिसने तेरी इज्जत पर हाथ डालने का दुस्साहस किया था, यह तो मैं था इसलिये बाल भी बाका नहीं हुआ अन्यथा आज मैं मॉ के बिना अनाथ हो जाता। ऐसे लम्पट लोग धरती मॉ को कलकित करते हैं। इस दुष्ट ने न मालूम कितनी औरतो को अपनी हवस पूरी करने के लिये भ्रष्ट किया होगा। उसे भी यह बतला दूगा कि उन अबलाओ की इज्जत पर हाथ डालने का कितना घातक परिणाम सामने आता है।" कहते–कहते अपूर्व के होठ कापने लगे, दात कटकटाने लगे।

पुत्र के शौर्यपूर्ण शब्दो को सुनकर चन्द्रमुखी को एक अनिर्वचनीय सुख की अनुभूति हुई। अपूर्व को छाती से लगाते हुए चन्द्रमुखी ने कहा–"पुत्र ! जुग–जुग जियो। तेरे जैसे सपूत निश्चय ही भारत मॉ को पवित्र बनाने वाले बनेगे।"

खाट पर लेटे–लेटे रामसिह मॉ–बेटे की बातो को सुन रहा था। उसके मस्तिष्क पर अतीत की घटनाए चलचित्र की भाति उभरती जा रही थी। कहा तो पिता रायसिह के समय पर रईसी ठाठ था, रायगढ के लोग हम बच्चो को भी बडा सम्मान देते थे पर घनश्यामदास डाकू ने हमे लूट लिया और धनवान से एकदम गरीब बना दिया। वर्षो यहा रहकर मजदूरी की, कृष्णसिह को होशियार बनाया, इसलिये कि वह बाद मे सहयोगी बनेगा तो वह भी दगा दे गया। इधर मेरी टाग टूट गई। मैं एकदम अपग हो गया। अतुल ने कमाना चालू किया वह भी प्रकृति से सहा नहीं गया उसे भी उठा लिया। इधर चन्द्रमुखी पर आपत्तिया आ गिरीं। अब एकमात्र आशा दीपक अपूर्व रहा है। इसका साहस शौर्य, सूझबूझ बहुत तेज है। लगता है, इस डूबती नैया का यही पतवार बनेगा। तीनो प्राणी भविष्य की सुनहरी कल्पनाए करते–करते दृश्य लोक से अदृश्य दुनिया मे पहुच गये। निद्राधीन हो गए।



(12)

ठीक 9 बजे बालकेश्वर की रिजरोड पर स्थित अशोक बिल्डिंग के नीचे अनेक कारे खडी थी। कोई फियेट थी, तो कोई मारुति तो कोई मर्सीडिज। एक कार के पास सफारी सूट मे अपटूडेट एक 25 वर्षीय युवक खडा था। जिसका नाम था कमल सेठ।

उन्हे बडे आत्म विश्वास एव सम्मानित शब्दो मे किसी ने पीछे से पुकारा–"साहब ! आपकी गाडी साफ कर दू ?" कमल सेठ ने पीछे मुडकर देखा कि एक चौदह–पन्द्रह वर्षीय लडका उसकी गाडी साफ करने के लिये कह रहा है। कमल सेठ ने सोचा यह क्या गाडी साफ करेगा। पर उसकी आवाज के साथ जो आत्मविश्वास बोल रहा था, उससे विवश होकर कमल सेठ उसे इन्कार नही कर सका और बोला–" अच्छा करो, हम भी देखते हैं कि तुम कैसे गाडी साफ करते हो।" यद्यपि कमल सेठ को अनेक काम थे पर कुतूहलवश वे उसे देखने के लिये खडे हो गए।

पन्द्रह वर्ष के अपूर्व को आदेश मिलते ही वह आनन–फानन मे कहीं से बाल्टी ले आया उसमे गर्म पानी लेकर पूरी गाडी पर छिडक दिया और फिर उसे टावेल से एक बार साफ किया और दूसरी बार टावेल को गीला करके गाडी का एक–एक भाग साफ करने लगा। पूरे तीस मिनट के कडे परिश्रम ने चमत्कार दिखाया, गाडी चमक उठी। कमल सेठ अपूर्व की लगन और परिश्रम को देख कर उससे प्रभावित हुए बिना नही रह सका। खुश होते हुए बोला– "शाबास, गाडी की तो बहुत अच्छी सफाई की है तुमने बोलो कितने पैसे दू तुम्हे ?"

"साहब ! आपकी जितनी इच्छा हो उतने दे दीजिये मैं मोल भाव नहीं करता।" अपूर्व के एक–एक शब्द मे आश्चर्यजनक प्रभाव टपक रहा था। अच्छा तो तुम्हे पाच रुपये देता हू। और सुनो मेरी गाडी को रोजाना साफ कर दिया करो।"

"अच्छा साहब। जैसा आपका आदेश।"

कमल सेठ की गाडी के पास ही एक और गाडी खडी थी। उस गाडी के मलिक पराग सेठ ठीक उसी वक्त नीचे उतर आये थे, जिस वक्त कमल सेठ उसे पैसे दे रहे थे। कमल सेठ की गाडी को चमकती हुई देख कर पराग सेठ ने कमल सेठ को पूछ ही लिया–"क्यो दोस्त ! आज तुम्हारी गाडी बहुत चमक रही है, किसने साफ की ?" अरे यार ! यह लडका दिखता तो बहुत छोटा है, पर है बहुत होशियार। इसी ने गाडी को साफ की है।"

"अरे तब तो ए लडके ! तुम मेरी गाडी भी साफ कर दो।" पराग सेठ ने अपूर्व को कहा।

"अच्छा साहब अभी करता हू।" ऐसा कहते हुए वह लडका उसी स्फूर्ति एव लगन से पराग सेठ की गाडी साफ करने लग गया। उसमे भी उसे पूरा आधा घण्टा लग गया। गाडी चमक उठी।

पराग सेठ ने भी उसे पाच रुपये दिये। इसी तरह उसने दो कारे और साफ की।

इस प्रकार चार कारो की सफाई से उसे बीस रुपये प्राप्त हो गये। अब तक घडी मे ग्यारह बज चुके थे। अपूर्व सीधा वहा से निकला, लोकल गाडी मे बैठकर बान्द्रा स्थित अपनी कॉन्वेन्ट स्कूल मे ठीक टाइम पर पहुच गया और पढाई मे तन्मय हो गया।

स्कूल मे पूरे टाइम तक वह पढता रहा। और स्कूल से छूटते ही सीधा अपनी खोली मे पहुचा और चन्द्रमुखी के हाथ मे बीस रुपये थमा दिये। चन्द्रमुखी देखती रह गई। बोली "कहा से लाया रुपये ? स्कूल गया था या मजदूरी करने।"

अपूर्व ने कहा–"मम्मी ! मैं बराबर स्कूल गया हू।" "तब फिर ये रुपये कहां से लाया ? क्या चोरी की या किसी की जेब काटी ?" चन्द्रमुखी ने कहा।

"मम्मी ! क्या तुम्हे विश्वास है कि सती सावित्री से जन्मी सन्तान चोरी करेगा ? जेब काटेगा ?"

चन्द्रमुखी–"हा यह तो मुझे विश्वास है कि तुम इस प्रकार से पैसे

इकट्ठे नहीं करोगे। परन्तु मुझे आश्चर्य है कि तुम स्कूल गये तो फिर पैसे कहा से लाए इसी कारण शका हुई।"

अपूर्व–"मम्मी! सुनो, मै यहा से साढे आठ बजे निकल चुका था और सीधा लोकल ट्रेन से बम्बई सेन्ट्रल पहुचा और वहा से बालकेश्वर। वहा पर चार कारे साफ की, उससे मुझे बीस रुपये मिले। ग्यारह बजे तक वहा काम निपटा कर सीधा स्कूल पहुचा, वहा पढाई करके अब सीधा घर आ रहा हू।

पुत्र की कार्य निष्ठा को देख कर चन्द्रमुखी अत्यन्त प्रमुदित हुई और बोली "पुत्र! **ईमानदारी के साथ कमाया गया पैसा ही टिकता है। अप्रामाणिकता के साथ कमाया पैसा एक आग के भभके की तरह दिखता है और जल्दी ही खतम भी हो जाता है।** भगवान! तेरी सद्‌बुद्धि ऐसी ही रखे" । चन्द्रमुखी ने अन्तर्दिल से अपूर्व को आशीर्वाद दिया।

अपूर्व ने आत्म विश्वास के साथ यह सुनिश्चित कर लिया था कि 'देह पातयामि, कार्य साधयामि वा' शरीर को छोड दूगा या कार्य को सिद्ध कर लूगा– इस आत्म विश्वास ने उसकी बुद्धि को प्रखर एव साहस को प्रबल बना दिया था। अपूर्व ने प्रतिदिन के चौबीस घण्टे मे नियमित रूप से चलने के लिये अपनी एक रूपरेखा बना ली। प्रतिदिन पाच बजे उठना, स्नानादि कार्यो से निवृत होना और ठीक आठ बजे लोकल ट्रेन मे बैठ कर बम्बई सेन्ट्रल पहुचना और वहा से बालकेश्वर पहुच जाना और ईमानदारी के साथ कारे साफ करना और ठीक समय पर स्कूल पहुच कर तन्मयता के साथ पढाई करना।

प्रतिदिन कमल सेठ और पराग सेठ आदि की गाडी चमचमाती रहने से उनके दोस्त अशोक सेठ आदि अनेको ने पूछा "वाह! तुम लोगो की कारे इतनी साफ कैसे रहती हैं ? कौन साफ करता है तुम्हारी कारो को ?"

पराग सेठ बोला–"अरे दोस्त! एक अपूर्व नाम का लडका आता है। वह बहुत होशियार, ईमानदार और स्मार्ट लगता है। वही रोज गाडी साफ कर जाता है।" यह बात सुन कर अशोक सेठ आदि दूसरे दोस्तो ने भी कहा–"अरे फिर हमारी कारे भी क्यो नहीं साफ करवा देते हो ?

जिससे हमारी भी कारे चमचमाती रहे।" "जरूर–जरूर", कहते हुए पराग सेठ ने अपने ड्राइवर चन्द्रानन को बुलाते हुए कहा–"देखो ! कल जब अपूर्व आवे तो उसे कहना कि इनकी कारे भी साफ कर दिया करे। प्रति कार पर उसे पाच रुपये सफाई के मिल जावेगे।

"ठीक है, साहब।" चन्द्रानन ड्राइवर ने कहा। अपूर्व भी रात को सोच रहा था कि बीस रुपये दिन के हिसाब से महीने के 600 रुपये ही होते हैं, जबकि घर खर्च कम से कम 800 रुपये प्रतिमास है, जब तक 800 रुपये प्रतिमास न कमालू तब तक मम्मी फ्लेटो मे काम करना नहीं छोडेगी और मुझे उसे अब फ्लेटो मे नहीं जाने देना है। इसलिये कल मैं वहा जल्दी पहुचू और दो कार और अधिक साफ कर दू तो 30 रु मिल जाएगे। प्रात काल आवश्यक कार्यो को निपटा कर अपूर्व शीघ्र ही बालकेश्वर पहुच गया और प्रतिदिन के अनुसार चारो कारे साफ करने मे तन्मय बन गया।

इसी बीच चन्द्रानन आया और बोला–"देखो। हमारे मालिको को तुम्हारा काम बहुत पसन्द आया है और उन्होने इन सब कारो को भी साफ करने के लिये कहा है।" चन्द्रानन की बात सुनकर अपूर्व सोचने लगा, काम तो मुझे बिना मागे मिल गया है। पर मैं इतनी कारे कैसे साफ कर सकता हू। टाइम बहुत चाहिये। इतना टाइम मेरे पास नहीं है, क्योकि मुझे स्कूल जाना भी जरुरी है। मैंने मम्मी के सामने कसम खाई थी कि मैं स्कूल पढना नही छोडूगा। इधर जल्दी–जल्दी आधी अधूरी कार साफ करके बेगार काटना भी मुझे पसन्द नहीं है। मुझे जो कुछ भी काम मिल रहा है, वह मेरी ईमानदारी एव कर्त्तव्यनिष्ठा पर मिल रहा है। यदि मैंने बेगार काटना प्रारम्भ कर दिया तो इन सेठो के दिमाग मे मेरे प्रति जो आत्मविश्वास जमा है वह जाता रहेगा। आज मैं जल्दी आया हू तो दो और कार साफ कर सकता हू ज्यादा नहीं। यह सोच कर अपूर्व ने चन्द्रानन से कहा–देखिये मेरे पास अभी इतना समय नहीं है। हा इन चार कारो के अलावा अभी दो कार और साफ कर सकता हू। यह हो सकता है कि शाम को 6 से 8 तक दो घण्टा टाइम मुझे मिलता है, उस समय चार कारे और साफ कर सकता हू। इससे ज्यादा नही।"

चन्द्रानन बोला–"अच्छा तो दो गाडी अभी साफ कर दो और 3640, 3650, 3657, 3658 नम्बर की चार कारे आपेरा हाउस पचरत्ना बिल्डिग के नीचे खडी रहेगी। शाम को वहा जाकर साफ कर देना।"

"बहुत अच्छा" कह कर अपूर्व पुन अपने काम मे लग गया। बडी तत्परता के साथ छहो कारे साफ करके अपूर्व अपने प्रतिदिन के कार्यक्रमानुसार स्कूल चला गया और पढाई करने मे मग्न हो गया। वह एक भी पीरियड बर्बाद करना नही चाहता था। कभी किसी पीरियड मे आने वाले अध्यापक पढाने नहीं आते तो अपूर्व अन्य विद्यार्थियो की तरह समय नष्ट नहीं करके उस पीरियड मे अन्य पढाई करने लग जाता था। उसमे एक बहुत बडी खासियत थी कि वह जो कोई भी काम करता, उसे मन लगा कर करता था। इसलिये उसका कार्य बडे ढग से सम्पन्न होता था।

शाम को छह बजे स्कूल से छूटते ही धनुष से निकले तीर की तरह अपूर्व सीधा पचरत्ना आपेरा हाउस पहुचा और 3640, 3650, 3657, 3658 नम्बर की कारो की सफाई करने मे मग्न हो गया। दो घण्टो मे कार्य सम्पन्न हो गया। आज उसे दस कारे साफ करने के कारण प्रत्येक के पाच–पाच रुपये के हिसाब से 50 रुपये प्राप्त हो गये थे। 50 रुपये लेकर वह सीधा चेम्बूर अपनी खोली मे मम्मी के पास पहुचा और उसके हाथ मे पचास रुपये थमा दिये।

चन्द्रमुखी देखती रह गई। चन्द्रमुखी की प्रश्नभरी निगाहो को होशियार अपूर्व समझ गया और बोला–मम्मी ! गलत मत समझो, आज मैंने दस कारे साफ की थी, इस हिसाब से पचास रुपये मिले हैं। अब मैं रोज पचास रुपये तुम्हे लाकर दूगा। पूरे महीने मे 1500/– रुपये तुम्हे मिल जाएगे। मैं समझता हू अब घर खर्च बहुत अच्छी तरह से चल जाएगा। पैसो के लिये तुझे अब फ्लेटो मे काम करने की जरूरत नहीं रहेगी।

चन्द्रमुखी पुत्र के अमित साहस को अनिर्वचनीय सुखद अनुभूति के साथ देखती रह गई। बोली–"पुत्र ! तुम्हारे रहते अब मैं हैवानो के यहा काम करने नहीं जाऊगी।" चन्द्रमुखी की बात को सुनकर अपूर्व को तसल्ली हो गई।

अपूर्व अब पढाई के साथ–साथ कारे भी साफ करने के काम मे लग गया था। पूरे एक महीने मे उसने पन्द्रह सौ रुपये कमाये। उनमे से 900/– रुपये तो घर खर्च मे समाप्त हो गये और 600 रुपये बच गये। यद्यपि अपूर्व चाहता तो इससे भी ज्यादा कमा सकता था, पर उसे अभी पढना था। पढाई के अतिरिक्त जितना भी टाईम मिलता उतने टाइम मे ही वह काम करता था। पूरे एक साल मे अपूर्व को 7200/– रुपये की बचत हुई। इधर दसवी की परीक्षा मे भी अच्छे अको से उत्तीर्ण हुआ। पुत्र की प्रगति को देखते हुए चन्द्रमुखी तो खूब खुश थी ही पर रामसिह को भी अमित खुशी की अनुभूति होती थी। इस खुशी से उसके स्वास्थ्य मे भी निरन्तर स्वस्थता आने लगी।

अपूर्व को इतने मात्र से ही सन्तोष नही हुआ क्योकि उसकी महत्वकाक्षा बहुत अधिक थी। और उसे अभी बहुत काम करने थे। इसलिये वह आगे की योजना को सफल बनाने के लिये विचार करने लगा। अभी मेरे पास 7200 रुपये हैं। इससे मैं कोई लम्बा व्यापार तो कर नहीं सकता। और यदि व्यापार करू तो भी टाइम पूरा चाहिये इधर मुझे, पढना भी तो है। पढाई छोड नहीं सकता। तो फिर कौनसा व्यापार करू, जिसमे टाइम कम लगे और लाभ भी अच्छा हो। क्यो न सर्फ–पाउडर बना कर बेचा जाय। इसमे अधिक टाइम भी नहीं लगेगा और बेचने भी कहीं जाना नही पडेगा। जिस बिल्डिग मे कारे साफ करता हू उसी बिल्डिग के फ्लेटो मे बेच आऊगा। कम टाइम मे यह सस्ता व्यापार अच्छा रहेगा।

बस अपूर्व ने अपनी योजना को क्रियान्वित करने की ठान ली। पाउडर बनाने की कुछ विधि तो उसे मालूम थी कुछ और इधर–उधर के लोगो से पूछ–ताछ कर डिटरजेट पाउडर बनाने की विधि अच्छी तरह सीख ली। अब पाउडर बनाने की सारी सामग्री खरीद कर अपनी खोली मे मम्मी के सामने उसने पाच किलो सर्फ–पाउडर बनाया और आधे–आधे किलो के दस पैकेट बना लिये। दूसरे दिन जब वह कारे साफ करने के लिये बालकेश्वर पहुचा तो कारो की सफाई करके के बाद उन दसो पेकिटो को ले कर बिल्डिग मे चढने की तैयारी करने लगा। सोचने लगा कि सबसे पहले किस फ्लेट मे जाऊ, जो मेरे यह पैकेट खरीद सके। कमल सेठ, जिनसे सबसे पहले परिचय हुआ, वो लगते भी भले हैं तो उन्हीं

के फ्लेट मे पहले जाना चाहिये। यही सोच कर वह छठ माले पर फ्लेट न 51 के बाहर पहुच गया। अपने मन–मस्तिष्क को शान्त सन्तुलित बनाने के साथ ही उसने घटी का स्विच दबा दिया। फ्लेट मे घन्टी का स्वर घनघना उठा। नौकर किशोर ने दरवाजा खोला और बोला–"तुम कौन हो, किस लिये आए हो ?"

अपूर्व ने जवाब दिया–"भाई तुम मुझे नहीं पहचानते हो। मैं कमल सेठ की गाडी को साफ करने वाला हू, आज मैं सर्फ के पाकिट बेचने आया हू। यदि कमल सेठ हो तो जरा उनसे मुझे मिला दो।"

किशोर बोला–"सेठ सा तो नहीं है, हा उनकी अम्मा मेना सुन्दरी है उनसे मिल सकते हो।"

अपूर्व–"अच्छा आप उन्ही से मिला दीजिये।" नौकर ने अपूर्व को कमल सेठ की अम्मा से मिला दिया। अपूर्व ने विनीत प्रणाम किया और कहा–"बाईजी। वैसे मैं आपके सुपुत्र कमल सेठ की गाडी गत एक वर्ष से साफ करता आया हू। कई बार आपने मुझे देखा भी है, आज मैं कुछ विशेष काम से ऊपर आया हू"।

मैनासुन्दरी–"अच्छा ! बोलो क्या काम है, तुम्हे ?"

"काम तो कुछ नही, मैंने अपने घर मे ही सर्फ बनाया है, बिल्कुल शुद्ध रूप से। उसके पाकिट लाया हू। आपको चाहिये तो रख लीजिये। सबसे पहले आपके ही पास आया हू।"

मैनासुन्दरी ने उसके पाकिट देखे। वैसे पाकिट कोई डब्बे मे बन्द तो नहीं थे और न ही कोई ऊपर आकर्षक विज्ञापन या छपाई ही थी। केवल प्लास्टिक की थैलियो मे बन्द किया गया था। फिर भी मैनासुन्दरी जी ने अपूर्व के आत्मीय शब्दो से प्रभावित होकर दो पाकिट रख लिये और बोली–"बोलो इसका कितना मूल्य दू, तुम्हे ?"

अपूर्व–"बाईजी ! मैं मोलभाव नहीं करता। जितना आपको उचित हो दे दीजिये।"

मैनासुन्दरी–"देखो ! बाजार मे 12 रु किलो पाउडर बिकता है। अब तुम कह रहे हो कि पाउडर अच्छा है तो हो सकता है अच्छा ही होगा। तुम चाहो तो मैं दोनो पाकिटो के दस रुपये दे सकती हू।"

अपूर्व–"बहुत अच्छा ! आप जितना भी दे दे मुझे मजूर।" मैनासुन्दरी जी ने उसे दस रुपये निकालकर दे दिये उसे लेकर वह ऊपर के फ्लेटो मे बढता गया। वैसे आधा किलो पाउडर का बाजार भाव छ रुपये था पर कोई पाच रुपये देता तो कोई छ रुपये। पर कहीं पर भी उसने नानुकर नही किया। जितना उन्होने अपनी इच्छा से दे दिया उतना खुशी के साथ ले लिया। क्योकि अपूर्व सोचने लगा कि मेरे घर मे तो यह चार रुपये मे आधा किलो पाउडर पडा है। इसके कोई पाच रुपये देता है तो भी एक रुपये का लाभ और कोई छ रुपये देता है तो दो रुपये का लाभ है। हानि तो कुछ है नही। इनका ऐसा करना भी स्वाभाविक है क्योकि पाउडर बिना डिब्बे एव आकर्षण का है। फिर भी इन्होने रख तो लिया।

अपूर्व ने दसो पाकिट 10 मिनिट मे बेच दिये। इससे उसे 15 रुपये का लाभ हुआ। अब कारो की सफाई के साथ पाउडर बनाने का काम भी करने लगा। चन्द्रमुखी खुद भी पाउडर बनाना सीख गई थी। इसलिये पाउडर बनाने का काम अपूर्व को नही करना पडता। रामसिह अब उठने–बैठने लगे थे, इसलिये वे भी अब पाउडर को थैलियो मे भरने, बद करने का काम करने लगे। इस प्रकार थैलिया तो वैसे ही तैयार हो जाती। उसे बेचने का काम अपूर्व करता था। उसकी खोली के आसपास के निवासी भी उसके व्यवहार से बहुत प्रभावित थे। अपूर्व उन लोगो के पास भी पेकेट बेच आता था। इस प्रकार प्रारम्भ मे ही उसने प्रतिदिन दस–बीस पैकेट बेचने प्रारम्भ कर दिये। पाच–छ दिन बाद एक दिन फिर वह दस पैकेट लेकर बालकेश्वर पहुच गया। प्रतिदिन की भाति कारे साफ करने के बाद आज वह फिर बिल्डिग मे ऊपर चढ गया। सीधा छठे माले पर फलेट न 51 मे मैनासुन्दरी के पास पहुचा और बडे अदब से बोला–"कैसा लगा पाउडर ? क्या और लेगे ?" तब मैनासुन्दरी ने कहा–"पाउडर तो तुम्हारा बहुत अच्छा रहा, बाजार के पाउडर मे तो कुछ नकली माल भी मिला आता है, पर जैसा कि तुमने कहा तदनुसार तुम्हारा पाउडर असली निकला। कितने पैकेट लाया है ?"

अपूर्व–"आधे–आधे किलो के 10 पॉकिट लाया हू, आण्टी।"

मैनासुन्दरी–"ला, पाच पैकेट तो मुझे दे दे। हा, पहली बार तो तुम्हे बाजार भाव से भी कम पैसे दिये थे। बोलो, इस बार कितने पैसे दू ?"

अपूर्व का तो एक ही सधा हुआ जवाब था। "जितना आपको उचित लगे दे दीजिये। मै मोलभाव नही करता।"

ले तो इस बार तुझे बाजार भाव से कम पैसे नही दिये जाएगे, यह कहते हुए मैनासुन्दरी जी ने पाच पैकेट के प्रति पैकेट छ रुपये के हिसाब से तीस रुपये निकालकर उसके हाथ मे थमा दिये। अपूर्व ने बडे स्नेह से जितने भी पैसे दिये ले लिये। और ऊपर की मजिल की ओर चल पडा। वहा भी यही हाल था। क्योकि अपूर्व का सर्फ असली था। जिसने भी अजमाया उस पर असर किये बिना नही रह सका। सभी को इस सर्फ से धुलने वाले कपडे बडे अच्छे लगे। ऊपर के फ्लेट वाली महिला ने भी अपूर्व के पाचो पैकेट रख लिये और उसे बाजार भाव के अनुसार तीस रुपये दे दिये। दो ही फ्लेट मे अपूर्व के लाए दसो पैकेट बिक चुके थे, अब वह सीधा प्रतिदिन के कार्यक्रमानुसार पढने के लिये स्कूल चला गया। दूसरे दिन वह बीस पैकेट लेकर पहुचा और कारे साफ करने के बाद बिल्डिग के फ्लेटो मे पहुचने लगा। लोग उसके पाउडर को पसन्द करने लगे। चन्द मिनटो मे ही उसके सारे पैकेट बाजार भाव मे बिक गये। अपूर्व के पाउडर का व्यापार भी चल निकला। वैसे अपूर्व का व्यवहार ही कुछ ऐसा था, लोग उसके व्यवहार से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। धीरे–धीरे उसके पाउडर का व्यापार एव प्रचार–प्रसार खूब होने लगा। कुछ ही महीनो के बाद तो उसके पास घर आर्डर आने लगे कि मेरे को पाच किलो पाउडर भेज दो किसी का दस किलो का ऑर्डर आने लगा।

अपूर्व ने उसी प्रामाणिकता, ईमानदारी के साथ व्यापार बनाए रखा। कभी भी पाउडर मे मिलावट नही की। आखिर असलियत–असलियत ही थी। पूरे एक साल मे तो पाउडर का व्यापार बहुत बढ गया।

इस बार हिसाब मिलाया गया तो अपूर्व को बचत के रुपयो मे कारो की सफाई से सात हजार और पाउडर की बिक्री से पन्द्रह हजार रुपये का लाभ हुआ। इधर स्कूल मे अपूर्व ने अच्छे अको मे परीक्षा पास की।

इस बार पैसे ज्यादा होने से अपूर्व ने पाउडर के व्यापार को कुछ और आगे बढाया। पहली बार उसने सौ किलो पाउडर बनाया और उस पाउडर का नाम रखा 'चन्द्रमुखी पाउडर' क्योकि अपूर्व की माता का नाम

चन्द्रमुखी था और उस पाउडर से साफ किया गया कपडा चन्द्रमा की चादनी की तरह साफ होता है नाम के साथ यह भी था। सभी प्लास्टिक की थैलियो पर 'चन्द्रमुखी पाउडर' नाम छपा दिया। उसके ऊपर कागज के डिब्बे भी लगा दिये। अब पाउडर का बाहरी रूप भी अच्छा बना दिया। माल भी अच्छा और पैकिग भी बढिया। अब क्या था लोग 'चन्द्रमुखी पाउडर' फटाफट खरीदने लगे। कुछ ही दिनो मे 200 पैकेट पाउडर साफ हो गया। अब अपूर्व का हौंसला भी बढ चुका था। इसलिये बडे पैमाने मे पाउडर बनाने लगा। पाउडर बनाने का सारा काम चन्द्रमुखी और रामसिह सम्भाल लेते थे। 'चन्द्रमुखी पाउडर' का नाम अब बाजारो मे भी जोरो से चलने लगा। दुकानदार भी अब इस माल को चाहने लगे। दुकानदारो ने भी इस पाउडर की बुकिग करना प्रारम्भ किया। पर अपूर्व की यह शर्त थी पाउडर तो मैं आपको दे सकता हू। पर जितने भी पैसे इस पर छपे हैं, उतने ही पैसो मे इसे बेचना होगा। आपको भी प्रॉफिट मिले इसके लिये मैं आपसे दो रुपये कम ले सकता हू। आखिर दुकानदारो को उसकी बात माननी पडी। क्योकि लोग पाउडर वही खरीदते थे। दुकानदार उससे बडे पैमाने मे माल खरीदने लगे। इधर अपूर्व भी उसी पैमाने मे पाउडर बनाने लगा। एक साथ अधिक माल बनाने से अपूर्व के उत्पादन मे भी खर्च कम पडने लगा और माल फटाफट बिकने लगा। इस पूरे साल मे पाउडर का इतना अधिक प्रसार हुआ कि बम्बई के बाजारो मे 'चन्द्रमुखी पाउडर' चमक उठा।

इस साल उसे 'चन्द्रमुखी पाउडर' से एक लाख रुपये का प्रॉफिट हुआ। पढाई तो उसकी अच्छी चल ही रही थी और व्यापार भी अच्छा चलने लगा।

इस वर्ष अपूर्व ने कॉलेज मे प्रवेश लिया था। अब उसे कॉलेज की पढाई करनी है। उसने प्रारम्भ से ही इन्जीनियर बनने की ठान ली थी। क्योकि दूरदर्शी अपूर्व के मन मे यह निश्चय था कि चाचा कृष्णसिह इजीनियर बने थे और फिर खूब पैसे कमाकर अब बडे ठाठ से रहते हैं। मुझे उन्हे मचा चखाना है तो इसके लिये इजीनियर बनना जरूरी है। इसलिये वह इजीनियर बनने की ही पढाई कर रहा था। कारे साफ करने मे उसे कुछ ज्यादा टाइम लग जाता था और अब कारो की सफाई से भी

"वाह री होशियार ! हमारे से ही चालाकी खेलने लगी। यहा से छूटकर पिताजी को बताकर हमारे पीछे पुलिस लगा दो, इसीलिये भागकर जाना चाह रही हो। हम ऐसे नही जाने देगे। ऐसी कच्ची गोलिया हमने नहीं खाई है।" एक साये ने जवाब दिया।

लडकी का साहस अब टूट चुका था। क्योकि इन गुण्डो के पास रहने का मतलब अपनी अस्मिता खोनी थी। वह उनके पास हरगिज नहीं रहना चाहती पर कुछ कर नही पा रही थी।

अपूर्व धीरे–धीरे अत्यन्त सावधानी के साथ घटनास्थल से दस–बीस कदम की दूरी पर एक झाडी के पास आ गया। जहा से वह सब कुछ देख सुन सकता था। वह तेजी के साथ अपना कर्त्तव्य भी निश्चित करता जा रहा था। सामने चार व्यक्ति थे, एक के पास रिवाल्वर भी था हो सकता है, दूसरो के पास भी हो जबकि अपूर्व निहत्था था। उसे चारो को मजा चखाना था, उसने देखा अब कुछ करना ही पडेगा, अन्यथा ये लडकी को उठा ले जाएगे।

वह बिजली सी स्फूर्ति से निकला और दो आदमियो के बीच मे घुसकर अपने दो हाथो से उन्हे इस कदर धक्का मारा कि वे दोनो भूमि चाटने लगे। हाथ मे रही पिस्तौल उछलकर अधेरे मे दूर जा गिरी। सामने वाले दोनो व्यक्ति कुछ कर पाए, इससे पहले ही अपूर्व ने उछलकर उनके मर्मस्थल पर इस कदर धौल जमाये कि दोनो ही बिबियाते हुए गिर पडे। अपूर्व जानता था कि ये कम से कम पन्द्रह मिनिट पहले उठने वाले नहीं है पर पहले जिन दोनों को उसने धक्के मार के गिराया था वे तुरन्त उठ सकते हैं, इसलिये वह स्फूर्ति से पीछे हटा और वे उठे उससे पहले ही उनके जबडो, पेट आदि ऐसे स्थलो पर इस कदर धौल जमाए कि उनके मुह से खून निकलने लगा और बेहोश हो गए। अब अगले उन दोनो व्यक्तियो को भी सभालना जरूरी था। क्योकि वे उठ सकते थे। इसलिये अपूर्व पुन सामने की तरफ मुखातिब हुआ और दोनो व्यक्तियो की तबियत भी झक कर दी। अब वे घटे भर तक तो उठने की स्थिति मे नही रहे। बाद मे उठ भी जाय तो जल्दी से किसी पर प्रहार नहीं कर सकते। कम से कम तीन दिन तक तो उन्हे घर पर आराम करना पडेगा। तभी कोई काम कर सकेगे। अपूर्व ने यह सब कला जूडो और कराटे मे सीख ली थी।

उन गुण्डो से निश्चित होने के बाद अपूर्व ने लडकी की तरफ देखा। लडकी भयभीत सी खडी यह सब कुछ देख रही थी। अहो ! इस अकेले ने किस प्रकार चार गुण्डो को धूल चटा दी। इसके पास ताकत ही नहीं है बुद्धि बल भी है। **केवल ताकत काम नहीं आती। यदि बुद्धि नहीं है तो तमाम ताकत निष्क्रिय हो जाती है।** हाथी जैसे बलवान और शेर जैसे खूखार पशुओ को भी निर्बल आदमी अपनी बुद्धि से वश मे कर लेता है। यही अपूर्व ने कर दिखाया था। लडकी अपने विचारो मे खोई–खोई उसे देख ही रही थी कि अपूर्व मुश्किल से 20 मिनिट मे सारा काम निपटाकर उसके सामने आ खडा हुआ।

दृष्टि से दृष्टि का मिलन हुआ और दोनो एक दूसरे को बडे आश्चर्य से देखने लगे।

अपूर्व ने कहा–आप तो, लडकी ने कहा–आप ।

कुछ सेकन्ड तक तो वे हैरत मे आ गए। फिर लडकी बोली–तुम कौन–अपूर्व, तब अपूर्व ने जवाब दिया, जी हा मैं अपूर्व और आप कौन चेतना ?

"आपने ठीक पहचाना। मैं ही चेतना हू।" चेतना ने जवाब दिया।

अपूर्व और चेतना दोनो एक ही कॉलेज मे क्लासफेलो हैं। पर आश्चर्य कि उन्होने कॉलेज मे कभी एक दूसरे से बात नहीं की थी। हा, नाम से वे जरूर एक दूसरे को जानते थे, पर बात करने का कभी ऐसा अवसर नहीं आया था। आता भी कैसे ? क्योकि अपूर्व के पास फालतू टाइम भी तो नहीं था। पूरे दिन भर का कार्यक्रम बधा हुआ था और दूसरी बात यह थी कि अभी वह और लडको की तरह लडकियो के चक्कर मे पडना नही चाहता था। क्योकि वह अच्छी तरह जानता था कि **जिसे इश्क का नशा चढ गया तो फिर वह कोई भी काम नहीं कर पाता।** उसके मस्तिष्क मे वही–वही बाते घूमती रहती है। कितना भी समझाओ उसे, पर इश्क का नशा फिर नहीं उतरता। पर अपूर्व को अभी बडे–बडे कार्य करने थे। वे इश्क का नशा लगने पर पूरे नहीं हो सकते हैं, क्योकि इश्क के नशे करने वालो को तो वह बचपन से धूल चटाता था। इसलिये वह प्रारम्भ से ही ऐसे प्रपच मे नही पडा। यही कारण था कि उसने चेतना

से क्लासफेलो होते हुए भी कभी भी बात नही की और न ही कोशिश की। दूसरी बात चेतना एक बडे बाप की लडकी थी जबकि अपूर्व के पास इतना पैसा नही था। और वैसे भी वह इस प्रपच मे पडना नहीं चाहता था।

चेतना भी अपूर्व को जानती जरूर थी। पर उसे भी बातचीत करने का कभी मौका नही मिला। वैसे भी वह किसी अन्य लडके से भी कभी कोई विशेष बातचीत नहीं करती। पूरी क्लास मे दो ही ऐसे थे जो अपने काम से मतलब रखते थे। पढाई होने के बाद कॉलेज से सीधे निकल जाते थे।

आज उन दोनो का अचानक ही मिलन हो गया। इसलिये दोनो ही एक दूसरे को देखते रह गए।

अपूर्व ने पूछा–"आप इन गुण्डो के चक्कर मे कैसे पड गई।"

चेतना ने कहा–"मैं तो गाडी लेकर अपनी एक फ्रेण्ड से मिलने गई थी। मिलकर लौट रही थी तो कुछ रात हो गई पर ऐसी कोई बात नहीं थी। किन्तु इन गुण्डो ने एक सुनसान जगह पर आ रही रोड पर बडे–बडे पत्थर लगा दिये तब मुझे विवश होकर गाडी को रोकना पडा क्योकि इधर–उधर से निकलने को कोई और रास्ता नहीं था। मैं गाडी से उतरकर पत्थर हटाने की कोशिश करने लगी तो ये चारो ही निकल आए और मेरे से ज्यादती करने लगे। आज मेरा बच पाना बहुत मुश्किल था। पर आप ठीक टाइम पर चले आए और अपने प्राणो से खेलकर भी रक्षा कर ली। मैं आपका उपकार इस जिन्दगी मे तो क्या, कभी भी नहीं भूल सकती।"

अपूर्व–"अरे ! उपकार की क्या बात है, मैंने तो अपना कर्त्तव्य निभाया है। और फिर आप तो मेरी क्लास फैलो हो, इस दृष्टि से भी यह आवश्यक हो जाता था। अच्छा अब बताओ, आप अपने बगले चली जाओगी या और कोई व्यवस्था करू ?"

चेतना–"अरे नही ! दूसरी व्यवस्था की जरूरत नहीं। मेरी गाडी रोड पर खडी है। पर अब तो मुझे डर लगने लगा है। क्योकि अभी इन्होने ऐसा करिश्मा कर डाला हो सकता है आगे भी ऐसा कोई कर दे। यहा तो आप थे जिसने मुझे बचा लिया पर आगे क्या होगा और वेसे भी मेरी

स्थिति ऐसी अभी बन गई है कि मैं ड्राइविग करने की स्थिति मे नहीं हू।"

स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए अपूर्व ने कहा "चलो जल्दी से मैं तुम्हे पहुचा देता हू। अब यहा अधिक रुकना खतरे से खाली नहीं है।" दोनो ही चुपचाप रोड पर चले आए। अपूर्व ने सडक से पत्थरो को हटा दिया और चेतना को कार की पिछली सीट पर बिठलाया, खुद आगे बैठा और कार ड्राइव करने लगा।

आधुनिकता के युग मे जी रही चेतना को यह अखरा जरूर कि उसे भी आगे क्यो नहीं बिठलाया गया। पास–पास बैठने मे क्या हो जाता है ? पर अपूर्व का दृष्टिकोण कुछ और ही था। क्योकि हम पहले ही बता चुके हैं कि वह ऐसे प्रपच मे नहीं पडना चाहता था, उसे आगे बिठाने से अपूर्व को कुछ खतरे की समावना थी। कहीं कोई व्यक्ति चेतना को उसके साथ बैठा देखले तो अपूर्व के करेक्टर पर शका कर सकता है।

बहुत अच्छे ढग से अपूर्व कार ड्राइव कर रहा था। ड्राइविग की इस कुशलता को देखकर चेतना ने कहा– वाह ! आपको तो ड्राइविग करना भी बहुत अच्छा आता है। यह सब आपने कहा से सीख लिया ? कार चलाते हुए ही अपूर्व ने जवाब दिया– अभी कुछ दिनो पहले ही मैंने कार ड्राइव करना, जूडो और कराटे सीखा था।

चेतना ने दूसरा प्रश्न उछाला–आपके व्यापार धधा क्या चलता है ?

अपूर्व–वैसे व्यापार तो कुछ नहीं है। आजीविका के लिये "चन्द्रमुखी पाउडर" बनाते हैं उसी से घर खर्च भी चल जाता है। आपकी तरह मेरे कोई बगला, कार–मोटरे नहीं है।

चेतना–"आदमी कोई बगले और कार मोटरो से थोडे ही महान् हो जाता है।"

अपूर्व–"आज की दुनिया और फिर श्रीमत लोग तो उसी से मूल्याकन करते हैं। जिसके पास धन है, वह क्यो न जुआरी, शराबी व्यभिचारी, कोई भी क्यो न हो, खूब प्रतिष्ठा पाता है। और जिसके पास धन नहीं है, वह क्यो न सदाचारी, ग्रेज्युएट चरित्रवान हो, पर उसको कोई नहीं पूछता है।"

चेतना–"ऐसी बात नही है। आप ऐसा कहकर मुझे लज्जित मत करिये। आपने आज जो महान् काम किया है अपने जीवन को खतरे मे डालकर मेरी रक्षा की है उसके सामने हम तो कुछ भी नही है। इसका शुक्रिया अदा करने के लिये मेरे पास कोई शब्द ही नही। आप जैसे महान् व्यक्तियो से ही भारत का गौरव है।

अपूर्व–महानता तो कुछ नहीं, इन्सान के नाते यह मेरा कर्त्तव्य था। यदि मैं रक्षा नही करता तो अपने कर्त्तव्य से गिर जाता। हा, आपका दृष्टिकोण सम्पत्ति से व्यक्ति के मूल्याकन का न रहा हो, पर अधिकाश मैंने ऐसा ही देखा है।

चेतना को आज अपूर्व कुछ विलक्षण ही नजर आ रहा था। यद्यपि क्लास फैलो होने से चेतना को वह रोज क्लास मे दिख ही जाता था पर उस समय के देखने एव इस समय के देखने मे रात–दिन का अन्तर आ रहा था। चेतना की दृष्टि मे इस समय वह किसी फरिश्ते से कम न था। वैसे ही अपूर्व एक बहुत बडे जमींदार का बेटा था। देखने मे भी बहुत सुन्दर एव सुडौल था और सस्कारो की दृष्टि से भी सस्कारित था। यह उसके बोलचाल, रहन–सहन से स्पष्ट जाहिर हो रहा था। चेतना को उसकी बातो से अब समझ मे आया कि उसे आगे नहीं बिठाने का क्या कारण है ? अपूर्व यद्यपि पुराणपथी नहीं है तथापि अपने चरित्र को वह लोगो की दृष्टि मे नीचे गिराना नहीं चाहता है। किसी भी लडकी के साथ उसे घूमना भी पसन्द नहीं है।

चेतना के चेतना की गहराइयो मे अपूर्व की छवि आज अपूर्व प्रकार से गहराती चली गई। चेतना का बगला अब विशेष दूर नहीं था। चेतना ने अपूर्व से आग्रह किया–आपको बगले मे मेरे पापा के पास चलना होगा। मैं उन्हे बताऊगी कि आज भी भारत मे ऐसे–ऐसे महान पुरुष बैठे हुए हैं। पर अपूर्व इस बात के लिये कतई तैयार नहीं था। वह जानता था–बहुत अच्छी तरह से कि इन श्रेष्ठियो के विचार कैसे होते हैं ? भले चेतना के विचार सात्विक हो, पर इसके पिता श्रीमत हैं, उनके विचार भौतिकता से रगे होगे। उनकी दृष्टि मे अच्छे गुण आने वाले नहीं है, हा वे मुझे उपेक्षित दृष्टि से जरूर देखेगे। इसलिये अपूर्व ने साफ मना कर दिया मैं तुम्हारे पापा की बात तो दूर रही तुम्हारे बगले मे भी नहीं जाऊगा।

चेतना ने अत्यन्त आग्रह किया "नहीं ? आप ऐसा न सोचे। सभी श्रीमत एक से नहीं होते हैं। मेरे पिता वैसे नहीं, जैसा कि आपका दृष्टिकोण है, आप एक बार मिलकर देखले।

अपूर्व–"बहुत समव है, तुम्हारे पिता अच्छे हो उन पर सपत्ति का गुमान न हो पर मुझे उनसे मिलकर क्या करना है। मेरा काम तो मैंने कर दिया। मुझे अब जाने दो, देर हो गई मम्मी घर पर इन्तजार कर रही होगी।

चेतना ने उसे बहुत मनाने की कोशिश की पर यश का अनिच्छुक कर्त्तव्यप्रेमी अपूर्व, चेतना के बगले से दूर कार रोक कर और ओके करते हुए यह कहते चला गया कि अब तुम्हारा मन स्थिर हो गया होगा, बगला पास ही है, खुद ही गाडी ड्राइव करके ले जा सकती हो या फिर ड्राइवर को बुला लेना।

चेतना अपूर्व को देखती रह गई। उसकी लाइफ मे लडके तो अनेक आए और उसे आकर्षित करने के उन्होने भरसक प्रयास किये भी, किन्तु चेतना ने कभी भी उनकी तरफ नहीं झाका। उसके करेक्टर की छवि बहुत अच्छी रही है। पर आज जो लडका उसके सामने आया वह भी इतनी उपेक्षा करता रहा तो भी चेतना के दिल मे गहराई तक उतरता चला गया। आज तक वह किसी भी लडके पर आकर्षित नहीं हुई थी। यह पहला लडका है जिसको कि चेतना ने अपना दिल दे दिया।

अपूर्व देखते ही देखते अधेरे मे विलीन हो गया। पर चेतना के चैतन्य मे खलबली मचा गया। बहुत देर तक विचारो मे खोई–खोई चेतना कार मे ही बैठी रही। उसे ध्यान ही नहीं रहा कि कहा बैठी है। उसने आज पहली बार यह निर्णय लिया कि यदि इस जीवन मे साथी होगा तो वह अपूर्व ही होगा। दूसरा नहीं भले मैं जिन्दगी भर तक कुआरी रह जाऊ, पर मेरिज करूगी तो अपूर्व से ही। जो लडका अपने प्राणो से खेलकर भी मेरी रक्षा कर सकता है, वास्तव मे वही जीवन साथी हो सकता है। भले मुझे इसके लिये कितने ही सकटो, आपत्तियो का सामना करना पडे। दुनिया उलट जाय पर शादी तो मैं इसी से करूगी। यही मेरा सच्चा जीवन साथी है। अपूर्व मे परोपकारिता है पर इसके साथ ही वह

अध्ययनशील, कर्मशील भी पूरा है जबसे मैंने इसे कॉलेज मे देखा है, किसी भी लडकी से बातचीत करते नहीं देखा। किसी भी लडकी की ओर कामुक दृष्टि से ताकते नहीं देखा। इसे टाइम ही कहा है कॉलेज से छूटते ही धनुष से निकले तीर की तरह सीधा बाहर निकल जाता है। पढने मे बहुत होशियार है। देखने मे अतीव सुन्दर–स्मार्ट है। बोलने–चलने मे भी अतीव मृदु और व्यावहारिक है। सभी दृष्टियो से योग्य है, कमी है तो एक पैसे की ही है। पैसे की कमी कोई कमी नहीं है आज जो करोडपति है वह कगाल भी हो जाता है और जो कगाल है वह करोडपति भी हो जाता है। **दौलत तो आती-जाती रहती है पर सद्गुण जल्दी से आते नहीं है,** जो कि अपूर्व मे ही है। इसलिये जीवनसाथी तो मुझे इसी को बनाना है। इस प्रकार चेतना की विचारधारा चलती जा रही थी और न मालूम कब तक चलती रहती, पर पीछे से गाडी का होर्न सुनाई दिया और उसकी विचारधारा टूटी। उसे ध्यान आया "अहो, मेरी गाडी तो रास्ते के बीच खडी है। अपूर्व भी चला गया पर मुझे ध्यान ही नहीं आया।" वह जल्दी से पिछली सीट से निकलकर ड्राइविग सीट पर आ बैठी और गाडी को स्टार्ट कर अपने बगले मे गई।

घडी मे 11 बजने आए थे। चेतना के डेडी सेठ गिरधारीलालजी भोजन से निवृत हो, सोफासेट पर सुस्ता रहे थे। गाडी खडी करके चेतना ने बगले मे प्रवेश किया। घुसते ही डेडी से सामना हो गया।

"इतनी देर से कहा से आ रही हो, "सेठ गिरधारीलालजी ने चेतना से पहला प्रश्न किया।

"डेडी ! यह समझो कि मैं घर तो आ गई। यदि अपूर्व, समय पर नहीं आता तो मैं खत्म हो जाती।"

चेतना की बात सुनकर गिरधारीलालजी एकदम चौंके और बोले ऐसी क्या बात हो गई। कैसे खत्म हो जाती तू,,मेरे रहते। मेरी इकलौती सतान, तेरे लिये तो मैं सारी सम्पत्ति फूक दू।"

"पापा आपकी सम्पत्ति तो कहीं रह जाती। मेरे मरने के बाद सम्पत्ति मुझे वापस जिदा नहीं कर सकती।"

जब चेतना ने यह कहा तब गिरधारीलालजी बोले–"अरे ! ऐसी क्या घटना घट गई, जरा विस्तार से बतला"।

तब चेतना ने बीती हुई सारी घटना पिताजी को यथावत् सुनाई। अपूर्व के प्रति सेठ गिरधारीलालजी के मन मे भी सम्मान के भाव उभरे। वे बोले"–अपूर्व को फिर यहा तक क्यो नही लाई। मेरे पास लाती तो कुछ इनाम जरूर दे देता"। पिताजी के ये शब्द उसके हृदय को बेधते चले गए। वह बोली–"डेडी ! इसीलिये वह नही आया। उसने मुझे बतला दिया था कि **दौलतमंद लोग प्रत्येक चीज का अकन दौलत से करते है।** आपने भी वही किया। एक तरफ तो कह रहे थे, तुम्हारी जिन्दगी के लिये मैं सारी सम्पत्ति फूक दू और दूसरी तरफ जिसने मुझे बचाया उसे आप थोडा बहुत इनाम देकर छुट्टी कर देना चाहते हैं तो फिर मेरे जीवन का मूल्य क्या रहा ?"

चेतना की बात सुनकर सेठ गिरधारीलालजी बोले– "आखिर तू क्या चाहती है ? तू ही बतला दे मैं उसे क्या इनाम दू। तू कहे तो उसे पचास हजार रुपये दे दू।'

"डैडी ! आप जरा सम्पत्ति का नशा उतार कर फिर सोचिये कि उसने कितना बडा महान् काम किया है।" चेतना ने कहा।

"हा–हा किया है। इसमे कोई शक नही। पर अब उसके लिये अपन क्या करे ? "गिरधारीलालजी बोले।

"उसके लिये तो क्या किया जाये, वह तो कुछ लेना चाहता ही नहीं है, चाहता होता तो वह जरूर आपके पास आता लेकिन मुझे चाहिये, देगे आप कुछ ?"

चेतना की बात सुनकर गिरधारीलालजी बोले– "बोलो क्या चाहती हो, तुम्हारे लिये मैं सब कुछ करने के लिये तैयार हू।"

चेतना–"यदि ऐसा ही है तो आप मेरा विवाह उस लडके से कर दीजिये। आप यह भी साफ सुन ले कि आज मैंने यह निर्णय लिया है कि यदि मैं विवाह करूगी तो उस लडके से करुगी अन्यथा आजीवन अविवाहित रह जाऊगी।"

यह सुनते ही सेठ एकदम चौंके और बोले "यह नहीं हो सकता। उस फुटपाथिये छोकरे से मेरी प्यारी लडकी का विवाह करु ? कभी नहीं तुम्हारे लिये तो मैं करोडपति बाप के बेटे को ढूढ रहा हू, जो मेरी बच्ची को सुख से रख सके। उस फुटपाथिये से तुझे क्या मिलने वाला है। तुम्हारी जिन्दगी तो बिगडेगी सो बिगडेगी मेरी इज्जत भी मिट्टी मे मिल जाएगी। लोग क्या कहेगे कि एक भिखारी के साथ गिरधारीलाल ने अपनी इकलौती बेटी की शादी कर दी। लगता है तुम्हे उस फिरगी ने सब समझा–बुझाकर भेजा है। यह उसी की चाल है जो आज तू यह बोल रही है। यह तू नहीं वह करोडो के स्वप्न देखने वाला बोल रहा है मैं उसके स्वप्न को कभी साकार नहीं होने दूगा।"

"बस डेडी ! अभी तो कह रहे थे कि मैं तुम्हारे लिये सब कुछ करने को तैयार हू और अभी ही बदल गये। मैं माग तो आपसे कुछ नहीं रही। आप दे या न दे आपकी इच्छा है, मैं अपने जीवन साथी के लिये बात कह रही थी।" चेतना ने सेठ गिरधारीलालजी से कहा।

"तुम अभी बच्ची हो, तुम्हारे हित–अहित के लिये सोचना मेरा काम है। मेरे जीते जी तुम्हे मैं कुए मे नहीं धकेल सकता।" गिरधारीलाल जी बोले।

"डेडी ! अगर आपने मेरा विवाह दूसरे के साथ करने की कोशिश की तो आप यह साफ सुन लीजिये फिर मेरी यहा से डोली नहीं अर्थी उठेगी।"

चेतना के शब्दो को सुनकर सेठ गिरधारीलालजी एकदम भन्ना गए। "आजकल तू बहुत बोलने लगी है। ज्यादा लाड प्यार ने तुम्हे बिगाड दिया है। मेरी छूट का तुम नाजायज फायदा उठा रही हो। पर अब कान खोलकर सुनलो, कॉलेज से बगले और बगले से कॉलेज के अलावा कहीं नहीं जाओगी। कभी उस आवारे लडके से मिलने की कोशिश नहीं करोगी। मेरे आदमी तुम्हारी सदा निगरानी रखेगे। कभी भी उस लडके से मिली तो मेरे आदमी उस लडके की टाग तोडकर रख देगे।"

"डेडी ! यह भी निश्चित है कि यदि उसका कुछ भी बिगड गया तो उसका बाद मे, पहले आपकी बेटी का बिगडेगा। उसकी एक टाग

तोडी जायेगी तो आपकी बेटी की दोनो टागे टूटी हुई मिलेगी।" कहते–कहते चेतना सेठ गिरधारीलालजी के पास से हटकर अपने बेडरूम मे चली गई।

गिरधारीलाल माथा ठोककर बैठ गए। आजकल के छोकरे–छोकरियो, मा–बाप को तो कुछ समझते ही नहीं हैं। कॉलेज मे क्या पढते हैं, बस अपने को ही सबसे ज्यादा अक्लमद समझने लगते हैं। मा–बाप तो उन्हे शत्रु की तरह खटकने लगते हैं। इसे भी कॉलेज की हवा लग गई है। उस छोकरे का कैसा भूत सवार हो गया है इस पर सेठजी चेतना के जाने के बाद भी चिल्लाते जा रहे थे।

इतने मे चेतना की मम्मी वैशाली आ पहुची। वह बोली–"अजी ! क्या हो गया है आपको, इतने क्यो चिल्ला रहे हो ? सारे बगले को माथे पर ले लिया है। आसपास के लोग सुनेगे तो क्या कहेगे "?

वे अब बहुत कुछ कहेगे । अभी हुआ क्या है। तुम्हारी बेटी, हमारे नाम को मिट्टी मे मिला देगी। कहती है मैं उस आवारे छोकरे से शादी करूगी। जिसकी शक्ल भी मैंने नही देखी।" सेठजी बोले।

"अरे ! इतना क्या जोश खाते ही चेतना आखिर है तो बच्ची ही। उस छोकरे से प्रेम हो गया होगा तो वह उससे शादी करने के लिये कह रही है। थोडे दिन मे उसका प्रेम का भूत उतर जाएगा। फिर वह स्वत ही अपन कहेगे वैसा करेगी। पर इसके लिये इतना चिल्लाने की क्या जरूरत है ?"

सेठानी वैशाली ने सेठजी को जैसे–तैसे समझा कर शात किया और उन्हे शयनकक्ष मे ले गई।



(14)

अपूर्व ठीक समय पर कॉलेज पहुच चुका था। चेतना को आज कॉलेज पहुचने मे कुछ विलम्ब हो गया था। उसका पहला पीरियड मिस हो गया और दूसरा पीरियड वेकेण्ट होने से अपूर्व तो कॉलेज के लॉन मे जाकर जनरल नॉलेज की पुस्तक पढने बैठ गया। चेतना का मन आज उचटा हुआ था। वह सोचने लगी मैंने तो निर्णय ले लिया कि अपूर्व से ही विवाह करुगी। पर अपूर्व के क्या विचार हैं ? यह भी जानना जरुरी है। हो सकता है कि उसने किसी दूसरे के साथ विवाह करने का निश्चय कर लिया हो। पर जानू कैसे ? यह तो रुख ही नहीं मिलाता है। आज तक कभी इससे बात ही नहीं हुई। कल ही थोडी देर के लिये सयोगवश बात हुई थी। अभी वेकेण्ट पीरियड चल रहा है तो भी पुस्तक लेकर पढने के लिये बैठा हुआ है। ऐसी हालत मे इससे बात करना भी उचित नही है। दूसरी बात इसे यह अच्छा भी नही लगेगा क्योकि कल भी तो इसने मुझे गाडी मे इसलिये आगे नहीं बिठाया था कि लोग गलत न समझ बैठे तो इस समय इससे बात की जाय तो बहुत से लडके इधर–उधर घूम रहे हैं, जो यह देखकर व्यग्य भी कस सकते हैं। बहुत सम्भव है अपूर्व इस हरकत से नाराज भी हो जाय। अच्छा हो पत्र के माध्यम से ही बातचीत की जाय।

यह सोचकर चेतना भी लॉन के एक किनारे मे एकान्त मे जाकर बैठ गई और पत्र लिखने लगी–

प्रिय अपूर्व,

जबसे आपने मुझे मरते–मरते बचाया है तभी से आपकी स्वच्छ छवि मेरे दिल मे गहराती जा रही है। मुझे आपकी हर गतिविधि बहुत अच्छी लगी। मैंने कल रात ही निर्णय ले लिया है कि यदि विवाह करुगी तो केवल आपके साथ ही। अन्यथा आजीवन अविवाहित रहूगी। जिसने अपने प्राण खतरे मे डालकर भी मेरी रक्षा की है, वही मेरा सच्चा जीवन साथी हो सकता है। हा, यह तो मेरी पसन्द है और मैं अपनी पसद आप पर जबरदस्ती थोपना नहीं चाहती। एक तो आपने मेरी रक्षा की और एक मैं

आपको अपने लिये ही दबाऊ यह मेरी आत्मा कभी नहीं मान सकती। पर मैं यह जानना चाहती हू कि आपकी पसद क्या है ? आपने किसी अन्य के साथ विवाह करने का तो निर्णय नहीं ले लिया है ? यदि ऐसा कुछ हो तो आप साफ–साफ बतला दे। ताकि मैं आपके पथ मे बाधक न बन सकू। अपने सुख के लिये, मैं कभी भी आपके सुख मे बाधक नहीं बनूगी।

पत्र लिखने के बाद बहुत ही व्यवस्थित ढग से चेतना ने अपूर्व की पुस्तक मे रख दिया।

कॉलेज से छूटने के बाद रात को जब अपूर्व पढने के लिये बैठा तो उसमे पत्र पडा हुआ मिला। उसने पत्र खोलकर पूरा पढ डाला। फिलहाल अपूर्व इस चक्कर मे पडना नहीं चाहता था इसलिये वह सोचने लगा क्या किया जाय इसका। मैंने तो कभी ऐसी कोशिश ही नहीं की। पर बिना प्रयत्न किये ही झझट गले मे पड गई है। यद्यपि चेतना स्मार्ट, सुन्दर और चरित्रवान है। मुझे पसन्द भी है। तथापि अभी मैं इस चक्कर मे नहीं पडना चाहता। यदि मैं इन बातो मे पड गया तो फिर जिन कार्यों को करने के लिये मैंने प्रतिज्ञाए की थीं, वे पूरी नहीं हो सकेगी। इधर चेतना भले ही दौलत को महत्त्व नहीं देती हो पर उसके पिता तो देते ही होगे। ऐसी स्थिति मे बात को आगे बढाया जाना उचित नहीं है, क्योकि बात बढने पर सारी शक्ति इसी मे खर्च हो जाएगी। इसलिये इस विषय को अभी दबा ही देना चाहिये। यही सोचकर अपूर्व ने पत्र फाडकर फेक दिया और अपनी पढाई मे लग गया।

पाच–दस दिन बीत गए पर चेतना को अपूर्व की ओर से कोई जवाब नहीं मिला। इससे चेतना का मन और अधिक उचट गया। वह अपूर्व से बात भी करना चाहती थी पर कह नहीं पाती। चेतना ने सोचा कुछ भी हो अपना पुरुषार्थ नहीं छोडना चाहिये। कुछ न कुछ हल जरूर निकल आएगा। यही सोचकर उसने फिर एक पत्र लिखा–

प्रिय अपूर्व,

आपने पत्र तो जरूर पढ लिया होगा, पर उसका कोई जवाब नहीं दिया। हो सकता है आपने उस पत्र को रद्दी की टोकरी मे फेंक दिया हो या फिर आपने उसका जवाब देना उचित न समझा हो, पर मुझे इस बात

का पक्का विश्वास है कि जिसने मेरी बिगडती हुई जिदगी की रक्षा की है, वह व्यक्ति अपने हाथो से मेरी जिन्दगी को अन्धकारमय नहीं बनाएगा। मैं आपसे और कुछ नहीं चाहती हू केवल यस या नो मे जवाब चाहती हू। आप मेरी जिदगी के साथ खिलवाड नहीं करेगे। यही आशा है।

आपकी चेतना

इस पत्र को भी व्यवस्थित रूप से बन्द करके चेतना ने अपूर्व की उस पुस्तक मे रखा जिस पुस्तक को वह खाली पीरियड मे पढता था। ताकि चेतना देख सके कि पत्र उसके हाथ मे पडता है या नहीं। खाली पीरियड मे अपूर्व प्रतिदिन की तरह लॉन मे पढने बैठ गया। पुस्तक खोलते ही उसके हाथ मे पत्र आया। उसने पत्र को पढा। अच्छी तरह से पढने के बाद पुन पुस्तक मे रखकर के पुस्तक पढना प्रारम्भ कर दिया।

चेतना दूर से अपूर्व की एक–एक हरकत बडी ध्यान से देख रही थी। उसे यह तो पक्का यकीन हो गया कि पत्र को अपूर्व ने पढ जरूर लिया है पर उसका जवाब नही लिखा, हो सकता है अभी न लिखे। बाद मे घर जाकर लिखे। इसी विश्वास को सजोए चेतना भी अपने काम मे लग गई।

आश्चर्य ! पाच–दस दिन फिर बीत गए पर चेतना के पास इस दूसरे पत्र का भी कोई जवाब नहीं आया। क्योकि अपूर्व ने अपना कर्त्तव्य निश्चित कर रखा था। जब तक वह उसमे सफल न हो जाए तब तक वह इन प्रपचो मे पडना नहीं चाहता। पत्र का जवाब देने का मतलब पत्राचार बढाना था। इसलिये अपूर्व ने घर जाकर वह दूसरा पत्र भी फाड डाला। इधर चेतना को दूसरे पत्र का भी जवाब न मिलने से मन मे खलबली मच गई। बात क्या है ? अब उसने यह पक्का निश्चय कर लिया कि यह काम पत्रो से नही हो सकता है। अपूर्व बहुत स्मार्ट है, हो सकता है वह इन प्रपचो मे नहीं पडना चाहता हो। पर अब इससे कब और कहा मिला जाय ? यह जानने के लिये चेतना ने अपूर्व के दैनिक कार्यों की खोज करना प्रारम्भ कर दिया। यह कब कहा जाता है इसकी सारी खोज करने लगी। उसे ज्ञात हुआ कि रविवार शाम को सात बजे अपूर्व बोरीवली आ जाता है। चेतना ने यही टाइम मिलने का उचित समझा।

चेतना अपनी गाडी लेकर बोरीवली पहुच गई और जिस रास्ते से अपूर्व आने वाला था उसी रास्ते मे किनारे पर गाडी खडी कर दी और गाडी मे बैठे–बैठे ही उसका इन्तजार करने लगी। ठीक सात बजे अपूर्व उसी रास्ते से निकल रहा था। चेतना ने उसे देख लिया। अपूर्व को इस बात का बिल्कुल ध्यान नही था कि चेतना यहा होगी। वह सहज रूप से ही उसकी गाडी के पास से ही निकलने लगा। चेतना ने अपूर्व को आवाज लगाई अपूर्व अपूर्व ने पीछे देखा, तब उसे ध्यान आया, अरे यह तो चेतना की ही गाडी है और वह आवाज लगा रही है। अपूर्व सब कुछ समझ गया। सोचने लगा यह तो बडी समस्या खडी हो गई। अपूर्व को चेतना से इस समय बात करना कतई अच्छा नही लग रहा था। इसलिये वह चेतना की बात का कुछ जवाब दिये बिना आगे बढ गया। पर चेतना उसे कहा छोडने वाली थी।

वह भी गाडी से निकलकर उसके पीछे–पीछे चल दी और बोली देखिये आप दो मिनिट मेरी बात सुन लीजिये फिर आप भले चले जाना। पर मेरी बात सुने बिना आज मैं आपको जाने नहीं दूगी, यह मेरा निश्चय है। लोग भी इधर–उधर जा रहे हैं। वे भी इधर ही देख रहे हैं। अच्छा हो कि आप रुक जाय। चेतना की यह बात सुनते ही अपूर्व ने तुरन्त आसपास देखा वस्तुत लोग उसे देख रहे थे। वह सोचने लगा, यदि मैं नहीं रुका तो आज बात बढ सकती है। क्योकि आगे मेरी परिचित सोसायटी है। लोग यह नाटक देखेगे तो क्या कहेगे। इसलिये यहीं रुकना अच्छा है। अपूर्व रुक गया तब चेतना ने कहा–देखिये, यहा मेनरोड पर बात करना अच्छा नहीं। आप मेरी गाडी मे बैठ जाइये। कुछ ही दूरी पर नेशनल पार्क मे चलकर बात करेगे। अपूर्व को चेतना की बात माननी पडी। क्योकि इसके अलावा कोई चारा नहीं था। चेतना ने ड्राइविग–सीट सम्भाली। वह जानती थी कि अपूर्व अगली सीट पर बैठेगा नही, इसलिये उसने पिछला दरवाजा ही खोला। अपूर्व उसमे बैठ गया। चेतना ने एक्सीलेटर पर दबाव डाला। कार हवा से बाते करने लगी। कुछ ही समय मे वे नेशनल पार्क मे पहुच गये। एक तरफ गाडी रखकर दोनो सामने स्थित चट्टान पर जा बैठे।

चेतना ने ही बात प्रारम्भ की–पता नहीं आप किन तत्त्वो से बने हैं। इस्पात सा हृदय है आपका। दो–दो पत्र दिये आपको, पर आपकी तरफ से एक भी पत्र का जवाब नही। कहा तो आपने उन हैवानो से बचाकर मेरे जीवन को प्रकाशमय बनाया और अब आप यह क्या करने जा रहे हैं। क्या मेरी आत्मा को तडफायेगे ?"

अपूर्व–"देखो चेतना ! अभी मुझे बहुत काम करने हैं इसलिये मैं ऐसे प्रपचो मे पडना नहीं चाहता।"

चेतना–"मैं कहा मना कर रही हू। आप अपना काम जरूर करिये। मैं तो आपसे एक दो बात पूछने आई थी। बस उसका आप जवाब दे दीजिये ज्यादा टाइम मैं आपका बिगाडना नहीं चाहती।"

अपूर्व–"तुम गलत समझ गई हो। मैं इस टाइम कोई बात नहीं करता। इस मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि मैं अभी इस प्रेम के चक्कर मे नहीं पडना चाहता।"

चेतना–"मैं इसके लिये भी आपको बाध्य नहीं करती। पर मेरा तो आपसे यही पूछना है कि प्रथम तो आप यह स्पष्ट बतला दे, आपने विवाह के लिये किसी अन्य लडकी को तो नहीं चुन रखा है। यदि चुन रखा हो तो आप नि सकोच बतला दे मुझे उसमे भी खुशी होगी"।

अपूर्व–" नहीं, अभी मैंने ऐसा कोई निर्णय नहीं लिया है।"

चेतना–"दूसरी बात यह है कि मैं आपको पसन्द हू या नहीं। सच–सच बतलाइयेगा।"

अपूर्व–"मेरी पसदगी या नापसदगी से कुछ नहीं होता। तुम एक बडे बाप की बेटी हो। कहा तुम और कहा मैं एक झोपड पट्टी मे रहने वाला, अभी ही बोरीवली मे एक साधारण से फ्लेट मे रहने लगा हू। तुम्हारे डैडी, मुझसे शादी ही नहीं होने देगे।"

चेतना–"यह बात आप जाने दो। आप जैसे साथी को पाने के लिये मैं दुनिया से लड सकती हू। पिताजी को भी एक दिन मानना पडेगा। उन सबको मनाना मेरा काम है, पर आप यह बतलाइये कि मैं आपको पसन्द हू या नहीं ?"

अपूर्व–"अगर पसदगी की बात पूछती हो तो तुम्हारे जैसी स्मार्ट, चरित्रवान, जीवन सगिनी मुझे कहा मिलेगी ?" अपूर्व के मुह से यह सुनते ही चेतना का गाल हर्ष एव लज्जा के मारे लाल हो गया। अपूर्व ने आगे बोलते हुए कहा–"पर मैं अभी शादी नहीं करना चाहता हू।"

चेतना–"कोई बात नहीं मैं आपके लिये जिन्दगी भर इन्तजार करने के लिये तैयार हू। पर आप यह भी बतला दीजिये कि आपका विचार शादी का कब है ?"

अपूर्व–"अभी मेरी एज बीस साल की है, पच्चीस की उम्र के पहले मैं शादी नहीं करूगा।"

चेतना–"बहुत अच्छा। अब मुझे पक्का यकीन है कि आप कुछ कहे या न कहे मुझे अधकार मे ढकेलकर दूसरे का हाथ आप कभी नहीं पकडेगे। मेरी प्रतिज्ञा तो आपको ज्ञात है ही मैं विवाह करूगी तो आपसे ही, अन्यथा जिदगी भर अविवाहित रह जाऊगी।"

इस सक्षिप्त वार्ता के बाद दोनो ही उठ चले। अपूर्व का मन वस्तुत बहुत कन्ट्रोल मे था। वह आजकल के लडको जैसा नहीं था। इस एकान्त के क्षणो मे चेतना का सर्व समर्पण होते हुए भी अपूर्व ने उसका स्पर्श तक नहीं किया। वह तो बात भी नहीं करना चाहता था। यह तो एक विवशता थी कि उसे बातचीत करनी पडी। चेतना अपूर्व को कार मे बिठाकर उनके फ्लेट तक छोडना चाहती थी पर अपूर्व नेशनल पार्क के बाहर ही उतर गया। चेतना अपनी मजिल की ओर बढ चली।

सेठ गिरधारीलालजी के चेतना इकलौती सतान थी। वे उसके पीछे बडे–बडे अरमान सजोए थे। पर चेतना के मुह से उस फटेहाल युवक के साथ विवाह का स्पष्ट निर्णय सुनकर दु खी हो गए थे। अब वे चेतना पर कडी निगरानी रखने लगे थे। वे चेतना को उस लडके से मिलने का मौका नहीं देना चाहते थे। बहुत दिनो तक निगरानी रखने पर जब चेतना को किसी लडके से मिलते नहीं देखा तो उन्होने चौकसी करना कुछ कम कर दिया था और इसी बीच चेतना और अपूर्व का मिलन भी हो गया था। बातचीत के बाद चेतना एकदम निश्चित हो गई थी। क्योकि उसके मन

मे यह निर्णय तो हो गया कि पाच वर्ष तक तो अपूर्व विवाह करने वाला नहीं है। तब तक कोई भी बात डैडी–मम्मी के सामने छेडना निरर्थक होगा। इसलिये वह अपनी मस्ती मे ही रहने लगी।

चेतना की प्रसनन्नता को देखकर सेठ गिरधारीलालजी को विश्वास हो गया कि चेतना के मन पर जो उस लडके का भूत सवार था, वह अब उतर गया है। यही सोचकर वे श्रीमत लडको की खोज करने लगे। इसी खोज मे उन्होने पाच–दस लडको का चयन भी कर लिया और उनके फोटो ले लिये, उन फोटुओ को चेतना के स्टेडी रूम मे टेबुल पर रख दिया। इस आशा से कि चेतना पसन्द करले।

चार–पाच दिन व्यतीत हो गए पर चेतना की ओर से सेठ गिरधारीलालजी को कोई प्रतिक्रिया नही मिली। आखिर एक दिन डाइनिग टेबुल पर जब सेठ गिरधारीलालजी उनकी धर्मपत्नी वैशाली और इकलौती सतान चेतना बैठे हुए थे। उस समय गिरधारीलालजी ने बात चला दी वैशाली को सम्बोधित करके बोले–"देखो। अब अपनी बेटी सयानी हो गई। पढ–लिखकर ग्रेज्युएट भी हो गई है। इसलिये अब इसका विवाह कर देना चाहिये।"

वैशाली–"बात तो आप ठीक कर रहे हैं। पर लडका अपनी लडकी की तरह सुन्दर और स्मार्ट होना चाहिये। आपने तो अभी तक खोज ही नहीं की है। पहले आप खोज करे फिर अपन उसमे से किसी को पसन्द करेगे।"

गिरधारीलालजी–"अरे तुम तो कैसी बात करती हो। क्या मैं अपनी बेटी के लिये योग्य वर की खोज में चितित नहीं हू? तुम तो बगले मे बैठी रहती हो। तुम्हे क्या मालूम मैंने इन दिनो मे बडे–बडे श्रीमतो के होशियार लडको की खोज की है और उनके फोटो भी ले आया हू।"

वैशाली–"तो फिर अभी तक आपने वे फोटो बतलाए नहीं ?"

गिरधारीलालजी–"क्यो नहीं। मैं तो जब फोटो लाया था तभी चेतना के स्टेडी रूम मे रख चुका हू। आज उस बात को दस दिन हो गए। पर चेतना की अब तक कोई प्रतिक्रिया नही मिली।"

वैशाली–"अहो ! तब तो आप बाप–बेटी मे ही गुपचुप बाते चल रही हैं। मेरे को तो आपने कुछ बतलाया ही नही, फोटो भी नहीं दिखलाए।" चेतना की तरफ मुखातिब होते हुए वैशाली बोली–अरे बेटी ! तुमने भी मुझे कुछ नहीं बतलाया। वे फोटो कहा हैं जरा मुझे भी तो बता तो सही, मैं भी देखू कि तुमने कौनसा वर पसन्द किया है ?"

चेतना, मम्मी–डैडी की बातचीत को बडी शाति से सुन रही थी। सेठ गिरधारीलालजी ने जब उसके रूम मे फोटो रखे थे तभी उसने देख भी लिये थे और वह इसका तात्पर्य भी समझ गई थी। पर उसे किसी से शादी करनी ही नही थी, तब वह क्यो बोलती ! वह यही सोचकर–चुप रह गई थी कि मम्मी–डैडी जब साक्षात् बात करेगे तभी कुछ कहूगी। आज वह अवसर आ चुका था। वैशाली ने चेतना से पूछ भी लिया। तब चेतना ने रुखा–सा जवाब दिया–"हा मेरे स्टडी रूम मे टेबल पर कुछ फोटो पडे तो थे।" "तब क्या तुमने उन्हे देखे नहीं ?"वैशाली ने प्रश्न किया।

"मैंने तो ऐसे ही सरसरी दृष्टि से देखकर दराज मे रख दिये, सोचा किसी के होगे। जिसके भी होगे वह इन्हे स्वत ही ले जाएगा। "चेतना के इस प्रत्युत्तर मे वैशाली ने कहा–"बडी भोली बन रही हो। इतने फोटो और वे भी तुम्हारे रूम मे टेबुल पर और तुम समझ नहीं पाई कि यह क्यो हैं। खैर चलो अभी ही इन्हे लेकर आओ। हम भी देखते हैं कि तुम्हारे पापा कौन से फोटो लाए हैं। फिर पसन्द करेगे।" मम्मी के यह कहने पर चेतना उठी और दराज से वह फोटुओ वाला लिफाफा लेकर मम्मी के हाथ मे रख दिया। मम्मी ने चेतना को दिखाते हुए फोटो देखना आरम्भ किया। किसी मे क्या कमी तो किसी मे क्या कमी बतलाती हुई कितने ही फोटो को रद्द कर दिया। आखिर उसे दो फोटो पसन्द आए हा ये दोनो लडके सुन्दर और होशियार नजर आ रहे थे। इनमे से किसको चयन करना, यह हमारी बेटी करेगी। यह कहते हुए वे दोनो फोटो वैशाली ने चेतना को थमाने चाहे "लो बेटी देखो इन दोनो मे तुम्हे कौनसा अभीष्ट है ?"

चेतना का वही रूखा–सा स्वर था–"मुझे नहीं देखने फोटो।

वैशाली ने कहा– "अरे ! तुम्हे क्या हो गया ? जरा देख तो सही कितने सुन्दर और योग्य हैं ये !"

चेतना–" होगे पर मुझे नहीं चाहिये ।"

वैशाली– "फिर तुम्हे कौन–सा व्यक्ति योग्य लगता है। तुम्हारे पिता ने शहर भर को छान मारा तुम्हारे लिये और तुमको जो पसन्द ही नहीं आ रहे ? फिर क्या पसन्द है तुझे ?"

चेतना– "मेरे पसन्द ना पसन्द की बात ही कहा रह जाती है। आप तो मुझे कोई पशु समझते हैं जो जिसके यहा चाहे उसी खूटे से बाध देना चाहते हैं"। चेतना के इन कटु वचनो को सुनकर वैशाली ने आर्तहृदय से कहा–"अरे बेटी ! तुम ऐसा क्यो सोचती हो। क्या हम तुम्हारे शत्रु हैं। कोई भी मा–बाप ऐसे नही होगे, जो अपनी सन्तान का अहित चाहे। फिर तुम तो हमारी इकलौती सन्तान हो, हम तो तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य के लिये ही सब कुछ कर रहे हैं।"

"तू ही बता, ऐसा कौनसा लडका है ?" वैशाली ने कहा।

"क्या बताऊ, यदि मैं कुछ कहने जाती हू तो आप लोग गुस्से से भर जाते हैं और अट–शट बोलने लगते हैं।" चेतना ने कहा।

तब वैशाली बोली–"ऐसी बात नहीं है। तुम अपनी पसन्द तो बताओ। किसे पसन्द किया है तुमने ?"

चेतना–"अगर मेरी पसन्द सुनना चाहो तो मेरी पसद और निर्णय तो उसी दिन हो गया जिस दिन मुझे उस लडके ने हैवानो से बचाया था। मेरा विवाह होगा तो उसी से होगा।"

यह सुनते ही सेठ गिरधारीलालजी फिर भडक उठे, "कैसी नादान छोकरी है। कुछ भी समझ नही है। किस भिखारी के पीछे पडी है। हम तो दिन–रात एक कर रहे हैं, इसके योग्य वर के लिये और यह किसी भिखारी के साथ विवाह करने का कह रही है। यह विवाह मेरे जीते जी नहीं हो सकता। अपनी इज्जत मे मिट्टी मे मिलाना नहीं चाहता।" बात पुन उग्र रूप धारण करने लगी तो वैशाली ने बीच–बचाव किया और चेतना को समझाते हुए बोली–"देखो बेटी कुछ तो सोचो ! वह लडका कैसा है, क्या है ? हमने तो देखा भी नही है। कुलवश भी उसका कैसा है ? फिर झोपडपट्टी मे रहने वालो के विचार भी अच्छे नहीं होते हैं। वह तुम्हे कभी सुख नहीं दे सकता। हम जो तुम्हारे लिये सोच रहे हैं वह

उचित है। तुम्हे ऐसी नादानी नहीं करनी चाहिये। देखो यह लडका ठीक है, यह तुम्हारे योग्य भी है, सम्पन्न भी है। तुम इसके घर सुख से रहोगी।"

चेतना–"मैंने कहा ना मम्मी ! आपको मेरी बात पसन्द नहीं हैं। आप अपनी ही जमाना चाहते हैं।" चेतना कुछ सोचकर–यो ही बात बढ रही है। अपूर्व तो अभी पाच वर्ष शादी करने वाला नहीं है तो फिर हठ करने से क्या लाभ। अभी तो बात टाल देनी चाहिये। जब विवाह होगा तब सोचेगे। यही सोचकर चेतना ने कहा–"वैसे भी विवाह करने की मेरी इच्छा भी नही है। अभी तो मैं आपके पास रहना चाहती हू।" वातावरण को थोडा सा हल्का बनाने के लिये चेतना बोली–"क्या मैं अभी से आपको भारभूत लगने लगी हू ? जो आप मुझे घर से निकालने की जल्दी कर रहे हैं।" चेतना की यह बात सुनकर उसके मम्मी–डैडी दोनो एक साथ बोले–"अरे तुम यह क्या कहती हो। हम तुझे अपनी आखो से दूर करना ही नहीं चाहते हैं। यह तो हम दिल पर पत्थर रखकर कार्य कर रहे हैं। क्योकि यह लौकिक रीति–रिवाज है। तुम्हारे जाने के बाद हमारे पर क्या बीतेगी यह तो हम ही जानते हैं।"

"तो मम्मी–डैडी ! मेरा विचार अभी शादी करने का नहीं है।"

लेकिन बेटी तुम अब अठारह वर्ष की हो चुकी हो। इस स्थिति मे भी विवाह नहीं करेगे तो लोग क्या कहेगे। फिर हमारी जिन्दगी का भी कोई भरोसा नहीं। इसलिये हम यह कार्य शीघ्र ही कर देना चाहते हैं।" सेठ गिरधारीलालजी ने चेतना को समझाया।

"पर पिताजी अभी मेरी कोई विशेष उम्र नहीं है। लोग तो पच्चीस वर्ष की उम्र मे भी शादी करते हैं। वैसे मैं ज्यादा नहीं तो कम से कम पाच वर्ष तो शादी नहीं करना चाहती। इसलिये अभी आपको यह विचार स्थगित कर देना चाहिये। अभी तो मैं आपके पास ही रहना चाहती हू।"

इस बीच वैशाली बोली–"बेटी ! तुम्हारा कहना ठीक है। हम तुम्हे विवाह करने के बाद भी हमारे पास रख लेगे पर विवाह तुम्हे कर लेना चाहिये।"

"मम्मी ! अभी मेरी शादी करने का बिल्कुल मूड नहीं है। ऐसी स्थिति मे यदि आप लोग जबरदस्ती करेगे तो उसका परिणाम अच्छा नहीं

निकलेगा। शादी होने के बाद ज्यादा पीहर मे रहना भी तो अपवाद का विषय बनता है। इसलिये मेरी आपसे एक ही प्रार्थना है कि कम से कम पाच वर्ष तक तो आप मेरे विवाह का विचार ही छोड दीजिये।"

वैसे भी अभी चेतना की कोई विशेष उम्र नही थी। सेठ गिरधारीलालजी और वैशाली के इकलौती सतान होने से वे जल्दी कर रहे थे। पर जब चेतना का विचार अभी विवाह करने का बिल्कुल ही नहीं देखा तो वे चुप रह गए। सोचा चलो शादी का विचार कुछ समय के लिये स्थगित करने पर हो सकता है इसके दिमाग मे से उस फुटपाथिया युवक का विचार निकल जाय। गिरधारीलालजी और वैशाली अपने दाव–पेच खेल रहे थे और चेतना अपना खेल खेल रही थी।

सेठ गिरधारीलालजी और वैशाली का यह नाटक पूर्व नियोजित था। वैशाली से कोई बात छिपी नही थी, पर चेतना का मन टटोलने के लिये यह सब किया गया था। यद्यपि वे इसमे सक्सेस तो नहीं हो सके, फिर भी सतुष्ट जरूर हुए। सोचने लगे आज नहीं तो कल यह जरूर मान जाएगी और इतने दिनो मे उस युवक की सगति भी इसे नहीं मिलेगी तो स्वत ही इसका आकर्षण भी समाप्त हो जाएगा। इधर चेतना ने पाच वर्ष तक विवाह पर रोक लगाकर अपनी दिशा मे एक कदम आगे बढा ही दिया था, फिलहाल घर का वातावरण जो भारी–2 सा बना हुआ था, वह शात हो गया और सभी के दिन प्रसन्नता के साथ व्यतीत होने लगे।



(15)

अपूर्व के साथ इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी जैसे कि उसके साथ कुछ घटना घटी ही न हो। ऐसे सामान्य रूप से ही वह रहने लगा। घर पर आकर भी उसने चन्द्रमुखी रामसिह को कुछ भी नही बताया। इस बात को फिलहाल उसने अपने दिमाग से निकाल दी और तन्मयता के साथ अपने लक्ष्यानुसार कार्य मे गतिशील हो गया। "चन्द्रमुखी पाउडर' की खपत बम्बई मे ही नहीं आसपास के एरिये मे भी निरन्तर बढती जा रही थी। क्योकि कम पैसे मे लोगो को असली माल मिलता था। पाउडर की ज्यादा माग आने से अपूर्व के काम भी अधिक बढने लगा। अब यह काम उसके मम्मी–पापा अकेले नही सम्भाल सकते थे और अपूर्व को इतना टाइम नहीं था कि वह पाउडर निर्माण का काम सम्भाल सके। इसलिये उसने तीन–चार आदमी रख लिये जो उसके मम्मी–पापा की देखरेख में सारा काम सम्भाल लेते थे। अपूर्व की जिन्दगी तेज रफ्तार के साथ आगे बढ रही थी। न तो चेतना ने कभी अपूर्व से मिलने का ही प्रयास किया और अपूर्व के मिलने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था। सभी अपनी–अपनी मजिल तय करते जा रहे थे। चेतना यद्यपि अपूर्व से मिलती तो नहीं थी पर अपूर्व की प्रत्येक गतिविधि पर उसका पूरा ध्यान था। बोरीवली उसकी फ्रेड भी रहती थी। उससे चेतना ने घनिष्ठ सबध स्थापित किया और फिर उसे दिल खोलकर सब कुछ बता दिया और उसे समझा दिया कि देख अगर मेरी हितैषी हो तो तुम इस अपूर्व का पूरा ध्यान रखना, इसकी प्रत्येक गतिविधि को दूर से देखते रहना बन सके तो इसके माता–पिता से मिलकर परिचय कर लो। फिर उसके फ्लेट पर भी बराबर जाती रहो तो अपूर्व की सारी रिपोर्ट मिलती रहेगी। चेतना की फ्रेण्ड शालिनी ने उसे विश्वास दिलाया बोली–"तुम्हारे लिये मैं सब कुछ करूगी, तुम निश्चिन्त रहो। मैं हर बात की रिपोर्ट तुझे देती रहूगी।" शालिनी ने भी वही किया, उसने चन्द्रमुखी से अच्छा–खासा परिचय कर लिया और जब तक उसके घर भी आती–जाती रहती। अपूर्व के सबध मे जानकारी लेती रहती। एक दिन शालिनी ने बात ही बात मे पूछ लिया "आप अपूर्व की शादी क्यो नहीं कर देती ? अब तो वह योग्य हो गया है।" यह प्रश्न

पूछने के पीछे शालिनी का रहस्य था कि हो सकता है अपूर्व ने चेतना को पाच वर्ष का कहकर भरमा दिया हो और स्वय किसी दूसरी से शादी करने का विचार रखता हो। पर चन्द्रमुखी ने साफ–साफ बतलाया–"शालिनी ! मैंने तो अपूर्व को विवाह करने के लिये बहुत कहा पर वह पच्चीस वर्ष की उम्र के पहले विवाह ही नहीं करना चाहता है।" अब तो शालिनी को विश्वास हो गया कि अपूर्व का चेतना के सामने कहना सच ही था। उसने इस बात से चेतना को भी अवगत करवा दिया और यह विश्वास दिला दिया कि अपूर्व अवश्य ही तुम्हारे से विवाह करेगा।

अपूर्व का इजीनियरिंग की परीक्षा का अतिम वर्ष चल रहा था। वह बडी तन्मयता के साथ पढाई करने मे लगा हुआ था। अतिम वर्ष मे अच्छे अको से पास होने के लिये वह कारो की सफाई करना भी छोड देना चाहता था। इसीलिये एक दिन वह कमल सेठ के पास पहुचा और कहा–"सेठ साहब ! अब मैं आपकी कार साफ नहीं कर सकता।"

"क्यो क्या बात हुई ?" कमल सेठ ने कहा।

अपूर्व–"और कुछ नही साहब मैं इजीनियरिंग की परीक्षा के अन्तिम वर्ष मे चल रहा हू। इसलिये पढाई मे अधिक से अधिक समय लगाना चाहता हू।

कमल सेठ– "लेकिन फिर तुम्हारा घर खर्च कैसे चलेगा ?"

अपूर्व–"साहब ! मैंने साइड धन्धा भी चला रखा है चन्द्रमुखी पाउडर बनाता हू। उससे अच्छी इन्कम हो जाती है, उससे घर खर्च निकल जाता है।"

कमल सेठ–"अरे चन्द्रमुखी पाउडर का तो बाजार मे, घरो मे बहुत प्रचार है उससे तो तुम्हे अच्छी इन्कम होती होगी ?"

अपूर्व–"हा साहब !" अपूर्व का सक्षिप्त जवाब था।

कमल सेठ–"फिर तुम इतने वर्ष तक कारो की सफाई ही क्यो करते रहे ?"

अपूर्व–"साहब ! वह धन्धा तो साइड का है वह तो अब विकसित हुआ है। प्रारम्भ का धन्धा तो मेरा कारो की सफाई का ही रहा है। इससे ही मेरी उन्नति हुई है। दूसरी बात इससे शारीरिक परिश्रम भी अच्छा हो

जाता है। शरीर मे स्फूर्ति रहती है। एक पन्थ दो काम। इसलिये मैंने अब तक यह काम नहीं छोडा।"

अपूर्व की बात को सुन कमल सेठ बहुत अतीत मे चले गए। सोचने लगे--अहो एक दिन तो वो था जब इसके पास कुछ नहीं था, कार की सफाई करने आया था और आज इसने लाखो की सम्पत्ति बना ली है और पढाई भी बराबर कर रहा है। बुद्धि से बहुत तेज लगता है। हर काम मे इसने प्रामाणिकता नहीं छोडी। कार की सफाई भी ईमानदारी से करता रहा और 'चन्द्रमुखी पाउडर' भी असली ही बनाता है, कभी नकली वस्तु नहीं मिलाई। इसी का परिणाम है कि आज इसने इस उम्र मे भी अच्छी उन्नति करली है। ऐसे ईमानदार, होशियार लडके मिलना बहुत ही मुश्किल है। यदि यह मेरे डायमण्ड के धन्धे मे लग जाय तो मेरा धन्धा चमक सकता है। यही सोचकर कमल सेठ ने अपूर्व से कहा--"देखो अपूर्व ! हम तुम्हारी बुद्धिमता, कार्यकुशलता के कायल हैं। हम तुम्हे अपने डायमड के धन्धे मे लगाना चाहते हैं। हमारे यहा विदेश से कच्चा माल आता है और यहा हीरे आदि बनाकर पुन विदेश जाता है। तुम इस काम मे होशियार हो जाओ। मेरा विश्वास है कि तुम यह काम कर सकोगे। बोलो करोगे ?"

अपूर्व ने कहा--"आपका कहना ठीक है पर अभी तो मैं इजीनियरिंग की परीक्षा पास करना चाहता हू।"

कमल सेठ--"जरूर--जरूर अभी तो तुम जा सकते हो। परीक्षा देने के बाद जरूर आना। मैं जानता हू कि तुम्हारे पास काम बहुत है। तुम वैसे भी बहुत पैसे कमा सकते हो। और इधर डायमड के काम मे नये--नये रहोगे। फिर भी मैं तुम्हारी बुद्धिमत्ता को देखते हुए दो हजार रुपये महीना दे दूगा और जब तुम इस कार्य मे होशियार हो जाओगे तब तुम्हे पार्टनर बना दूगा।

"बहुत अच्छा साहब ! अभी तो मैं जा रहा हू।"

यह कहकर प्रमाण करते हुए अपूर्व चला गया। वैसे उसने कमल सेठ के सामने कोई दिलचस्पी नहीं बताई किन्तु मन मे जरूर विचार किया क्यो न डायमड का धन्धा सीख लिया जाय। इसमे इन्कम भी बहुत होती

है। मौका भी अच्छा है। दो हजार रुपये महीना तो सेठ दे ही देगा। फिर होगा तो करेगे नहीं तो छोड देगे। कुछ पैसे इकट्ठे होने पर कोई फैक्ट्री खरीदी जा सकती है। इन्हीं विचारो मे वह अपने फ्लेट बोरीवली पहुँच गया और बडी तन्मयता के साथ पढाई मे जुट गया। अभी उसका एक ही लक्ष्य था, अधिक से अधिक पढाई करना और परीक्षा मे अच्छे नम्बर लाना। आखिर परीक्षा भी आ गई। अपूर्व के सभी पेपर बहुत अच्छे गये। दो महीने बाद रिजल्ट भी घोषित हो गया। हा वह अपने चाचा कृष्णसिह की तरह सभी छात्रो मे प्रथम तो नहीं आया पर बहुत अच्छे अको मे उत्तीर्ण हुआ। डिग्री कार्ड लेकर वह सीधा अपने फ्लेट पर पहुचा और मम्मी–डैडी को प्रणाम कर डिग्री कार्ड उनके चरणो मे रख दिया।

आज रामसिह और चन्द्रमुखी को एक अनिर्वचनीय सुख की अनुभूति हो रही थी। क्योकि आज उनका लडका अपूर्व इजीनियरिंग की परीक्षा मे अच्छे अको से उत्तीर्ण हो चुका था। रामसिह और चन्द्रमुखी ने दिलोजान से अपूर्व को स्नेह दिया। आज उनके हृदय का टुकडा सुयोग्य व्यक्ति हो चुका था।

स्नेह के कुछ क्षणो के बाद अपूर्व को एक पत्र तथा सूट का कपडा देते हुए कहा–ले यह तुम्हारे पास होने की बधाई भी आ पहुची है।

"कौन आया मम्मी ? साश्चर्य से अपूर्व ने पूछा।

अरे अपने पास मे जो शालिनी नाम की लडकी रहती है वह देकर गई। उसका कहना था कि मेरी एक सहेली ने यह पत्र और सूट का कपडा अपूर्व को देने के लिये भेजा है।

अपूर्व ने सोचा–"शालिनी की सहेली कौन है और वह मुझे कैसे जानती है ? मेरे लिये यह बधाई क्यो भेजी ?" ऐसे एक नहीं अनेक प्रश्न अपूर्व के दिल–दिमाग मे चक्कर काटने लगे। फिर उसने जानकारी पाने के लिये जल्दी से पत्र उठाकर खोलकर उसे पढना प्रारम्भ कर दिया–

प्राणेश्वर अपूर्व,

आज मुझे अकथ आनन्द की अनुभूति हो रही है कि मेरे हृदयहार ने अपनी पढाई का लक्ष्य बहुत अच्छे तरीके से पूर्ण कर लिया है। मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि आपने 80 प्रतिशत अको से परीक्षा पास की है। इसके

लिये आपको दिलोजान से बहुत–2 बधाई। आपके अगले लक्ष्य भी शीघ्र ही पूर्ण हो। यही मगलमयी कामना है। निरन्तर स्मृति एव अविरल इन्तजार के साथ।

आपकी चेतना

पत्र को पढने के साथ ही अपूर्व के मस्तिष्क पर दो वर्ष पुरानी घटना तैर गई। उसे यह समझते देर नहीं लगी कि यह चेतना वही है, जिसने मेरे साथ विवाह करने की प्रतिज्ञा की है। अहो ! आज दो वर्ष हो गए उसने न तो मेरे से कभी मिलने की चेष्टा की और न कभी पत्राचार ही किया। मैंने तो सोचा–वह भूल गई होगी। पर नहीं आज भी वह अपनी प्रतिज्ञा पर कायम है पर धैर्यशील भी कितने गजब की है कि मैंने पाच वर्ष का कहा तो उसने प्रसन्नता के साथ स्वीकार कर लिया। फिर बार–2 मिलकर साधारण लडकियो की तरह मेरे से प्रेमालाप करने की कभी भी कोशिश भी नहीं की। वस्तुत चेतना सच्चरित्र सुशील एव विचारो की पक्की है निश्चय ही यह मेरे लिये योग्य है। पर इसका विवाह मेरे साथ कैसे हो ? खैर अभी भी मुझे तीन वर्ष और विवाह नही करना है। फिर अभी इस विषय मे विचार करने से कोई फायदा नहीं है।

कुछ दिन तो अपूर्व ने यो ही विश्राति से निकाल दिये। इसके बाद वह अपनी भावी योजना पर गम्भीरता से विचार करने लगा। ठीक समय पर उसे कमल सेठ की बात भी याद आ गई। कमल सेठ का आग्रह डायमण्ड मे काम करने का था। अपूर्व ने सोचा यद्यपि मैं दूसरा काम भी करू तो भी महीने मे दो हजार से भी ज्यादा कमा सकता हू। पर डायमड का काम अच्छा है। पैसे भले कम मिले पर इसमे मेरा भविष्य उज्ज्वल है क्यो न एक वर्ष के लिये यह काम करके देखा जाय।

अपूर्व ने एक वर्ष के लिये कमल सेठ के यहा काम करना निश्चित कर लिया और फिर अपूर्व कमल सेठ की ऑफिस मे पहुच ही गया और बडी ही शालीनता के साथ अभिवादन करके एक तरफ खडा हो गया। पूरे ही स्टाफ के लोगो की दृष्टि अपूर्व पर उठ गई। सभी उसे बडे गौर से देखने लगे। पहली ही बार मे कमल सेठ के स्टाफ के लोगो पर अपूर्व का गहरा प्रभाव पडा। सभी उसके व्यवहार और बोलचाल से बहुत

प्रभावित हुए।

कमल सेठ ने अपूर्व को देखा और बोले–"वाह तुम आ गए। कैसा रहा तुम्हारा परीक्षा परिणाम ?"

अपूर्व–"बहुत अच्छा रहा। 80 प्रतिशत अको से पास हुआ हू।"

कमल सेठ–"तब तो बहुत अच्छे अक लाए हो। बोलो अब क्या विचार है तुम्हारा ? ऑफिस मे काम करोगे ?"

अपूर्व–"जी हा। आपने मुझे पहले कहा था। इसीलिये मैं सीधा आपके यहा चला आया हू।"

कमल सेठ–"बहुत अच्छा। वैसे तुम काम के लिये नये–नये हो। फिर भी तुम्हारी लगन, परिश्रम एव प्रामाणिकता को देखते हुए मुझे विश्वास है कि तुम बहुत जल्दी इसमे सक्सेस हो जाओगे।

अपूर्व–"यह तो आपकी कृपा है।"

कमल सेठ–"तो फिर देरी किस बात की ? फॉरेन के बहुत से व्यापारियो का माल आया हुआ है, उसे कस्टम से छुडाना है। तुम इसके कागजात देखो। अरे प्रकाशचन्द्र ! कमल सेठ की आवाज सुनते ही प्रकाश उठ खडा हुआ और बोला–"जी साहब !"

कमल सेठ–"देखो, अपूर्व अपनी ऑफिस मे काम करेगा। अभी नया है। इसलिये तुम इसे अपने पास रखो और विदेश से आए कागजात इसे समझाओ और कस्टम से माल छुडाने जाओ, तब भी इसे साथ मे ले जाना।"

प्रकाश–"जी साहब !"

प्रकाशचन्द्र के साथ अपूर्व भी काम पर बैठ गया। जैसा कि पहले कई बार बतला चुके हैं कि अपूर्व की आदत है कि जिस किसी काम मे वह लगता हे तो वह उसमे तन्मय हो जाता है। यही कारण है कि वह जिस किसी काम मे हाथ डालता है उसमे शीघ्र सफल हो जाता है। आज भी अपूर्व ने दिन भर बडी तन्मयता के साथ सभी कागजातो का अध्ययन किया। दस–पन्द्रह दिन की कडी मेहनत के बाद तो अपूर्व खुद ही सारे कागजातो का काम निपटाने मे, लाइसेस बनाने मे एक्सपर्ट हो गया। दो

एक महीने तक उसने बडी लगन से यह काम किया तो उस काम पर अपूर्व का बहुत अच्छा अधिकार हो गया। अपूर्व इतने मात्र से सतुष्ट नहीं था। वह हीरो के कच्चे माल का निरीक्षण परीक्षण भी करना चाहता था। उसकी इस इच्छा को जानकर कमल सेठ ने उसे हीरो का असोर्टमेट करने का काम सीखने के लिये भी लगा दिया। लगातार दो महीने तक हीरो के असोर्टमेट का काम सीखा। इसमे भी वह बहुत होशियार हो गया। अब अपूर्व हीरे बनाने की घटी पर बैठकर हीरे बनाने का काम भी सीखने लगा। इसके साथ ही अन्य हीरे बनाने वाले व्यक्तियो की आदतो का सूक्ष्मता से अवलोकन करने लगा। कोई चोरी तो नही कर रहा है ? कोई माल की अदला–बदली तो नहीं कर रहा है उसे स्टॉफ मे कई व्यक्ति ऐसे नजर आए जो वस्तुत गडबडी करते थे पर अपूर्व अभी कुछ बोला नही। वह दो महीने मे ही हीरे बनाने मे भी एक्सपर्ट हो गया। हीरो की छटनी करना, कौनसा हीरा कितने कैरेट का है ? कितना मूल्यवान है ? इसमे भी वह होशियार होता गया। पूरे एक वर्ष मे उसने कमल सेठ के ऑफिस के सारे कार्यो को समझ लिया और उसमे काम कर रहे छोटे से छोटे कर्मचारी एव बडे से बडे व्यक्ति के साथ रहकर उनकी आदतों से भी परिचित हो गया। इस वर्ष मे यद्यपि अपूर्व को कोई विशेष लाभ नही हुआ, फिर भी उसे सीखने समझने का बहुत अच्छा मौका मिला।

दूसरे वर्ष के प्रारम्भ मे ही अपूर्व ने कमल सेठ को बतलाया कि स्टॉफ के कई आदमी गडबड कर रहे हैं। कमल सेठ का अपूर्व पर विश्वास था क्योकि उसकी प्रामाणिकता वे वर्षो से देख रहे थे। कमल सेठ ने उसके बतलाए गए आदमियो को बडी सफाई से ऑफिस से सदा के लिये छुट्टी दे दी। कमल सेठ को विश्वास हो गया कि अपूर्व ऑफिस के सारे कामो को अच्छी तरह समझ चुका है। इसलिये अपूर्व को दूसरे वर्ष मे पूरे ऑफिस का इन्चार्ज बना दिया। अपूर्व ने बडी लगन, निष्ठा एव वफादारी से काम किया। वैसे भी जो ऑफिस मे गडबडिया हो रही थी, वे उन आदमियो के निकालने से दूर हो गई थी और इधर अपूर्व छोटे–से–छोटे काम को भी अपनी देखरेख मे करवाता था। उसे हर काम का प्रेक्टिकल अनुभव भी था। परिणामस्वरूप इस वर्ष कमल सेठ का व्यापार बहुत चमका। कमल सेठ को इस वर्ष दो करोड रुपये की इन्कम

हुई जिसकी वह कल्पना भी नही कर सकता था। यह सब अपूर्व की कर्त्तव्यनिष्ठा, लगन एव वफादारी का ही परिणाम था। आज तक कमल सेठ के इतनी इन्कम एक वर्ष मे कभी नहीं हुई थी। कमल सेठ यह अच्छी तरह जानता था कि इसमे कार्य करने की क्षमता है। यह मेरे से हटकर भी बहुत काम कर सकता है पर मुझे इसे अपने ऑफिस मे ही रखना है। ऐसा लडका खोजने पर मिलने वाला नहीं है। कमल सेठ ने खुश होकर अपूर्व के बिना कहे उसकी ऑफिस मे पच्चीस प्रतिशत भागीदारी डालकर दूसरे वर्ष के अन्तिम मे पार्टनरशिप के कागजात अपूर्व को हाथो मे पकडा दिये। अपूर्व ने कागज ले लिया। यद्यपि अपूर्व चाहता तो वह अलग व्यापार करके कमल सेठ से भी ज्यादा इन्कम कर सकता था पर उसने यह नहीं किया। क्योकि अपूर्व पर कमल सेठ के बहुत अहसान थे। यो कहा जाय कि कमल सेठ के सहयोग से ही वह इतना आगे बढा था। पहले वर्ष मे अपूर्व ने कोई विशेष कार्य नही किया। केवल ऑफिस के काम सीखे थे। जबकि नये व्यक्ति को कभी कोई सेठ ऑफिस के विशेष काम नहीं सिखाता, पर कमल सेठ ने उदारता के साथ सारे काम सिखाए इस पर भी अपूर्व को दो हजार रुपये महीने का वेतन भी दिया। इसलिये उनके उपकारो को देखते हुए अपूर्व ने अलग व्यापार की बात तो दूर ऐसा सोचा भी नही। यह सब कमल सेठ की दूरदर्शिता का परिणाम था कि उन्होने अपूर्व जैसे होशियार लडके को पकडा और उसे उदारतापूर्वक सहयोग देकर ऑफिस के कार्यों मे लगाया तो आज कमल सेठ का ऑफिस जौहरी बाजार मे चमक उठा। विदेशो का बहुत–सा व्यापार कमल सेठ के यहीं से होने लगा क्योकि फॉरेन के लोगो को भी यह पक्का विश्वास हो गया था कि इन ऑफिस से कभी गडबडी नही होने वाली है। बडे–बडे जौहरियो, ऑफिसरो, श्रीमतो से अपूर्व का कई बार व्यापारिक वार्तालाप होने से उसके व्यक्तित्व, बुद्धिमत्ता से वे सभी अत्यन्त प्रभावित हुए।

वर्ष के अन्त मे जब आकडा मिलाया तो कमल सेठ को सुखद आश्चर्य हुआ कि इस वर्ष ढाई करोड रुपये की इन्कम हुई है। व्यापार दिन–दूना रात चौगुना बढ रहा है। कमल सेठ लोभ के वशीभूत नहीं हुआ उसने अपूर्व के बिना कहे तुरन्त पच्चीस प्रतिशत के हिसाब से 62 5 लाख रुपये अपूर्व को दे दिये। अपूर्व करोडपति बन गया। क्योकि साढे बासठ

लाख रुपये तो उसे ये मिले और उधर 'चन्द्रमुखी पाउडर' से भी उसे प्रतिवर्ष लाखों की इन्कम होने लगी। इसलिये अब अपूर्व की भी (करोडपतियों) मे गिनती होने लगी। सारे जौहरी बाजार मे एव सरकारी अफसरो मे अपूर्व की प्रतिष्ठा निरन्तर बढती जा रही थी।

इस वर्ष अपूर्व ने हीरे के व्यापार को और अधिक कैसे विकसित किया जाय इस पर गहराई से विचार किया। बहुत दिनो के चिन्तन के बाद सारी परिस्थिति का सर्वेक्षण करके अपूर्व ने यह निर्णय लिया कि विदेशो मे ऑफिस खोले जाये ताकि हीरो का सीधा निर्यात हम ही कर सके। अभी तो हम विदेश के व्यापारियो के पास हीरे बेचते हैं, वे दूसरो को बेचते हैं। पर जब अपने ऑफिस वहा लग जाएगे तो हीरे उन व्यापारियो को न बेचकर सीधे वहा ऑफिस मे चले जाएगे और वहा से सीधे निर्यात होगे। जिससे इन्कम भी अधिक होगी। अपूर्व ने सोच–समझकर सारी योजना बनाई और कमल सेठ के सामने आकर उन्हे बतला दी।

कमल सेठ को अपूर्व की बुद्धिमतापूर्ण योजना समझकर सुखद आश्चर्य हुआ। वह बोला–"अपूर्व ! सच मे तुम्हारा दिमाग एक बहुत बडा कम्प्यूटर है। तुम्हारी निष्ठा के कारण ही आज मेरा ऑफिस चमक रहा है। दो वर्ष मे ही आश्चर्यजनक उन्नति हुई है और जो यह तुमने अच्छी तरह विचार करके योजना बनाई है मुझे विश्वास है कि तुम्हारी लगन से निश्चय ही हम इसमे सफल होगे। तुम काम को आगे बढाओ। मेरी सहर्ष अनुमति है।"

फिर क्या था। अपूर्व ने स्वय ने अमेरिका, इग्लैंड एव फ्रास की यात्रा की और प्रत्येक देश मे एक–एक महीने तक रहा। सभी तरह से परिस्थितियो का अवलोकन कर उसने बहुत अच्छी–अच्छी जगहो पर ऑफिस लगवा दिये। अपने साथ छ ईमानदार, ग्रेज्युएट, स्मार्ट युवको को ले गया था। प्रत्येक ऑफिस पर दो–दो व्यक्तियो को नियोजित कर दिये। सारी व्यवस्था उनके हाथ मे देकर ऊपरी नियत्रण अपने हाथ मे रखा। तीन महीने के निरन्तर प्रवास के बाद अपूर्व भारत लौट आया।

अब वह बडी दक्षता के साथ काम आगे बढाने लगा। कमल सेठ ने उसके इस कडे परिश्रम को देखकर अपूर्व के बिना कहे पार्टनरशिप, जो

पच्चीस प्रतिशत थी उसे बढा कर चालीस प्रतिशत कर दी। अभी अपूर्व दिन–रात व्यापार मे ही लगा रहता। क्योकि विदेश मे अभी–अभी ही तीन ऑफिस लगाए हैं। कहीं कोई गडबड न हो जाय, इसके लिये वह पूर्णत सतर्क था। इस वर्ष अपूर्व को अत्यन्त श्रम करना पडा। पर अपूर्व ने कभी वफादारी और प्रतिष्ठा नही खोई। इस वर्ष कमल सेठ को पाच करोड का प्राफिट हुआ। उसमे से दो करोड तो अपूर्व के हो ही गए।

अपूर्व की बुद्धिमत्ता, तन्मयता एव पुरुषार्थ तो रग ला ही रहा था पर इसके साथ उसका प्रबल पुण्योदय भी गौण रूप से उसका सहायक बना हुआ था। अब तो अपूर्व ने डेढ करोड रुपये मे बालकेश्वर मे एक फ्लेट, मसर्डिज कार खरीद ली। अपनी मम्मी–डैडी के साथ अब वहा रहने लगा।



(16)

एक दिन की बात थी कि कमल सेठ अपनी धर्मपत्नी के साथ कही जाने की तैयारी कर रहे थे तो अपूर्व ने सहज ही उनसे पूछ लिया कि आप कहा जाने की तैयारी कर रहे हैं ? तब कमल सेठ बोले–"बहुत अच्छी याद दिलाई तुमने। मैं तुम्हे अर्से से एक बात कहने की सोच रहा था लेकिन तुम्हारे व्यापारिक कार्यों मे अत्यन्त व्यस्त होने से नही कह सका। बात यह है कि मैं साल मे दो–चार बार एक पहुचे हुए महायोगी के दर्शन करने जाता हू और आज भी मैं अपनी धर्मपत्नी के साथ उन्हीं के दर्शनार्थ जा रहा हू। वैसे कल मेरे श्वसुरजी की पुण्यतिथि भी है। मेरे श्वसुरजी उन महायोगी के परम भक्त थे। उनका अचानक स्वर्गवास हो गया। हम उसके बाद प्रतिवर्ष उनकी पुण्यतिथि के दिन उन महायोगी की सेवा मे पहुच ही जाते हैं। तुम भी चलना चाहो तो जरुर चलो। मैं तो तुम्हे ले जाना चाहता हू। जब तुम उनके परम पवित्र दर्शन कर लोगे और उनकी पतित पावनी वाणी सुनोगे तो तुम्हे निश्चय ही शाति मिलेगी।"

अपूर्व–"पर साहब ! वे महायोगी हैं कौन ? क्या वे तो नहीं जो भगवे कपडे पहनते हैं और बडे–बडे मठो के मालिक होते हैं। कारो मोटरो मे घूमते हैं। या फिर और कोई हैं।"

कमल सेठ–"अरे नही अपूर्व ! वे महायोगी तो परम त्यागी और ससार से बिल्कुल निस्पृह हैं।"

अपूर्व–"जरा आप उनके विषय मे कुछ विस्तार से समझाइये ?"

कमल सेठ–"देखो अपूर्व ! वे जैन धर्म की एक विशिष्ट साधु मार्ग परम्परा के उन्नायक हैं, बाहरी रूप से अगर तुमने देखा हो कभी तो मुख पर एक कपडा लगाते हैं जिसे मुखवस्त्रिका कहते हैं। हाथ मे एक गुच्छा रखते हैं, जिसे रजोहरण कहते हैं। और खादी का श्वेत परिधान पहनते हैं। यह उनका बाहरी परिधान चिन्ह है।"

"उनकी जीवन यात्रा अत्यन्त कठोर होती है। पहले तो तुम्हे उनके आचार सूत्र पाच महाव्रत हैं, वे बतला देता हू। पाच महाव्रतो के नाम ये हैं–अहिसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ।"

"अहिसा, जैन साधु का प्रथम आचार सूत्र है। जैन साधु–"आत्मवत् सर्वभूतेषु" की उक्ति के अनुसार ससार के चर–अचर सभी आत्माओ के प्रति आत्मीय व्यवहार रखते हैं। जैन साधु अपने निमित्त सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव को भी नष्ट नहीं करते उसे कष्ट नहीं देते। न ही अपने निमित्त कष्ट ही दिलवाते हैं और जो उन जीवो को स्वेच्छा से कष्ट देते हो, हिसा करते हो, जैन साधु उन्हे भी अच्छा नही समझते। जैन सिद्धात की दृष्टि से दृश्यमान पृथ्वी से एक बिलात लगभग नीचे की पृथ्वी के एक–एक कण मे भी असख्य जीव होते हैं। इसी प्रकार पानी, अग्नि, हवा एव वनस्पति मे भी जैन दर्शन ने असख्य–अनन्त जीवन बतलाए हैं। जिसे आज का विज्ञान भी मानने लगा है।"

"जैन साधु पशु–पक्षी, मानव की बात तो दूर उन पृथ्वी आदि जीवो की हिसा भी नहीं करते हैं।"

"जैन साधु, अपने लिये भोजन तक नहीं बनवाते। गृहस्थ के घर मे जो कुछ सहज रूप से रूखा–सूखा बना होता है वह भी बहुत घरो से थोडा–थोडा करके उदरपूर्ति कर लेते हैं। जिससे उनके लेने से गृहस्थ को दूसरी बार बनाना भी न पडे। यही नहीं वे अपने लिये या किसी के लिये भी मकान आदि बनाने की प्रेरणा नही देते क्योकि मकान बनाने मे भी पृथ्वी आदि जीवो के साथ चलते–फिरते जीवो की भी हिसा हो जाती है। उन्हे तो जहा कहीं जैसा भी मकान मिल जाता है वहीं रह लेते हैं। कहीं महल तो कहीं झोपडी मे। मुह पर मुखवस्त्रिका भी इसीलिये बाधते हैं कि उनके मुह से बोलने पर जो गर्म हवा निकलती है उससे हवा के जीवो की हिसा न हो जाय। आठ (पुड का) कोष्ठ का वह कपडा गर्म हवा को छान कर निकालता है, जिससे जीवो की हिसा न हो।"

"जैन साधु जिन्दगी भर पाद विहार करते हैं। साईकिल, मोटर, कार आदि किसी भी प्रकार का वाहन काम मे नहीं लेते, क्योकि इससे भी जीवो की हिसा होती है। यहा तक कि उनके पैर भी नगे होते हैं। क्योकि पैरो मे शूज पहनने पर जीवो की हिसा हो सकती है।"

"भयकर से भयकर सर्दी हो तो भी वे अग्नि की आतापना नही लेते। कच्चे पानी एव किसी प्रकार की सजीव वनस्पति का स्पर्श तक नहीं

करते। जो पानी गृहस्थ के घर पर सहज रूप से उबला हुआ हो या फिर राख आदि मे मजे बर्तनो का धोया हुआ पानी हो वह काम मे लेते हैं। ऐसे ही छाछ, दाख दाल आदि के धोए बर्तनो का पानी भी काम मे लेते हैं। क्योकि इन वस्तुओ के सहयोग से जीव समाप्त हो जाते हैं। यह भी साधु के लिये नहीं, गृहस्थ अपने लिये करता है। यदि उन्हे ऐसा पानी न मिले तो वे मर जाना पसन्द करते है पर कच्चा पानी नहीं पीते। ऐसा कठोर व्रत होता है उनका। रात्रि मे सूर्य अस्त होने के बाद जब तक सूर्य उदय न हो, तब तक वे अन्न का एक दाना और पानी की एक बूद भी मुह मे नहीं डालते। उनका कहना है कि रात्रि मे आकाश से सूक्ष्म जीवो का निरन्तर वर्षण होता है। अत रात्रि मे आहार करने से इनकी तथा अन्यान्य जीवो की हिसा होती है। आचरण के इस प्रथम सूत्र के अनुसार जैन साधु जगत् के समस्त प्राणियो को अपनी आत्मा के तुल्य समझ कर चलने वाले होते हैं।"

"जैन साधु का दूसरा आचार सूत्र होता है–सत्य। जैन साधु मन मे जो सोचते हैं वही वचन से उच्चारित करते हैं और उनका आचरण भी उसी प्रकार होता है। वे मन–वचन–काय से स्वय सत्य का व्यवहार करते हैं। दूसरो को भी सत्याचरण की प्रेरणा देते हैं। किसी से भी असत्य नहीं बुलवाते। और असत्य बोलने वाले को भी अच्छा नहीं समझते।"

"जैन साधु का तीसरा आचार सूत्र है, अचौर्य। चोरी नहीं करना। बडी चोरियो की बात तो जाने दो, जैन साधु सूक्ष्म से सूक्ष्म चोरी भी नहीं करते। सच्चे जैन साधु को भले हीरे जवाहरात के भण्डार के अन्दर एकाकी छोड दो पर वह उन्हे उठाने की बात तो दूर उसके हाथ भी नहीं लगाएगा। वे अपने लिये उपयोगी कागज, पेन या अन्य कोई चीज लेना चाहे तो वे उस के मालिक की अनुमति के बिना नहीं लेते।"

"जैन साधु का चौथा आचार सूत्र है–ब्रह्मचर्य"

जब से वे जैनेश्वरी दीक्षा स्वीकार करते हैं, तभी से वे ससार की समस्त महिलाओ को माता और बहिन समझ कर चलते हैं। जो महिला जैनेश्वरी दीक्षा स्वीकार करती है, वह ससार के समस्त पुरुषो को भाई और पिता समझ कर चलती है। जैन साधु का समूह, जैन साध्वी का समूह

अलग–अलग रहता है। जहा जैन साधु रहते हैं, वहा रात्रि मे छोटी से छोटी बच्ची भी नहीं आ सकती। वैसे ही जैन साध्वी के स्थान पर रात्रि मे छोटे से छोटा बच्चा भी प्रवेश नही कर सकता। जैन साधु, स्त्री मात्र का स्पर्श नही करते और जैन साध्वी पुरुष मात्र का स्पर्श नहीं करती। ये ब्रह्मचर्य व्रत का कठोरता से पालन करते है।"

"जैन साधु का पाचवा आचार सूत्र है–अपरिग्रह"

"जैन साधु अपने पास रुपये–पैसे की बात तो जाने दो धातु मात्र नही रखते। न ही कोई चन्दा, चिट्ठा, फण्डफाला इकट्ठा करवाते हैं। वे रुपये–पैसे के प्रपच से सदा दूर रहते हैं। शरीर की लज्जा निवारण करने के लिये भी वे मर्यादित 72 हाथ से ज्यादा कपडे नहीं रखते। भोजन आदि करने के लिये चार काष्ठ पात्र से ज्यादा नहीं रखते। कहने का तात्पर्य यह है कि जैन साधु का प्रत्येक कार्य सयमित–नियमित मर्यादित होता है।"

"जैन साधु पारिवारिक सम्बन्धो को तोडकर सार्वभौम बन जाते हैं। टी वी, सिनेमा, नाटक आदि कुछ भी देखने नहीं जाते। उनका जीवन अत्यन्त सादगीमय होता है। यह मैंने सक्षिप्त मे जैन साधु का स्वरूप बतलाया है।"

अपूर्व बहुत ही एकाग्रता के साथ कमल सेठ के मुह से जैन साधु का स्वरूप सुनता रहा। जब कमल सेठ शात हो गए, तब वह बोला–"बडा अद्‌भुत स्वरूप है जैन साधु का! मैं अपनी लाइफ मे आज तक ऐसे साधु के सम्पर्क मे नहीं आया। हा मैंने दूर से जरूर ऐसे साधुओ को देखा है, पर उनका निकट परिचय अभी तक नहीं हुआ। ऐसे साधु के दर्शन करने तो मैं जरूर चलूगा।"

कमल सेठ अपूर्व की बात सुनकर बहुत खुश हो गए क्योकि वे यह चाहते थे कि मेरी ऑफिस का प्रत्येक व्यक्ति धार्मिक हो। अब तक जितने भी स्टाफ के व्यक्ति थे, प्राय सभी धार्मिक थे। पर यह अपूर्व धर्म–कर्म को नहीं मानता था, इसकी रुचि व्यापार मे ही अधिक थी। पर आज जैन साधु का स्वरूप सुनकर उसमे धर्म के प्रति रुचि जागृत हो गई थी और अपूर्व भी कमल सेठ के साथ उन महायोगी के दर्शन करने के लिये चलने

को तत्पर हो गया।

आनन–फानन मे अपूर्व ने भी तैयारी करली। कमल सेठ, उनकी धर्मपत्नी व अपूर्व तीनो ही कार के माध्यम से यात्रा तय करने लगे। महायोगी राजस्थान के एक छोटे से गाव सराधना मे विराजमान थे। चौबीस घण्टे की यात्रा करने के बाद दूसरे दिन मध्याह्न मे तीनो व्यक्ति सराधना मे विराजमान समता विभूति महायोगी के पावन सानिध्य मे पहुच गए। कमल सेठ एव उसकी धर्मपत्नी दोनो ने तीन बार उठ–बैठकर वन्दना की। अपूर्व ने भी कमल सेठ की तरह ही श्रद्धा से भावाभिभूत हो तीन बार वन्दना की।

महायोगी ने 'दया पालो' के उच्चारण के साथ हाथ उठाकर तीनो को आशीर्वाद प्रदान किया। और अपूर्व की ओर सकेत करते हुए बोले– "कमलजी ! इस बार आपके साथ कौन आए हैं ?"

कमल सेठ– "गुरुदेव ! यह अपनी ऑफिस मे ही पार्टनरशिप मे काम करता है। लडका बहुत होशियार, ग्रेज्युएट एव अत्यत प्रामाणिक है। इसी कारण इन वर्षो मे व्यापार मे बहुत उन्नति हुई है। इसकी भी आपके दर्शन की इच्छा हो गई तो इसे भी साथ ले आया।"

महायोगी–"बहुत अच्छा, हमारे द्वार तो सभी के लिये खुले हैं। जगत् के सभी प्राणी हमारे आत्मीय हैं।"अपूर्व की और सम्मुख होकर अत्यत आत्मीय भरी वाणी मे महायोगी के शब्द प्रस्फुटित हुए–"आपका नाम ?"

अपूर्व –"योगी प्रवर, मेरा नाम अपूर्व कुमार है।"

महायोगी–" बहुत अच्छा। भाई अपूर्व । जीवन की व्यावहारिक समस्याओ को सुलझाने के साथ ही जीवन के अन्तरग रूप को उज्ज्वल करने के लिये भी कुछ पुरुषार्थ करते हो या नहीं ?

अपूर्व –"योगी प्रवर ! अभी तक मुझे अन्तरग जीवन को उज्ज्वल करने के लिये कोई योग्य निर्देशक नहीं मिला। यह तो कमल साहब की कृपा हो गई जो मैं आप श्री के पावन सानिध्य मे पहुच गया। मुझे विश्वास है कि आपके निर्देश को पाकर मैं जरूर अन्तरग के जीवन को उज्ज्वल करने के लिये भी पुरुषार्थ करूगा ।"

योगी प्रवर –" बहुत अच्छा ! विचार तो आपके बहुत उन्नत हैं, होने भी चाहिए। प्रवचन के माध्यम से प्राय प्रतिदिन प्रात काल जनता को इस विषय मे निर्देश देता हू। आज तो आप लोग विलम्ब से आये। प्रवचन तो प्रात काल ही हो चुका। प्रतिदिन की तरह कल प्रवचन हो सकता है। विशेष तो प्रवचन के माध्यम से समझाने का प्रयास करूगा। वैसे आप कल तो रुकेगे ना।"

अपूर्व –" योगी प्रवर ! जी तो चाहता है कि आपके ऐसे पावन सानिध्य मे बैठा ही रहू, पर यह सभव नही। फिर भी दो–तीन दिन तो आपश्री की अमृतवाणी सुनने का विचार है।"

योगी प्रवर –"बहुत अच्छा ! विशेष चर्चा तो प्रवचन के माध्यम से सभावित है, हा अभी आपके मन मे किसी भी प्रकार की कैसी भी शका हो तो आप नि सकोच पूछ सकते हैं।"

ठीक इसी समय अपूर्व के दिमाग मे चिर–अतीत की बात घूमने लगी। जब अनजान मे अपूर्व और उसके स्वर्गीय भाई अतुल के हाथ से कृष्ण की मूर्ति टूट गई थी, तब कृष्णसिह ने बहुत हगामा मचाया था और उन्हे बुरी तरह मारा–पीटा भी था। तभी से अपूर्व के मन मे यह बात कचोट रही थी कि आखिर मूर्ति मे ऐसी क्या विशेषता है ? जिसके कारण चाचा कृष्णसिह उसकी उपासना करते थे तथा हमारे द्वारा मूर्ति के टूट जाने पर एकदम गुस्से मे आ गए थे और हमे बहुत मारा–पीटा था। अपने मन मे वर्षों से उभर रहे इस प्रश्न का समाधान पाने का सहज अवसर जानकर अपूर्व ने अपने इन मनोगत भावो को व्यक्त करते हुए महायोगी के सामने मूर्ति की उपयोगिता–अनुपयोगिता को लेकर जिज्ञासा रखी।

महायोगी –"बहुत अच्छा प्रश्न किया आपने। इसे थोडा मनोवैज्ञानिक ढग से समझना आवश्यक है। पहले आप यह बतलाइये कि उपासना किसकी की जाती है, अपने से अधिक समर्थ की या कम समर्थ की ?"

"अपने से अधिक समर्थ की।" अपूर्व ने उत्तर दिया। "अत चिन्तन यह करना है कि हम जिसे भी नमस्कार करे पहले उसके गुण दोष को जान लेना आवश्यक है, अर्थ का सहयोग उसी व्यक्ति से लिया जा सकता है, जिसके पास अर्थ की सपन्नता हो। जो स्वय दरिद्र है, वह दूसरो का

क्या आर्थिक सहयोग कर सकता है, ठीक इसी प्रकार जिसमे स्वय गुण न हो, निश्चेष्ट और निर्जीव हो, वह भला ज्ञान पूर्वक दूसरे के जीवन को परिवर्तन करने मे क्या सहयोग दे सकता है ?"

"हा व्यक्ति को जागृत करने मे निमित्त कोई भी मिल सकता है पर निमित्त बन जाने मात्र से वह वस्तु वन्दनीय नही बन जाती। इतिहास मे ऐसी अनेक घटनाओ का वर्णन आता है, जिसमे बतलाया गया है कि कोई सम्राट वृक्ष को देखता है, जो पत्र, पुष्प–फलो से भरा रमणीय प्रतीत हो रहा था। उसमे से एक फल तोडकर वह आगे बढ जाता है तो उसी का अनुसरण सम्राट के पीछे वाले परिजन भी करते हैं। परिणाम स्वरूप वृक्ष फल–फूल पत्तो से रहित एक ठूठ सा आकार धारण कर लेता है। जब सम्राट उसी रास्ते से लौटे और उस वृक्ष को जो सुन्दर लग रहा था, उसे इस प्रकार ठूठ सदृश असुन्दर देखा तो बडा आश्चर्य किया और विचारो की गहराइयो मे उतर गए। सोचने लगे–"अहो ! जैसे वृक्ष की यह अवस्था बनी है एक दिन मेरी भी यही अवस्था बनने वाली है। कितना अच्छा हो वह समय आए उससे पहले ही मैं अपने आपको इस भौतिक वातावरण से मुक्त कर दू। बस सकल्प मजबूत बना और सम्राट चल पडे साधना के पथ पर।"

"तो अपूर्वकुमारजी ! जरा सोचिये ! क्या वृक्ष का निमित्त मिलने से वह वृक्ष वन्दनीय हो गया ?" "जी नहीं !" अपूर्व कुमार ने कहा।

"ठीक इसी प्रकार निमित्त कोई भी मिल सकता है पर जागरण तो हमे ही करना होता है। हा–जागरण का सदेश देने वाले, स्वय उन आदर्शों पर खडे हो तो वे निश्चय ही वन्दनीय होते हैं।"

"आज का युग तो गुणो का पूजक है। स्वय का पिता भी क्यो न हो, अगर वह दुर्गुणी है व्यसन ग्रस्त है तो उसका पुत्र भी उसकी उपेक्षा कर देता है। दुर्गुणी को प्रणाम करने से विकास नहीं, ह्रास हो सकता है। क्योकि गुणहीन कभी गुण नहीं देता। पानी को मथने से कभी नवनीत नहीं मिलता है।"

"इसलिये जिस पर श्रद्धा व वदना करने जा रहे हैं, उसके विषय मे पूर्ण रूप से चिन्तन आवश्यक हो जाता है। वैसे सभी व्यक्ति स्वतन्त्र हैं

वे अपनी–अपनी भावनानुसार कैसा भी अवलम्बन लेकर भाव–भक्ति करे तो उन्हे कौन प्रतिबन्धित कर सकता है ?"

महायोगी का उत्तर अपूर्व के गले उतर गया। वह हाथ जोडकर बोला–"योगी प्रवर आज मै कृतार्थ हो गया। वर्षों से मेरे मन मे रही शका दूर हो गई। वस्तुत ऐसे महायोगियो से ही धरती गौरवान्वित है।"

आज समय बहुत हो गया था, अत चर्चा भी स्थगित कर दी गई।

दूसरे दिन प्रात प्रवचन मे महायोगी उपस्थित विशाल जनता को नवनीतरूप मे जीवन के शास्वत सत्यो को समझाने के लिये सबोधित कर रहे थे। कमल सेठ उनकी पत्नी एव अपूर्व भी तन्मयता के साथ महायोगी का प्रवचन श्रवण करने लगे।

महायोगी ने एक घण्टे तक धारा प्रवाह प्रवचन फरमाया, जिसका निष्कर्ष सार यह था–

"जिसने जो कर्म किये हैं, वे उसे एक दिन भोगने ही पडते हैं। यदि अच्छे कर्म किये हैं तो उसका परिणाम शुभ रूप होता है, और यदि बुरे कर्म किये हैं तो उसका परिणाम अशुभ रूप होता है। यह कभी नहीं होता कि बीज तो अफीम का बोया जाय और फसल गन्ने की खडी हो। जैसा बीज बोया जायगा, वैसा ही फल मिलेगा। प्रकृति मे देर हो सकती है, पर अन्धेर नहीं। इसलिये मानव को कर्म करते वक्त ही विचार कर लेना चाहिये कि मैं क्या कर रहा हू ? और उसका परिणाम क्या होने वाला है ?"

"जीवन को पवित्र और उन्नत बनाने के लिये स्वार्थ से हटकर परमार्थ के प्रति कुछ करना चाहिये। धन सम्पत्ति को एकत्रित कर अपने ही स्वार्थ मे खर्च करना कोई महत्त्वपूर्ण नहीं, पर धन सम्पत्ति को, दीन–हीन–असहाय लोगो के लिये नि स्वार्थ भाव से उपयोग मे लाना अपनी आत्मीयता का सराहनीय परिचय देना है।"

"व्यक्ति का विकास और ह्रास अपने ही कृत्यो पर आधारित होता है। अपनी तरफ से किसी को भी यथाशक्य कष्ट देने का प्रयास नहीं करना चाहिये। जैन साधु तो अपकार करने वाले के प्रति भी उपकार ही करते हैं, पर गृहस्थ के लिये मर्यादा अलग होती है। अपने प्रति अन्याय

करने वाले का योग्य रीति से प्रतिकार करने की गृहस्थ को छूट होती है।"

"चौबीस घण्टे मे से कुछ क्षण आत्मा–परमात्मा के चिन्तन हेतु निकालने चाहिये। चकडोलर की तरह जिन्दगी मे उतार–चढाव तो आते ही रहते हैं, पर विज्ञ व्यक्ति को चढाव मे अभिमान और उतार मे दु खी नहीं होना चाहिये।"

महायोगी ने लगभग एक घण्टे तक धारा प्रवाह प्रवचन फरमाया। अपूर्व अत्यन्त तन्मयता के साथ सुन रहा था। अपूर्व को लगने लगा कि आज तो महायोगी ने सारा प्रवचन ही लगता है मेरे ऊपर ही दे दिया। अत्यन्त विनम्रता एव शालीनता के साथ अपूर्व ने महायोगी को निवेदन किया–"योगीप्रवर आपके प्रवचन से निश्चय ही मेरे जीवन मे एक बहुत बडा मोड आया है।"

"भविष्य मे क्या करने वाला था ? पर अब क्या करूगा। यह मैं आज नही फिर कभी आपको निवेदन करूगा।"

अपूर्व की धर्म के प्रति रुचि एव उसके जीवन मे अभूतपूर्व परिवर्तन देखकर कमल सेठ को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। कमल सेठ की यह बहुत समय से भावना थी कि अपूर्व भी महायोगी की सेवा मे पहुचे। उसे विश्वास था कि वहा पहुचने के बाद तो महायोगी के प्रभाव से इसके जीवन मे विशेष प्रकार का परिवर्तन जरूर आएगा। जो कि कमल सेठ देख ही रहा था। दो–तीन दिन तक महायोगी का पावन सानिध्य पाकर तीनो ही प्राणी योगी प्रवर के मगलमय वचनो को सुनकर बम्बई के लिये प्रस्थान कर गए। ❑

(17)

कृष्णसिह का एक ही लक्ष्य था बस अधिक से अधिक धन कमाना। वैध तरीके से हो भले अवैध तरीके से। इन वर्षो मे कृष्णसिह ने खासा धन इकट्ठा कर लिया था। उसके एक लडका राजेश और एक लडकी सावित्री भी हो चुके थे। रामसिह और उसके परिवार को घर से निकालने के बाद कृष्णसिह ने कभी भी उस ओर ध्यान ही नहीं दिया कि उनका क्या हालचाल है। वह बस अपने ही स्वार्थ मे लगा हुआ था। रामसिह ने कृष्णसिह पर कितना उपकार किया था और कृष्णसिह ने उस उपकार को भूलकर रामसिह के साथ कैसा अभद्र व्यवहार किया। यह कृष्णसिह भूल चुका था, वह तो अपने धन मे मदोन्मत्त हो रहा है पर उसे क्या मालूम कि उसके बोए गए बीजो की अब फसल तैयार हो गई है।

कृष्णसिह की मिल मे एक करोड रुपये का माल दो नम्बर का पडा था। यह बात कृष्णसिह के किसी शत्रु को ज्ञात हो गई तो उसने बदला लेने का अच्छा मौका समझकर कृष्णसिह को फुटपाथ पर लाने की योजना बना डाली चेकिग इन्स्पेक्टर एव दो–चार अफसरो को फोन के माध्यम से सूचना कर दी कि कृष्णसिह के पास एक करोड रुपये का दो नम्बर का माल पडा है, और अमुक जगह पडा है। आनन–फानन मे इन्स्पेक्टर और बडे–बडे अफसर अपना स्टाफ लेकर एक साथ 'कृष्णसिह मिल्स लिमिटेड कम्पनी' की जाच करने पहुच गये। इन लोगो को एक साथ आया देखकर कृष्णसिह भी घबरा गया। यद्यपि चेकिग इन्सपेक्टर तो उसके पास मे कई बार आया था पर उन्हे वह घूस देकर शात कर देता था लेकिन इस बार तो बडे–बडे अफसर अपना–2 स्टाफ लेकर आ खडे हुए। कृष्णसिह किस–किस को समझाये, उन्होने तुरन्त उसके पूरे मिल को सील कर दिया। बगले पर भी उनके आदमी तैनात हो गये। कृष्णसिह ने बहुत कोशिश की चैकिग रोकने की, पर उसकी एक न चली। पूरे मिल की सूक्ष्मता के साथ चेकिग की गयी। एक करोड रुपये का दो नम्बर का माल मिला। घर पर भी सोने की छडे आदि दो नम्बर का बहुत माल मिला। सरकारी अफसरो ने सूक्ष्मता से जाच करने के बाद यह निर्णय दिया कि कृष्णसिह सफेदपोश मे एक बहुत बडा तस्कर है।

सरकार ने कृष्णसिह का सारा माल जब्त कर लिया और उसे अरेस्ट कर लिया। बम्बई के बडे–2 अखबारो मे कृष्णसिह के विषय मे जोर–शोर से खबरे छपी। किसी ने छापा "सफेदपोश तस्कर" तो किसी ने छापा "राष्ट्र विद्रोही सेठ कृष्णसिह," तो किसी ने छापा–"सेठ कृष्णसिह का घृणित कार्य।" इसी बीच कृष्णसिह के ओर भी अवैध अनेक कारनामे पकड मे आ गए। जब कृष्णसिह के लडके राजेश को ज्ञात हुआ कि डैडी को अरेस्ट कर लिया गया है तो वह डेडी से मिलने के लिये अपनी गाडी को रफ्तार के साथ दौडाता हुआ बम्बई के भीड भरे बाजार से निकलने लगा। प्रकृति का प्रकोप ही जानिये। सामने से एक भारी भरकम ट्रक आ गया। राजेश रफ्तार से चल रही गाडी का बैलेस नही सम्भाल सका और उसकी कार ट्रक से जा टकराई। राजेश को भारी चोट आई उसे तुरन्त एम्बुलेस से हॉस्पिटल पहुचाया गया।

कृष्णसिह को तो रामसिह के परिवार की जानकारी नही थी। पर रामसिह एव अपूर्व को तो कृष्णसिह एव उसके परिवार की पूरी जानकारी थी और अपूर्व को तो अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनी थी। इसलिये वह कृष्णसिह की प्रत्येक गतिविधि पर निगाह गडाए हुए था वह सोच ही रहा था कि मेरे भाई अतुल के खून के लिये पैसे नहीं देने का, डैडी के जीवन को बर्बाद करने का बदला कृष्णसिह से किस ढग से लिया जाय। पहले तो वह हिसात्मक ढग से बदला लेना चाहता था पर उन महायोगी के प्रवचन से उसके जीवन मे परिवर्तन आ गया, इसलिये उसने हिसात्मक बदले का विचार तो हटा दिया पर किसी न किसी प्रकार से बदला लेने का विचार तो उसके मन मे आज भी चक्कर काट रहा था। पर जब उसे यह ज्ञात हुआ कि कृष्णसिह का बिना कुछ किये ही भडा–फोड हो गया है और उसे अरेस्ट कर लिया है, इधर उसके लडके राजेश का गम्भीर रूप से एक्सीडेण्ट हो गया है तो उसे उन महायोगी का प्रवचनाश याद हो आया–उन्होने फरमाया था–कि बीज अफीम का बोया जाय और फसल गन्ने की खडी हो, ऐसा कभी नहीं होता। जैसा बीज बोया जाएगा वैसा ही फल मिलेगा। यह बात अपूर्व को कृष्णसिह के बदलते हुए मोड को देखकर शत–प्रतिशत सही नजर आ रही थी।

महायोगी के प्रवचन सुनने से उसके विचारो मे बदलाव आ गया। इसलिये अब वह सोचने लगा—वैसे अकल ने भाई को खतम करने मे एव परिवार को बर्बाद कराने मे कोई कसर नही छोडी और आज इनका परिवार भी विनाश के कगार पर आ खडा हुआ है, मैं चाहू तो इन्हे सदा के लिये समाप्त कर सकता हू। पहले मेरे ऐसे विचार भी थे, पर महायोगी के प्रवचन ने मेरे जीवन को मोड दिया, कर्म स्वय इन्हे फल दे रहा है। इन्होने हमारे साथ कुछ भी किया हो, पर कृष्णसिह आखिर मेरे डैडी का सहोदर है और राजेश मेरे अकल का लडका भाई है। मुझे सब कुछ भूलकर आज उन्हे सहयोग देना है। पर साथ ही अकल को यह भी बतला देना है कि "कर भला तो हो भला, कर बुरा तो हो बुरा।"

अपूर्व सबसे पहले गाडी लेकर हॉस्पिटल पहुचा और डॉक्टरो से राजेश की स्थिति पूछने लगा। जब डॉक्टरो ने बतलाया कि राजेश के मस्तिक मे गम्भीर चोट आई है वह जीवनमरण के झूले मे झूल रहा है। भारत मे ऐसी मशीन नही है कि जिससे अतरग का ऑपरेशन किया जा सके। हा अमेरिका मे है। इसे यदि तीन दिन के अन्दर—अन्दर वहा नहीं पहुचाया गया तो यह खतम भी हो सकता है।

राजेश के पिता तो जेल मे है और पूरे बम्बई मे बदनाम हो चुके थे इसलिये कोई भी इस और ध्यान नही दे रहा था। वैसे भी अमेरिका राजेश को ले जाकर ऑपरेशन करवाने आदि मे पाच लाख रुपये का खर्च था। कृष्णसिह से निकटतम परिचित भी दूर हट गए थे। पर जब अपूर्व को डॉक्टरो ने यह बतलाया तो उसने उसी वक्त डॉक्टरो को निर्देश दिया, आप इसी वक्त व्यवस्था करिये। सारे पैसे मैं दूगा, आप भी अमेरिका जाइये, ताकि वहा के डॉक्टरो को भी योग्य निर्देशन मिल सके। कैसे भी हो राजेश की जान बचनी चाहिये डॉक्टरो ने आनन—फानन मे व्यवस्था की और तीन डॉक्टर राजेश को लेकर विमान से अमेरिका पहुचे और उसका उच्चस्तर पर इलाज प्रारम्भ कर दिया गया। इधर सरकार ने कागजी कार्यवाही करके कृष्णसिह की मिल को बेचने का निर्णय ले लिया। लोग उसे खरीदने के लिये आने लगे। अपूर्व को यह मालूम हुआ तो वह भी वहा पहुचा। वैसे इसके पास काम बहुत था पर फिर भी अकल को शिक्षा देने के लिये एव वश की आबरू बचाये रखने के लिये उसने डेढ

करोड मे मिल खरीद ली और उसका नाम 'कृष्णसिह मिल्स लिमिटेड' की जगह 'रामसिह मिल्स लिमिटेड क' कर दिया।

कृष्णसिह सोचने लगा यह हीरो का व्यापारी अपूर्व कौन है ? उम्र मे छोटा है पर कितना होशियार, स्मार्ट और दयालु है। मेरा इससे कोई परिचय नहीं, कुछ नहीं। आज मैं जब भयकर आपत्ति मे फस गया और मेरा लडका जीवन–मरण मे झूलने लगा तो पैसो के खर्च के भय से अच्छे–अच्छे लोग दूर हट गए पर इस अपरिचित युवक ने मेरे से भी नहीं पूछा कि आप मुझे वापस पैसा दोगे या नहीं और राजेश को तीन डॉक्टरो के साथ इलाज हेतु अमेरिका भेज दिया, और इसी ने मेरी मिल भी खरीदी है। ऐसे व्यक्ति का कभी एहसान चुकाया नहीं जा सकता।

वस्तुत दुनिया मे बुरे हैं तो अच्छे भी बहुत हैं। कृष्णसिह यह सोच ही रहा था कि इतने मे एक व्यक्ति उसे बद लिफाफा दे गया। कृष्णसिह उसे खोलकर पढने लगा तो उसमे लिखा– जरा आप अपने जीवन के अतीत के पन्नो को उलटकर देखने–पढने की कोशिश करे। जब आप बच्चे थे, तब आपके भाई ने किस प्रकार मेहनत–मजदूरी करके आपको पढा–लिखाकर होशियार किया। आपका भाई भूखा रह जाता, फटे कपडे पहन लेता पर आपको पेट भर भोजन, अच्छे कपडे तो मिलते ही साथ ही जेब खर्च भी। क्या अरमान सजोये होगे आपके भाई ने, पर आपने जब इजीनियरिंग परीक्षा पास की तभी से आपमे स्वार्थ भर गया। आप खुद फ्लेट मे रहने लगे और कार मे घूमने लगे पर अपने भाई एव मा को उसी चेम्बूर की खोली मे रखा। यही नहीं खर्च भी उन्हे पूरा नही दिया जाता। जब अपनी शादी का काम आया तो भाई–मा से गर्ज निकालने के लिये ऊपरी सम्मान दिया और फिर जब स्वार्थ पूरा हो गया तो उन्हे धक्के मारकर पुन फ्लेट ने निकाल दिया नौकरो की तरह उनसे काम लिया। स्वार्थ की भी हद होती है। जब आपके भाई का लडका जीवन और मरण के झूले मे झूल रहा था, उसे खून के लिये 500 रुपये चाहिये थे उसका छोटा भाई आपके पास भी आया और विनम्र प्रार्थना की कि मैं ब्याज सहित चुका दूगा, पर वाह रे स्वार्थान्धता आपने उसे धक्के मारकर उछाल दिया। जरा याद करिये उन घटनाओ को। आपने अपने जीवन मे कैसे

बीज बोये थे। आपने बिना नीव के मिट्टी पर महल बनाया था। अनैतिकता, स्वार्थान्धता मे आकर जो घृणित कार्य आपने किये और धन एकत्रित किया आज वह धन का महल हवा के एक झोके से मिट्टी मे मिल गया है। 'जैसा बोवोगे, वैसा काटोगे, जैसा करोगे, वैसा भरोगे। प्रकृति के घर मे देर है, पर अन्धेर नहीं। यह तो एक भला आदमी मिल गया, जिसने राजेश की रखा करली। अब भी जरा जीवन को बदलने की कोशिश कीजिये।

आपका हितैषी

कृष्णसिह पत्र पढता गया। आज उसे अपनी नीचता की एक–एक घटना याद आती चली गयी। आज उसकी आखे खुली। झर–झर आखो से आसू गिरने लगे और सोचने लगा अहो कैसा नीच हू मैं, परम उपकारी भाई, जिसने मुझे इतना आगे बढाया उसको और मा को भी मैंने नौकरो की तरह रखा। मा मर गई तो उसके श्मशान मे नहीं गया। भाई के बच्चे के लिये पाच सौ रुपये नहीं दे सका। मेरे स्वार्थ ने मेरी नैतिकता एव कर्त्तव्य पर परदा डाल दिया था। आज सच मे मैं उसका परिणाम भुगत रहा हू। वस्तुत इस व्यक्ति ने ठीक लिखा है– प्रकृति के घर मे देर है, पर अन्धेर नही। आज मेरा यही हाल हो रहा है। मैं जैल मे बैठा हू। बेटा अमेरिका के अस्पताल मे भर्ती है। मिल भी बिक चुकी है। अभी और क्या–2 होने वाला है पता नही। एक ही झटके ने मुझे आज फटे हाल बना डाला।

रामसिह जिन्दा है भी या नहीं, पता नही उसके परिवार का क्या हुआ होगा, मैंने कभी इस और ध्यान ही नहीं दिया।

आज कृष्णसिह को अपने कृत्यो पर पश्चाताप होने लगा। जब कृष्णसिह यह सोच ही रहा था, ठीक उसी वक्त, अपूर्व अपनी गाडी लेकर उनसे मिलने कृष्णसिह के पास पहुच गया। अपूर्व को देख कर कृष्णसिह ने दोनो हाथ जोडकर कहा वास्तव मे आप देव–पुरुष हैं। मेरे बेटे को लाखो रुपये खर्च करके मृत्यु के मुख से बचा लिया। आपके उपकारो को मैं कभी नहीं भूल सकता। तब अपूर्व ने कहा–"अरे इसमे कौन–सा उपकार। यह तो मेरा कर्त्तव्य था, जिसे मैंने पूरा किया है। **जो मानवता की उपासना करना नहीं जानता हो, वह मानव नहीं अपितु हैवान होता है।"**

अपूर्व के ये शब्द कृष्णसिह को भीतर तक चीरते चले गए। उसकी आत्मा हाहाकार कर उठी–"अहो ! वाह रे मेरी नीचता ! मैंने कैसा कुकर्म कर डाला, जिसका परिणाम आज मैं भुगत रहा हू। "कृष्णसिह को इस प्रकार विचारो मे खोया देखकर अपूर्व बोला–"अरे आप क्या सोचने लग गए ?"

कृष्णसिह–"कुछ नहीं, कुछ नही। ऐसे ही अतीत के जीवन की बाते याद आ गई। जिस समय मैं धन के पीछे अन्धा बना हुआ था, जिसके कारण मैंने कितने क्या कुकर्म कर डाले, उसका भान ही नही रहा। आज जब ऐसी विपत्ति मे आया, तब मेरी आखे खुली कि मैंने इन्सान के जीवन मे रहकर एक राक्षस से कम काम नही किया था, और तो और अपने परिवार वालो को भी घर से निकाल दिया। आज उनका क्या हाल हुआ होगा, कुछ भी पता नही।"

कहते–कहते कृष्णसिह की आखो मे झर–झर आसू गिरने लगे। अपूर्व समझ गया कि अकल को पश्चाताप हो रहा है। **सुबह का भूला शाम को भी घर आ जाता है तो भूला नहीं कहलाता।** प्रकृति ने इन्हे स्वत ही कर्मो का बदला दे दिया। मुझे अब तो इन्हे सहारा देना है, यही सोचकर अपूर्व, कृष्णसिह के चरणो मे पड गया।

कृष्णसिह एकदम पीछे हट गया और हाथ जोडता हुआ बोला "आप देव पुरुष, मेरे नीच के पैरो मे क्यो झुक रहे हैं। आपके चरणो मे तो मैं झुकता हू। तब अपूर्व ने कहा–अकल ! क्या आपने मुझे पहचाना नहीं। मै आपके भाई रामसिह का दूसरे नम्बर का बेटा अपूर्व हू, जो आज से करीब 13 वर्ष पहले आपके पास भाई की रक्षा के लिये 500 रुपये मागने आया था।"

अपूर्व की बात सुनते ही कृष्णसिह सब कुछ समझ गया। उसे बहुत आश्चर्य हुआ कि वह फटेहाल आज करोडो का मालिक बन बैठा है। सच है–कल किसके पुण्य का उदय आता है, सामान्य व्यक्ति नहीं जानता। इसी ने मेरी मिल भी खरीद ली। कहा मैं इसके भाई को मरने से बचाने के लिये 500 रुपये नही दे सका और कहा यह जो राजेश की रक्षा के लिये पाच लाख रुपये खर्च कर चुका है। डायमण्ड के बाजार मे इसकी

सबसे अधिक प्रतिष्ठा है। बडे–बडे सेठ साहूकार, अफसर भी इसकी इज्जत करते हैं। यह सोचते–सोचते कृष्णसिह ने अपूर्व को अपने सीने से लगा लिया और अपने कुकृत्यो की माफी मागने लगा। पश्चात्ताप के आसू बहाने लगा। कृष्णसिह का पापी मन अपूर्व को हृदय से लगाकर अश्रुधार बहाते–बहाते हल्का होता चला गया।



(18)

सेठ हजारीमल का करेक्टर प्रारम्भ से ही अच्छा नहीं था। धन के गुमान मे आकर वह किसी भी बहू–बेटी को छेडने मे नही हिचकता। चन्द्रमुखी पर भी सेठ हजारीमल ने डोरे डालने की कोशिश की थी, पर वीर अपूर्व ने उसे बुरी तरह असफल कर दिया था और ऐसा सबक सिखाया कि जिन्दगी मे कभी किसी शरीफ औरत पर कुदृष्टि डालने की कोशिश न करे। पर जिसकी आदत एक बार बिगड जाती है, वह जल्दी से छूटती नहीं है। कोई एकाध ही ऐसा पुरुष होता है जो अपनी आदतो को सदा के लिये छोड सके। पर हजारीमल ऐसा नहीं था कि चोट खाकर अपनी आदत को छोड दे। पर हा इस घटना से उसके जीवन मे यह परिवर्तन जरूर आ गया था कि वह जल्दी से किसी शरीफ महिला को फासने की कोशिश नहीं करता अब वह वेश्याओ के अड्‌डो पर पहुचने लगा। वही बीयर पीना–मास खाना और विष सेवन करना आदि अनैतिक काम करने लगा। बाहर से वह ऊची सोसायटी के बीच जीता था। बडे–2 सेठ साहूकारो से उसके अच्छे सबध थे, समाज मे प्रतिष्ठा प्राप्त थी। सभी लोग उसका सम्मान करते थे। किसे मालूम कि इस सफेदपोश श्रीमत का अन्तरग जीवन कैसा है ? धन के पीछे सेठ हजारीमल के सभी दुर्गुण दबे हुए थे। पर आखिर पाप का घडा कब तक टिकने वाला था। आखिर एक दिन ऐसा आता है, जब पाप फूटकर ही रहता है। बारूद के अन्दर आग की एक चिनगारी डालकर फिर उसे कितना ही डिब्बो मे बद करने की कोशिश की जाय, पर विस्फोट होकर ही रहता है। व्यक्ति जब पाप करता है, तब उसका परिणाम की ओर ध्यान नहीं जाता। पर जब परिणाम सामने आता है, तब समय इतना अधिक बीत जाता है कि उसके हाथ मे पश्चात्ताप के अलावा कुछ नहीं रह जाता।

सेठ हजारीमल के पाप का घडा भी अब भर चुका है। विस्फोट होने भर की ही देरी है।

अपूर्व अब यही सोच रहा है कि कृष्णसिह को तो प्रकृत्ति ने ही कर्मो का बदला चुका दिया। पर सेठ हजारीमल का क्या हाल है। मुझे अब उसे

भी सबक सिखाना है कि भविष्य मे यह तो क्या कोई भी व्यक्ति किसी औरत का जीवन बर्बाद करने की कोशिश न करे।

अपूर्व ने अत्यन्त होशियार करीम और रहीम नामक दो जासूस बुलाये और उन्हे बिना काम बतलाए पहली ही बार पच्चीस–पच्चीस हजार रुपये दिये। उसके बाद कहा कि "देखिये आपको अभी विशेष कुछ नही करना है। सबसे पहले तो आप यह जानकारी करिये कि हजारीमल नामक सेठ जिसकी मनीष मार्केट मे "हजारीमल एण्ड कम्पनी" के नाम की दुकान है। वह अभी कहा रहता है ?" उसके चौबीस घण्टे की दिनचर्या क्या है ? कब कहा जाता है ? इसकी अत्यत गोपनीय ढग से खोज करके मुझे सूचित करिये।"

करीम–रहीम को काम करने से पहले ही पच्चीस हजार रुपये तो मिल ही गए और काम भी कोई विशेष नही बतलाया गया। दोनो ने अपूर्व को कहा–"जी साहब ! हम दस दिन मे सेठ हजारीमलजी की सारी दिनचर्या बतला देगे।" अपूर्व ने कहा–"थेक्यू। अब आप जा सकते हैं।"

करीम और रहीम दोनो उठे और अपूर्व को प्रणाम करके चले गए और बडी मुस्तैदी एव होशियारी के साथ सेठ हजारीमलजी की टोह लेने लगे। मनीष मार्केट मे इधर–उधर खोजकर के उन्होने सेठ हजारीमल के घर का पता मालूम कर लिया। अब करीम और रहीम अपनी अपनी अगली योजना पर विचार करने लगे। करीम एक मजदूर का रूप बनाकर सेठ "हजारीमल एण्ड कपनी" की दुकान के आस–पास दिन भर चक्कर काटने लगा और रहीम ने सेठ हजारीमलजी के बगले के पास ही एक निर्माण कार्य चल रहा था, वहा मजदूर का काम करने चला गया। ताकि वहा से सेठ हजारीमलजी के बगले मे कौन आ रहा है, कौन जा रहा है ? सारा ध्यान रखा जा सके। सेठ हजारीमलजी के बगले के पास ही एक फ्लेट महीने भर के लिये किराये भी ले लिया था ताकि रात्रि मे कौन कहा जाता है इसका पीछा किया जा सके। तीन दिन तक तो करीम–रहीम ने इसी प्रकार खोज जारी रखी। इन तीन दिनो मे उन्होने यह जानकारी तो बहुत अच्छी तरह कर ली कि सेठ हजारीमल कब कहा जाता है। इनके बगले मे कौन–कौन रहते हैं। दुकान मे कौन–कौन व्यक्ति काम करते हैं, उनके नाम क्या हैं और वे कहा रहते हैं। इस जानकारी के बाद

उन्होने आगे की जानकारी करने के लिये अगली योजना बनाई, तदनुसार दोनो ही युवक चौथे दिन स्नानादि करके अच्छा सफारी सूट पहनकर, सेट लगाकर एक बहुत बडे रईस का रूप बनाया। साथ मे एक सिगरेट का लाइटर जिससे की फोटो ली जा सके और टेपरिकार्डर और पिस्तौल ले ली। और सध्या के समय "हजारीमल एण्ड कपनी" की दुकान पहुच गए और उनसे बातचीत करने लगे। सेठ हजारीमल के यहा विदेश से दो नबर का सभी तरह का बहुत माल आता था, वह उसे यहा बेचकर बहुत प्राफिट उठाता था।

करीम–रहीम, सेठ हजारीमल को एक तरफ ले जाकर बोले "हम सुल्तानगढ गाव के जमींदार हैं। हमे पाच किलो कच्चा सोना चाहिये, बोलो तुम्हारे पास है ?" सेठ हजारीमल के पास अभी ही दस किलो सोना विदेश से आया था। उसने सोचा अच्छा मौका है। इन गाव के जमीदार के पास बहुत धन होता है, अच्छे दामो मे सोना बिक जाएगा। यह सोचकर वह बोला "हा–हा आपको जितना चाहिये उतना सोना मिल जायगा। " करीम बोला–"कब मिलेगा सोना हमे जल्दी चाहिये।"

सेठ हजारीमल– "आप चाहे तो अभी ही मिल सकता है।" "पर उनका मूल्य अभी ही चुकाना पडेगा।"

रहीम–"हा–हा मूल्य–वूल्य की चिन्ता मत करो, सेठ तुम जितना कहोगे उतना दे देगे। जरा पहले बतलाओ तो सही।"

लाखो करोडो का व्यापार करने वाला सेठ हजारीमल आज इनके चक्कर मे आ गया, और अपने निजी व्यक्तियो को सकेत देकर दूसरी जगह से सोना मगवा दिया और उन्हे दिखला भी दिया।

करीम बोला–"सेठजी ! ठीक है, हम कल आपको 20 लाख रुपये लाकर देगे और तभी सोना ले जाएगे।" यह कहकर दोनो चले आए। सेठ वापसी का इन्तजार करता ही रह गया। इधर सात–आठ दिनो मे सेठ हजारीमल के जीवन की बहुत कुछ खोज करके करीम–रहीम पुन अपूर्व के पास पहुच गए और उन्हे भी सारी रिपोर्ट बतलाने लगे–"सेठ हजारीमल सुबह दस बजे तक अपने बगले मे ही रहते हैं, उनके बगले मे उनकी पत्नी और सुधीर, महेश, यदुवीर तीन नोकर हैं, जो उडीसा के रहने

वाले हैं। पहले सेठ हजारीमलजी चेम्बूर के पास एक फ्लेट मे रहते थे और अब मेरीन ड्राइव मे उनका एक बहुत बडा फ्लेट है। सेठ हजारीमल दस बजे घर से कार लेकर निकलते हैं और सीधे मनीष मार्केट मे अपनी ऑफिस मे जाते हैं वहा जो विदेश से नम्बर दो का माल आता है। उसे खरीद लेते हैं और बाहर या बम्बई के लोगो को अच्छे दामो मे बेच देते हैं। उनकी ऑफिस मे दस व्यक्ति काम करते हैं, उनमे सजय नाम का युवक इनका विश्वस्त व्यक्ति है। दसो ही व्यक्ति बम्बई मे ही अमुक–अमुक जगह रहते हैं, सेठ हजारीमल ऑफिस से दो बजे घर आकर भोजन करते हैं और पुन चार बजे ऑफिस चले आते हैं। इनके सेठ बशीधर और सेठ कश्मीरीलाल दो घनिष्ट मित्र हैं। ये तीनो रात को दस बजे अपनी कारे लेकर वेश्या के अड्डे पर पहुचते हैं। और वहा से बारह–साढे बारह बजे निकलते हैं और अपने–अपने घर चले जाते हैं। इस रिपोर्ट के साथ करीम–रहीम ने एक टेप रिकार्ड की कैसिट और कुछ फोटो अपूर्व के सामने कर दिये। अपूर्व ने टेप रिकार्ड सुना तो उसमे सेठ हजारीमलजी की आवाज थी कि मेरे पास पाच किलो कच्चा सोना है, उसकी कीमत 20 लाख रुपये है यह आवाज टेप थी। इधर उस फोटो मे कच्चे सोने का चित्र एव उसके साथ सेठ हजारीमल का चित्र था। इन आवाज और फोटो को देखकर यह स्पष्ट सबूत हो गया कि सेठ हजारीमल तस्करी का काम करते हैं। पर अपूर्व यह सोचने लगा कि यह तो ठीक है किन्तु सेठ हजारीमल के साथ मुझे तो इन सफेद पोश हैवानो को यह सबक सिखाना है कि वे धन के गुमान मे आकर किसी महिला पर बलात्कार न करे। वह इतने से सबूतो से नहीं हो सकता। अपूर्व ने अब करीम और रहीम को अगली योजना बतलाते हुए कहा कि "देखो तुमने बहुत कुछ काम कर दिया है। अब थोडा सा काम और करना है, वह यदि पूरा हो जाता है तो मैं तुम्हे पच्चीस–पच्चीस हजार रुपये और दे दूगा।"

करीम–रहीम बोले "बतलाइये क्या काम है, वह भी पूरा कर देगे।"

अपूर्व–"वह काम यह है कि तुम अत्यन्त गोपनीय ढग से इन सेठो का वेश्याओ के अड्डे पर मदिरा पीते हुए खाना खाते हुए एव गलत हरकत करते हुए के फोटो ला दो।"

करीम–"यह भी हो जाएगा।"

अपूर्व–"थैंक्यू ! कितने दिन मे हो जाएगा ?"

रहीम–" करीब दस दिन मे। पर इसके लिये वेश्याओ के अड्डे पर जाना पडेगा और उन्हे खुश करने के लिये 20–30 हजार का खर्च हो जाएगा वह आपको देना होगा।"

अपूर्व ने उसी वक्त तीस हजार रुपये उनके हाथो मे सौंप दिये। करीम–रहीम ने अब अगली योजना बनाई और वे शाम को नौ बजे उसी वेश्या के अड्डे पर जा पहुचे, जिस पर सेठ हजारीमलजी आदि जाया करते थे।

दोनो युवक दिखने मे नौजवान, सुन्दर एव रईस लगते थे। वे वेश्याओ की हैड के पास पहुचे।

जब वेश्याओ की हैड ने देखा कि आज तो कोई नये परिन्दे आए हैं और वे भी रईस लगते हैं। जरुर इनसे अधिक इन्कम होगी। यही सोच कर वह उन्हे अत्यत सजे–सजाए हॉल मे ले गई। और अन्य वेश्याओ को सूचना कर दी कि वे सभी सज कर हॉल मे आ जाए। हैड के निर्देशानुसार सभी गणिकाए हॉल मे पहुच गई। जिन्हे वह उन युवको को दिखाने लगी। पर युवक कुछ और ही सोच रहे थे उन्होने कहा हमे तो नृत्य देखना है और यह कहने के साथ ही दस हजार रुपये उसके हाथ मे सौंप दिये।

हैड को आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगी अभी तो कुछ हुआ ही नहीं और दस हजार रुपये मिल गए। जरुर इनसे बहुत कुछ मिलेगा। एक घण्टे तक नृत्य चलता रहा। अब सेठ हजारीमल आदि के आने का टाइम हो गया था, उनका उस हैड को सकेत था कि जब हम आए तब दूसरा कोई व्यक्ति नहीं होना चाहिये और आज ये दोनो युवक आये हुए थे। हैड वेश्या ने घण्टे भर के नृत्य के बाद बडी सफाई के साथ उन्हे उठा दिया। वे दोनो उठ भी गए और कल आने का कह कर चले गए। पर कल रात को वे नौ बजे न आकर साढे दस बजे पहुचे। और इस टाइम पर सेठ हजारीमलजी आदि आए हुए थे। अब गणिकाओ की हैड असमजस मे पड गई। इन दोनो युवको को वापस भेजना भी ठीक नहीं है। क्योकि इनसे बहुत पैसे मिलने की आशा है। और अभी सेठ हजारीमलजी आदि बैठे हैं।

क्या किया जाय। उसने तीसरा रास्ता निकाला और दोनो युवको को ऊपर बुलाकर सेठ हजारीमलजी के पास वाले रूम मे ही बिठा दिया और बोली "आप कुछ देर बैठिये, मैं अभी सारी व्यवस्था करती हू।" यह कहकर वह चली गई। इधर करीम–रहीम ने पास वाले रूम मे वेश्याओ के साथ बैठे मदिरा पी रहे–मास खा रहे एव गलत हरकत कर रहे उन सफेद पॉश हैवानो के बहुत ही तरकीब से फोटो खिच लिये, जिसकी जानकारी किसी को नहीं हो पाई।

सेठ हजारीमलजी आदि को तो कोई चिन्ता थी ही नही, क्योकि उन्हे विश्वास था कि कोई भी यहा आने वाला नही है, इसलिए दरवाजा खुला ही था और करीम–रहीम ने मौके का लाभ उठा लिया। बस अब उन्हे कुछ करना नहीं था। वे वापस बहाना बनाकर वहा से निकल पडे। और वे फोटो जाकर अपूर्व के हाथो मे थमा दिये। अपूर्व ने वे फोटो देखकर करीम–रहीम को वायदे के अनुसार पच्चीस–पच्चीस हजार रुपये और देकर विदा कर दिया। अब अपूर्व ने अपनी योजना के अनुसार अगला कार्य भी क्रियान्वित किया। उन फोटो की अनेक कॉपिया बनाकर अनैतिकता एव भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने वाली अनेक पत्रिकाओ के पास गुप्त रूप से भेज दिये।

पत्रकारो ने जब प्रमाण सहित उन श्रीमतो के गलत कारनामे देखे तो उन्हे अच्छा मौका मिल गया, उन्होने दूसरे दिन ही पत्रिकाओ के मुख पृष्ठ पर बडी सुर्खियो मे फोटो एव समाचार छापे। किसी ने हैडिग लगाया–

"सफेद पॉश मे रहने वाले हैवान" तो किसी ने लगाया–"वासना के भूखे भेडिये श्रीमत" जो अपने को नैतिक सच्चरित्र मानते हैं, उनके काले कारनामे। तो किसी ने कुछ छापा तो, किसी ने कुछ छापा।

सुबह–सुबह ही जब सेठ हजारीमल के हाथ मे पत्रिका पडी और मुख पृष्ठ पर समाचार पढे तो उनका मस्तिष्क घूमने लगा। पूरी धरती घूमती नजर आई। क्योकि आज उनकी सारी इज्जत मिट्टी मे मिल चुकी थी। सफेद पॉश का अनावरण हो चुका था। अखबार घर–घर मे पहुच चुके थे। बडी सुर्खियो मे समाचार छपे होने से बहुतो ने अलग से भी प्रतिया खरीदीं। घर–घर मे इन सफेद पॉश हैवानो की चर्चा होने लगी।

जो मानवता एव सच्चरित्रता का दावा करते हैं। अपने आपको ऊचा मानते हैं आज उनके काले कारनामे दुनिया के सामने चौपट हो गये। सेठ हजारीमल मुह दिखाने के लायक नहीं रहे। उनकी हालत तो देखते ही बनती थी। अब दिन भर फ्लेट मे ही रहने लगे। फ्लेट से बाहर निकलना बन्द हो गया।

तीन दिन बाद सेठ हजारीमलजी के हाथ मे एक लिफाफा आया, जब उसे खोलकर पढने लगे तो उसमे लिखा था–

सेठजी ! याद करिये अपने अतीत के जीवन को ! आपने कितनी असहाय औरतो की विवशताओ का लाभ उठाकर उन्हे अपनी वासनाओ का शिकार बनाया था। आज से 12–13 वर्ष पूर्व एक बच्चे से चोट खाकर भी आपकी आदत मे सुधार नही आया। एक तरफ तो शरीफ इन्सान बनकर जनता के सामने प्रतिष्ठा पाते हैं और दूसरी तरफ आपके ये काले कारनामे। यह सच है कि जैसा करोगे– वैसा भरोगे।

आपके पाप का घडा भर गया था जो अब फूट चुका है। उस समय आपने धन के अभिमान मे सब कुछ कर डाला, अब उसका परिणाम भोगिये। यदि अब भी शाति से भोगेगे तो आपकी आत्मा को शाति मिल सकेगी।

आपका हितैषी

इस पत्र ने सेठ हजारीमल के मस्तिष्क पर अतीत के सारे काले कारनामो के चित्र ला खडे किये। आज वे उन्हे सोच–सोचकर पश्चात्ताप करने लगे। मैंने अपनी जिन्दगी मे कितने कुकर्म किये। अपने जीवन को हैवान् बना डाला। जिसके परिणामस्वरूप आज मैं किसी को मुह दिखाने लायक नहीं रहा हू। और तो और मेरी पत्नी भी मुझ से घृणा करने लगी है।

सेठ हजारीमल का जीवन अब नरक तुल्य बन गया। पत्रिकाओ मे ऐसी सूचना छपने से बहुत से व्यक्ति जो ऐसा गलत काम करते थे, उन्होने तुरन्त छोड दिया। सोचने लगे आज सेठ हजारीमल के जीवन मे ऐसी घटना घटी है न मालूम कल हमारे जीवन मे घट जाय तो। यही सोच कर सेकडो–हजारो व्यक्तियो के जीवन मे बिना किसी के उपदेश दिये ही सुधार आ गया।

❑

(19)

अकल कृष्णसिंह एव सेठ हजारीमल को तो अपने कृत्यो का फल मिल चुका है, पर जिस व्यक्ति ने मेरे भाई पर कार घुमाई थी, वह कौन था और उसका क्या हाल है, यह जानना जरूरी है। एक दिन बैठा–बैठा अपूर्व यह विचार करने लगा।

आज से करीब 13 वर्ष पहले फरवरी महीने की यह घटना है। लोगो ने बताया मारुति कार थी और वह बम्बई की तरफ से आ रही थी। उसमे सद्य विवाहित युगल बैठा हुआ था। इसका मतलब उस मारुति कार का मालिक मेरीन लाइन या फिर बालकेश्वर का निवासी होना चाहिए। मारुति कार उस समय नई–नई ही निकली थी।

अत यह तो मारुति कार कम्पनी से ही खोज की जा सकती है कि उस समय तक बम्बई के एरिये मे किस–किस के पास कारे आ चुकी थी। अत सबसे पहले कम्पनी से खोज करना चाहिए। यही सोचकर अपूर्व ने मारुति कार की कम्पनी से खोज करना प्रारम्भ किया कि तेरह वर्ष के पूर्व कम्पनी से किस–किस के पास बम्बई एरिये मे कारे आई थी। यह खोजकर ली गई, उनके पते नोट कर लिये गए। अब इसमे से मेरे भाई को मारने वाला कौन व्यक्ति था। यह जानने के लिये अपूर्व ने सोचा, लोगो ने बतलाया था कि उस मारुति कार मे कोई सद्य विवाहित जोडी थी। इसका मतलब उसकी उस समय ही मेरीज हुई थी। अब उस जोडी की अनुमानत आयुष्य 36 से 40 वर्ष के अन्दर होनी चाहिये। अपूर्व ने अपने आदमियो से खोज करवाना प्रारम्भ किया, कि इन–इन पतो पर खोज की जाय कि–किस परिवार मे ऐसा युगल है जिसकी इस समय 36 से 40 वर्ष के अन्दर उम्र है। निरन्तर एक महीने तक खोज करने पर अपूर्व के आदमियो ने ऐसे तीन–चार पते बतलाए–जिनकी उम्र इस समय 36 से 40 वर्ष की है।

अब अपूर्व सोचने लगा कि इन तीन–चार मे से भी कौन व्यक्ति है, जिसने मेरे भाई पर गाडी चलाई थी। इस पर अपूर्व विचार कर ही रहा था कि उसे एकदम विचार आया कि अभी–अभी मेरे आदमियो ने यह भी

बताया कि उन चारो पतो मे से एक पते वाले युगल मे से एक आदमी की टाग टूटी हुई है तो उसके वाइफ का हाथ टुटा हुआ उनके बारह वर्षीय लडके की रीड की हड्डी टूट जाने से वह तो उठ–बैठ ही नहीं सकता। यह सब क्या है।

हा उस दिन महायोगी ने भी फरमाया था कि किये हुए कर्मो को भोगे बिना मुक्ति नही मिलती । हो न हो, यही वह व्यक्ति तो नही है जिसने आज से तेरह वर्ष पूर्व मेरे भाई पर गाडी चलाई थी। इसकी पूरी खोज करके सबूत इकट्ठे करने चाहिये।

उस व्यक्ति का नाम किशोरीलाल है। उसकी पत्नी का नाम सन्ध्या है। उसके बहुत बडा फ्लेट है। हा आज उसके पास मारुति कार तो नहीं पर उससे भी बढिया मर्सिडिज कार है। पहले इससे परिचय साधना चाहिए। खोज करने पर मालूम हुआ कि वह कपडे का बहुत बडा व्यापारी है, "कृष्णसिह मिल्स लिमिटेड कम्पनी" से बहुत माल खरीदता है। अब उस मिल को मैंने खरीद ली और उसका नाम बदल दिया। खैर यह मुझे अभी पूरा नहीं जानता है। क्योकि मैं वैसे भी मिल मे कम ही बैठता हू। पर यह मिल का ग्राहक जरूर है। तो इसके स्वास्थ्य के विषय मे पूछने के लिये मुझे जाना चाहिये। इसी निमित्त इससे मैं अन्य बाते भी जान सकूगा। यही सोचकर अपूर्व एक दिन अपनी इम्पोर्टेड गाडी लेकर किशोरीलाल के बगले पर पहुच गया और सीधा उनके पास पहुचा। किशोरीलाल ने अपूर्व को कभी देखा नही था, हा उसका नाम जरुर सुना था और यह भी ज्ञात हो गया था कि "कृष्णसिह मिल्स" को अपूर्व नाम के युवक ने ही खरीदी है। पर उससे मिलने का काम नहीं पडा होने से किशोरीलाल उसे पहचान नहीं सका। उसने अपूर्व को देखते ही पूछा—"साहब ! आपका परिचय।"

"मेरा नाम अपूर्व कुमार है," अपूर्व ने बतलाया।

"अहो तो आप ही "कृष्णसिह मिल्स" के नये मालिक मिस्टर अपूर्वकुमार हैं ?"

"आइये ! आइये ! आपने क्यो तकलीफ उठाई। कोई काम था तो मैं ही हाजिर हो जाता" किशोरीलाल ने कहा।

"नहीं–नही ! काम तो कुछ नही है। मैं तो आपकी तबीयत के

विषय मे पूछने चला आया हू। आप मेरी मिल के बडे ग्राहक हैं। अत मेरा कर्त्तव्य हो जाता है आपके स्वास्थ्य के विषय मे जानकारी लेना।'' अपूर्व ने बात बनाई। ''बडी कृपा है आपकी,'' किशोरीलाल बोला।

अपूर्व–''आपके यह एक्सीडेण्ट कब हो गया ?''

किशोरीलाल–''हम लोग कार से खण्डाला जा रहे थे। उस समय सामने से एक ट्रक से टकरा जाने से एक्सीडेण्ट मे मेरी टाग, वाइफ का हाथ और बच्चे की रीढ की हड्डी क्रेक हो गई।''

अपूर्व–''बडी दर्दनाक घटना घटी है।''

किशोरीलाल–''हा साहब ! यह तो अच्छा रहा कि कार, ट्रक से टकरा कर वही रुक गई। अन्यथा तो बहुत बडे खड्डे मे जा गिरती। तब तो जान से भी हाथ धोना पडता।''

अपूर्व–''आपके पुण्य ने यह बहुत बडी सहायता की।''

किशोरीलाल–'हा साहब ! वस्तुत पुण्य–पाप का उदय तो व्यक्ति के जीवन मे आता ही है।''

अपूर्व–''इसमे कोई सन्देह नहीं। मैंने एक महायोगी के मुख से सुना है कि जो व्यक्ति जैसा करता है, उसे वैसा ही फल भी भोगना पडता है। अच्छे कर्म का पुण्य फल और बुरे कर्म का पाप रूप फल भोगे बिना उसका छुटकारा नही हो सकता। महायोगी के ये वचन मुझे शत–प्रतिशत सत्य नजर आते हैं। मेरे जीवन मे ऐसी अनेक घटनाए घट चुकी हैं, जिससे मैंने अनुभव किया कि वस्तुत सुकृत्यो का पुण्य रूप फल और दुष्कृत्यो का पाप रूप फल तस आत्मा को मिलता ही है।''

किशोरीलाल–''हा, साहब। बात तो सच है। मुझे भी आज अपना ही पाप कचोट रहा है। क्या बताऊ मैं आपको। जब भी मैं एकान्त मे सोचता हू तो मेरा ही दुष्कृत्य मेरे सामने आ खडा होता है। मुझे लगता है आज जो दारुण विपाक मैं भोग रहा हू, वह उसी दुष्कर्म का परिणाम है।''

अपूर्व सोचने लगा– 'हो न हो यही वह युगल लगता है, जिसने मेरे भाई की हत्या की है पर बात को और स्पष्ट करना जरूरी है।'' यही सोचकर अपूर्व कहने लगा– 'हा किशोरीलाल जी ! कई बार हमारे कर्मों का उदय हमे इसी भव मे मिल जाता है तो कई बार अगले भव मे भी मिलता है।''

किशोरीलाल–"लेकिन मुझे तो इस भव के कर्म का फल इसी भव मे मिल रहा लगता है ?"

"अपूर्व–"आपने ऐसे क्या कर्म कर लिये कि जिसका फल आपको भोगना पड रहा है ?"

किशोरीलाल–"क्या बताऊ, अपूर्व साहब ! जवानी का रग कुछ और ही होता है और नववधू की रगरेलियो मे व्यक्ति सब कुछ भूल जाता है।"

अपूर्व–"आपके जीवन मे ऐसा क्या घट गया है। जिससे आपको ऐसा फल भोगना पड रहा है ?"

किशोरीलाल–"साहब ! आपसे क्या छिपाना। बात यो हुई। जब मेरी मेरीज हुई ही थी। उस समय की घटना है। मैं अपनी नववधू को लेकर मारुति कार से थाना के तालाब मे सन्ध्या का मजा लेने के लिये जा रहा था। उस समय की घटना है। जब कार चेम्बूर के चौराहे पर पहुची। उस समय लाल बत्ती जली होने से गाडी रोकनी पडी और जब हरी बत्ती जली कि एक साथ पचासो कारे चल पडी। मैंने भी अपनी कार को गति दे दी थी। पर मैं अपनी पत्नी की बातो मे इतना अधिक मशगूल था कि एक बच्चा सामने से अचानक तेजी से लाइन क्रास कर रहा था। यद्यपि गल्ती बच्चे की थी। पर अन्य वाहनो ने तो उसे बचा लिया। पर मैं गाफिल था। ज्योही वह मेरी गाडी के सामने आया तो मैं भी उसे बचाना चाहता था। पर गल्ती से बातो ही बातो मे मेरे पैर जो ब्रेक पर लगने चाहिये थे, वे ब्रेक पर न लगकर एक्सीलेटर को ही अधिक दबा गए। परिणाम स्वरूप गाडी रुकने की बजाय और तेज हो गई। और सामने वाले बच्चे से जा टकराई। ज्योहीं एक्सीडेण्ट हुआ और मुझे अपनी गल्ती का भान हुआ। पर अब क्या हो सकता था। जो हो चुका सो हो चुका। मैंने सोचा अब अगर मैं गाडी रोकूगा तो ये झोपड पट्टी वाले मेरी शान बिगाड देगे। इसलिए मैंने उनसे बचने के लिए गाडी की रफ्तार और बढा दी। और आगे जाकर दूसरे रास्ते से पुन अपने फ्लेट मे सुरक्षित पहुच गया। कई दिनो तक मेरे मन मे भय समाया रहा। पर जब कोई भी मुझे पकडने नही आया तो बात आई गई हो गई। मैं साफ–साफ बच गया। लेकिन वर्षो बाद जब मेरी कार का यह एक्सीडेण्ट हुआ और मेरा मेरी पत्नी एव बच्चे के फेक्चर हो गया तो मुझे मेरे ही जीवन की बहुत

पुरानी बात याद हो आई। आज मेरी आत्मा यही कहती है कि आजं तू कष्ट भोग रहा है, वह उसी दुष्कृत्य का परिणाम है।" अपूर्व, किशोरीलाल की बात बडे ध्यान से सुनता जा रहा था। उसे अब यह विश्वास करने मे कोई सन्देह नही रह गया कि यही वही व्यक्ति है जिसकी कार से अतुल की मृत्यु हुई थी। पर प्रकृति स्वय ही उसे कष्ट दे रही है तो फिर उसे क्या कष्ट दिया जाय। इसे स्वय को यह अहसास भी हो रहा है कि कर्मो का विपाक, मेरे उसी दुष्कृत्य का परिणाम है। इसलिये अब इसे अधिक कष्ट नही देना चाहिये। यही सोचकर अपूर्व ने बात बनाते हुए कहा–"किशोरीलालजी ! वस्तुत यह सत्य है कि जैसा बीज बोएगे, वैसा ही फल मिलेगा। आपकी आत्मा तो वस्तुत पवित्र है जो आप अपने कृत्य पर पश्चात्ताप कर रहे हैं। कई लोग तो ऐसे भी होते है जो पाप करके भी अकडते हैं। गल्ती स्वय करते हैं, दोष दूसरो को देते हैं। ऐसे व्यक्ति इस जन्म मे ही नही, जन्म जन्मान्तर मे दु ख भोगते रहते है।"

किशोरीलाल–"वस्तुत आपने तो छोटी उम्र मे धन के साथ आत्म ज्ञान मे भी अच्छी दूरी तय की है। इस उम्र मे ही आपका ऐसा अपूर्व ज्ञान आपके नाम को यथार्थ कर रहा है।"

अपूर्व–"अजी किशोरीलालजी ! ज्ञान–वान तो कुछ नहीं। यह थोडा बहुत नॉलेज मुझे उन महायोगी के उपदेश से मिल गया। उनके प्रवचन का एक–एक वाक्य मेरी आत्मा की गहराइयो मे उतर गया।"

किशोरीलाल–"महायोगी कोई पहुचे हुए योगी लगते हैं।"

अपूर्व–'हा, इसीलिये तो उन्हे महायोगी कहते हैं।"

किशोरीलाल–मैं भी कभी ऐसे पवित्र महापुरुष के दर्शन करने का लाभ लूगा।"

अपूर्व–"जरुर–जरुर ! वो तो सभी के हैं। अच्छा तो मैं अब चलू। कोई भी सेवा हो तो जरुर बतलाइयेगा। वैसे तो आप मेरे से व्यापारिक प्रतिष्ठान से जुडे हुए हैं ही, और मानवता की दृष्टि से भी मेरा आपकी सुरक्षा का कर्त्तव्य बन जाता है।"

यो कहता हुआ अपूर्व बाहर चला आया। अपूर्व के अपूर्व ज्ञान, अतुल दौलत एव अत्यन्त शिष्टता से किशोरीलालजी अभिभूत हो गए।

❑

(20)

चेतना के अत्यन्त आग्रह के कारण सेठ गिरधारीलालजी ने कुछ समय के लिये लडके की खोज बन्द करदी। सोचा अभी तो लडकी की कोई विशेष उम्र नही है। अट्ठारह वर्ष की ही है। बीस–बाइस वर्ष की उम्र मे भी शादी की जा सकती है। तब तक उस छोकरे का भूत भी इसके माथे से उतर जाएगा। यही सोचकर गिरधारीलालजी कुछ अधिक चार वर्ष तक मौन रह गए।

इधर अपूर्व ने चार वर्ष मे सभी दृष्टियो से अच्छी दूरी तय कर ली। पूरे जौहरी बाजार मे अपूर्व का नाम था। पूरे बम्बई मे चन्द्रमुखी पाउडर की प्रतिष्ठा थी। और अब तो "कृष्णसिह मिल" खरीद लने से इण्डस्ट्री मे भी अपूर्व का नाम फैलने लगा था। सेठ गिरधारीलाल की पारखी आखो से भी अपूर्व की बढती हुई योग्यता छिपी न रह सकी। गिरधारीलालजी सोचने लगे– वस्तुत यह अपूर्व नाम का युवक मेरी चेतना के लिये बहुत ही योग्य साबित होगा। यह सुन्दर और स्मार्ट तो है ही साथ ही धन सम्पत्ति की भी इसके पास कोई कमी नही है। मुझे इसके साथ चेतना के सम्बन्ध के लिये जरुर कोशिश करनी चाहिये। सेठ गिरधारीलालजी इन्हीं विचारो के पशोपेश मे एक दिन अपूर्व के बगले पर पहुच गए। उस समय बगले पर अपूर्व तो था नहीं, पर उसकी मम्मी चन्द्रमुखी और डेडी रामसिह मौजूद थे। रामसिह ने सेठ गिरधारीलाल जी का स्वागत किया और उन्हे सोफासेट पर बिठाया। रामसिह यद्यपि सेठ गिरधारीलालजी को जानते नहीं थे, पर नवागन्तुक किसी उद्देश्य से ही बगले पर आया है, यही सोचकर उन्होने शिष्टता निभाई। इधर–उधर की सामान्य चर्चा के बाद ही सेठ गिरधारीलालजी अपनी बात पर आ गए। वे सेठ रामसिह से बोले। "आपका लडका अपूर्व बहुत ही स्मार्ट एव सुन्दर है। जौहरी बाजार मे उसका सिक्का चलता है। मेरी इच्छा है कि मेरी चेतना आपके अपूर्व के लिए योग्य साबित होगी। आपकी आर्थिक सम्पन्नता के सामने तो मैं कुछ भी नहीं हू। फिर भी एकाकी सतान हे, बहुत अच्छे ढग से विवाह कर दूगा। बस आपका ओर हमारा रिश्ता मजबूत हो जाय, ऐसा करियेगा।"

सेठ गिरधारीलालजी की बात सुनकर रामसिहजी ने कहा–"आपका कहना तो उचित है। रोज कोई न कोई व्यक्ति सबध के लिए आ ही रहे हैं। पर जब तक अपूर्व की इच्छा नही होती, तब तक कोई काम बन नहीं सकता। हमने भी अपूर्व को अनेक बार समझाया कि तुम अब विवाह के योग्य हो गए हो, अब तुम्हे विवाह कर लेना चाहिए। पर उसकी ओर से अब तक कोई स्पष्ट उत्तर नही मिला है। जब तक उसकी विवाह करने की इच्छा नहीं हो जाती, हम उस पर जोर नहीं डालते हैं। यदि उसे आपकी लडकी पसन्द आ जाय और वह शादी करने के लिये तत्पर हो जाय तो इससे बडी हमे और क्या खुशी होगी ?"

सेठ गिरधारीलालजी–"आप अपूर्व से कहियेगा। और एक दिन ऐसा प्रोग्राम बनाये कि आप सभी मेरे बगले पर पधारे। वहीं अपूर्व और चेतना का मिलन भी हो जाएगा। मुझे विश्वास है कि अपूर्व को चेतना पसन्द आ ही जाएगी। आप तो आज ही अपूर्व से बात करके तारीख निश्चित करके मुझे सूचित कर दीजिये, ताकि मैं आपके स्वागत की उचित व्यवस्था कर सकू।"

रामसिहजी–"जरुर–जरुर, आज मैं अपूर्व से बात करूगा। यदि उसकी भावना होगी तो जरुर आपके यहा चेतना को देखने आएगे।

सेठ गिरधारीलालजी बात–चीत करके उठ चले और सीधे अपने बगले पर पहुचे। जाते ही उन्होने पत्नी और चेतना को बुलाया। और चेतना को सबोधित करते हुए बोले–"देखो बिटिया, तुम्हारी प्रतिज्ञानुसार पाच वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। हमारी जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं है। यदि तुम हमारी शाति से मृत्यु चाहती हो तो अब विवाह करलो। जिससे हमारा सबसे बडा भार हल्का हो जाएगा। आज ही मैं एक अत्यन्त सुन्दर–स्मार्ट लडके से तुम्हारे सबध की बात करके आया हू। लडका लाखो मे एक है। ऐसा लडका जल्दी से मिलता नहीं है। भगवान करे यदि जच जाय तो यह सबध सबसे बढिया सबध होगा।"

चेतना पिता की बात सुनकर एकदम विचार मे पड गई। अब उसकी प्रतिज्ञा के पाच वर्ष भी पूरे होने जा रहे हैं और इधर सेठ गिरधारीलालजी ने इस सीरियस मूड मे बात कह दी कि चेतना से कुछ भी कहते नहीं बन पर रहा था। उसने जो पाच वर्ष पहले अपूर्व के लिये

प्रतिज्ञा की थी, वह आज भी उसी प्रतिज्ञा पर दृढ है। भले इन वर्षो मे उसका अपूर्व से मिलन न रहा हो, पर अन्तरग की गहराइयो मे आज भी उसी की छवि समाई हुई है। यद्यपि चेतना और अपूर्व का मिलन तो इन वर्षो मे नहीं हुआ, तथापि चेतना दूर से ही अपूर्व की हर गतिविधि का ध्यान रखती थी। अपूर्व कहा रहता है ? क्या करता है ? ये बाते उसे ज्ञात थी।

आज जब गिरधारीलालजी ने ऐसे मूड मे बात कही तो चेतना ने फिलहाल पिताजी को सान्त्वना देने की दृष्टि से उनकी बात मे बात मिलाना ही उचित समझा। चेतना बोली–"डैडी ! आपका कहना उचित है, अब मेरी प्रतिज्ञा के पाच वर्ष भी पूर्ण होने जा रहे हैं। मैं आपका दिल दुखाना नहीं चाहती। पर आप यह तो बतलाइये कि आप किस लडके की बात कह रहे है ? क्या नाम है उसका ?"

सेठ गिरधारीलालजी ने सोचा अब तीर निशाने पर लगा है, लगता है, चेतना मेरी बात मान जाएगी। सेठ गिरधारीलालजी बात को विस्तार देते हुए बोले–बिटिया ! मैं जिस लडके की बात कह रहा हू वह करोडो का मालिक है। बालकेश्वर मे उसके स्वय का करीब डेढ करोड का तो फ्लेट ही है। मर्सीडिज कार है। अच्छा व्यापार है। सभी तरह से सम्पन्न है वह । मैं तो यही कोशिश कर रहा हू कि मान जाय। उसके पाता–पिता का कहना है कि यह तो लडके पर निर्भर है। यदि उसे लडकी पसन्द आ जाय तो हमारी तरफ से कोई मनाई नही है। अब तक तो जितने भी सम्बन्ध आए हैं, उन्हे वह नकारता चला गया है। मैंने उन्हे कहा मुझे विश्वास है कि मेरी चेतना आपके लडके को पसन्द आ जाएगी। बस आप एक दिन उसे देखने के लिये सपरिवार आ जाइयेगा। अब वे कभी न कभी देखने आने वाले हैं।

सेठ गिरधारीलालजी की बात को चेतना ने बहुत ध्यान से सुना। वह अपूर्व के अलावा किसी से शादी करना ही नही चाहती थी और पिताजी का भी दिल दु खाना नहीं चाहती थी। इसलिये फिलहाल तो वह पिताजी की बात मे बात बनाते हुए बोली–"डैडी ! यह सब तो ठीक है। पर आपने उसका नाम पता नहीं बतलाया ?"

चेतना का आकर्षण देखते हुए सेठ गिरधारीलालजी खुश होते जा रहे थे। वे बोले "बिटिया ! उसका नाम अपूर्वकुमार है।"

अपूर्व नाम सुनते ही चेतना के कान खडे हो गए उसके विचार तेजी से दौडने लगे। कहीं अपूर्व वही तो नहीं है, जिसके लिये मैंने निर्ण लिया है। अगर वही हुआ, तब पिताजी की भी बात रह जाएगी और मेरी प्रतिज्ञा भी पूरी हो जाएगी। यही सोचकर पूरी जानकारी करने के लिये चेतना ने कहा–

"डैडी ! उसके पिताजी का नाम क्या है।"

"बिटिया ! उसके पिता का नाम श्री रामसिहजी है।"

यह सुनते ही चेतना की प्रसन्नता द्विगुणित हो गई। उसका मन बल्लियो उछल पडा। क्योकि अपूर्वकुमार के पिता का नाम भी रामसिहजी था। हो न हो अपूर्वकुमार वही होना चाहिये। चेतना ने सेठ गिरधारीलालजी से उसका पूरा पता पूछा तो तो गिरधारीलाल जी ने उसे एड्रेस बतलाया वही एड्रेस उस अपूर्वकुमार का था। अब चेतना को पूर्ण विश्वास हो गया। अपूर्व वही है जिसके लिये वह दृढ प्रतिज्ञ है। अब अपूर्व करोडपतियो की गिनती मे आने लगा है–इसलिये पिताजी भी उसकी प्रशसा कर रहे हैं। एक दिन तो वो था कि ये किसी भी हालत मे उससे मेरा विवाह करने को तैयार नहीं थे। खैर जो भी हो अब अगर यह उसी को चाह रहे हैं तो पुरानी बात नहीं छेडनी चाहिये। जिसे मैं चाह रही हू उसी के लिये पिताजी कोशिश कर रहे हैं तो फिर मुझे तो उसमे सहयोग ही देना है। यही सोचकर चेतना ने कहा–"डैडी ! बहुत अच्छा, अगर आपकी भावना यही है तो मैं आपका दिल दुखाना नहीं चाहती। यदि उस अपूर्वकुमार से मेरी मैरिज होती है तो मैं तैयार हू।"

बस यह सुनते ही सेठ गिरधारीलालजी प्रसन्नता मे झूम उठे, चेतना को गले लगा लिया और बोले–"मुझे तुमसे यही आशा थी कि तुम मेरी बात मान जाओगी। अब तो मैं अपूर्व से तुम्हारा सबध निश्चित करने के लिए जी-जान लगा दूगा। तुम किसी प्रकार का विचार मत करो।" सेठ गिरधारीलालजी की खुशी विशेष इसलिये भी थी कि उनके मन मे जो शका थी कि कहीं चेतना फिर उस फुटपाथिये छोकरे के लिये आग्रह न कर बैठे। पर सेठ गिरधारीलालजी को चेतना की बात सुनकर यह लगा

कि अब यह उस छोकरे को भूल चुकी है और इस अपूर्व के लिये तैयार हो गई है। बिचारे गिरधारीलालजी को क्या पता कि जिस अपूर्व के लिये वे प्रयत्न कर रहे हैं, यह अपूर्व वही है, जिसके लिये उन्होने पाच वर्ष पहले चेतना को मिलने की भी सख्त मना की थी। किसको पता, कब किसके दिन फिर जाय ? आज जब अपूर्व करोडो का मालिक बन गया तो गिरधारीलालजी उसके साथ चेतना का विवाह करने के लिये सब कुछ करने को तैयार हो गए।

रामसिहजी, रोज अपूर्व को किसी न किसी बहाने शादी के लिये आगाह कर ही दिया करते थे। आज भी जब अपूर्व ऑफिस से बगले पर आया तो डाइनिग टेबुल पर ही रामसिहजी ने बात छेड दी, बोले–"आज मध्यान्ह मे बगले पर सेठ गिरधारीलालजी आए थे।" अपूर्व ने बीच ही मे पूछ लिया–"किसलिये आए ? तो रामसिहजी बोले–"यहा और किसलिये आते, जो भी आता है, वह यही कहता है कि अपूर्व का विवाह उनकी लडकी से कर दिया जाय। गिरधारीलालजी भी इसीलिये आए थे।"

अपूर्व के भी अब पच्चीस वर्ष पूर्ण होने जा रहे थे। इधर पिताजी भी बार-बार विवाह का आग्रह करने लगे। अब अपूर्व भी विचार मे पड गया। उसे भी पाच वर्ष पहले की घटना याद थी, जिस चेतना ने उसके साथ जीने मरने की सकल्प लिया था, उसे उसने भी तो पसन्द किया था। अत अपूर्व के मन मे भी बात वही घूम रही थी कि विवाह करना है तो चेतना के साथ ही करना चाहिये, पर इन वर्षो मे चेतना की कोई खोज-खबर भी नहीं है। आखिर चेतना अभी तक विवाहित है या अविवाहित ? वह अपने सकल्प पर मजबूत है या नहीं ? यह सब जानना आवश्यक है। यही सोचकर अपूर्व भी अब तक के आ रहे सबधो को टालता चला गया। पर अब रामसिह एव चन्द्रमुखी के बार-बार आग्रह ने उसे भी सोचने के लिये विवश कर दिया।

रामसिहजी अपूर्व को विचारमग्न देखकर बोले "इतना क्या विचार करते हो, आखिर विवाह तो करना ही है, सेठ गिरधारीलालजी की इच्छा है कि तुम उनकी लडकी देख लो, देखने मे क्या हर्ज है। तुम्हे पसन्द आये तो उससे विवाह करना, वरना मत करना। पर इतने सम्बन्ध आए तुम कही पर भी देखने नही गए। मेरी इच्छा है कि तुम गिरधारीलालजी की लडकी को तो देख लो।"

अपूर्व पहले चेतना की खोज करना चाहता था। जब तक चेतना की पूरी स्थिति ज्ञात न हो जाय, तब तक दूसरी जगह बात चलाना अपूर्व को उचित नहीं लगा। पर इधर रामसिहजी बराबर आग्रह कर रहे थे। और आज तो वे अपूर्व से विशेष आग्रह करने लगे। ऐसी स्थिति मे अपूर्व विचार मे पड गया। यद्यपि अपूर्व ने अपने हाथो से करोडो की सम्पत्ति कमा ली थी, फिर भी उसने पिता का विनय नहीं छोडा था, यही कारण था कि आज वह विचार मे पड गया। बात को सम्भालने के लिए अपूर्व ने अपने मन मे योजना बनाली सोचा–पाच दिन के बाद का टाइम देना चाहिये। ताकि इन पाच दिनों मे चेतना की खोज भी कर लूगा। यदि उसके साथ ही सम्बन्ध बैठ जायगा तो देखने के लिये जाना ही नहीं पडेगा। पिताजी का यह तो आग्रह है नहीं कि उस लडकी के साथ ही विवाह करो। वे तो केवल देखने के लिये कह रहे हैं। यही सोचकर अपूर्व ने रामसिहजी की बात रखने के लिये कह दिया–"डैडी अगर आपकी यही इच्छा है तो आप उन्हे देखने का टाइम दे सकते हैं, मगर पाच दिन बाद। क्योकि अभी मेरे ऑफिस मे बहुत काम है, मुझे पाच दिन तक बिल्कुल टाइम नही मिलेगा। आज पाच तारीख है आप ग्यारह तारीख का टाइम दे सकते हैं।"

आज पहली बार अपूर्व ने किसी लडकी को देखने के लिये हा भरी थी। इसलिये सेठ रामसिहजी खुश हो गए। सोचने लगे चलो लडकी देखेगा तो एक दिन किसी से विवाह भी कर लेगा। यही सोचकर वे बोले–"बहुत अच्छा मुझे तुझसे यही उम्मीद थी। मैं सेठ गिरधारीलालजी को ग्यारह तारीख का टाइम दे दूगा।"

सेठ रामसिहजी ने उसी समय फोन का डायल घुमाकर सेठ गिरधारीलालजी से सम्बन्ध स्थापित किया और बोले–"सेठ साहब ! मैंने अपूर्व से बात कर ली है। उसने ग्यारह तारीख को देखने के लिये आने की स्वीकृति दी है।"

सेठ गिरधारीलालजी यह सुनकर इतने खुश हो गए कि उन्हे लगा यह सम्बन्ध अब हो ही जाएगा। क्योकि चेतना ने भी इधर हा भरली है और इधर अपूर्व ने भी देखने के लिये हा भरली है तो मेरा विश्वास है कि चेतना

इधर जब चेतना को सेठ रामसिह जी एव अपूर्व के ग्यारह तारीख को आने की बात ज्ञात हुई तो उसे भी बहुत प्रसन्नता हुई पर उसके मन मे एक सदेह खाए जा रहा था कि अब कही अपूर्व के विचार बदल तो नही गए हैं। क्योकि उसके अब कोई कमी नही है। मेरे डैडी से भी ज्यादा पैसा उसके पास है और उसके लिये सबधो की भी भरमार है। इन वर्षो मे उसके अनेक लडकियो को देखने का प्रसग आया ही होगा, ऐसी स्थिति मे जरूरी नहीं कि वह मुझे पसन्द ही करे। इसी चिन्ता मे चेतना बैचेन हो गई। पूरी रात उसने जागते-जागते निकाली। अचानक उसके मन मे एक विचार उठा कि क्यो न अपूर्व को एक पत्र लिखा जाय, जिसमे सारी स्थिति का हवाला हो। यही सोचकर चेतना सुबह अन्य कार्यो को स्थगित कर मनोयोग पूर्वक पत्र लिखने बैठ गई उसने लिखा–

मेरे एकमात्र प्राणेश्वर अपूर्व !

विनीत प्रणाम

आज मैं करीब पाच वर्ष बाद आपसे प्रत्यक्ष नहीं, परोक्ष रूप से मिलने जा रही हू। आपने इन वर्षो मे जो आश्चर्यजनक उन्नति की है, उसे जानकर मुझे अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति हुई। युग की रफ्तार को देखते हुए आज पासा एकदम उल्टा हो चुका है। अब मेरे पिता ही आपके साथ मेरा विवाह करने के बहुत इच्छुक हैं। अब तो आप पर ही निर्भर है। आपने दि 11 को आने का सकेत दिया है, लडकी कोई और नहीं वही आपकी पाच वर्ष पहले वाली चेतना ही है, जिसकी रक्षा के लिये आपने अपने प्राण भी खतरे मे डाल दिये थे। मैं आज भी अपने वचन पर कायम हू। डैडी को यह नहीं मालूम कि अपूर्व वही लडका है, क्योकि उन्हे इस रहस्य का पता नहीं है। मुझे विश्वास है कि अब आप मेरी जिन्दगी को अधर मे नहीं लटकाएगे। डूबते के लिए पतवार बनेगे।

आपकी चेतना

अति सक्षिप्त मे लेटर लिखकर चेतना ने लिफाफे मे बन्द किया और एड्रेस करके लेटर बॉक्स मे डाल दिया।

आज अपूर्व ऑफिस मे बैठा-बैठा विचार कर ही रहा था कि चेतना की खोज कैसे करवाई जाय। पाच वर्ष पूर्व चेतना को छोडने जब अपूर्व

गया था, तभी बाहर से चेतना का बगला देखा था। उसके बाद कभी भी उधर जाने का प्रसग नही पडा पर अब उसके बगले पर जाने से ही तो काम नहीं चलेगा, क्योकि उसकी पूरी खोज सीधे बगले पर जाने से नहीं हो सकती। वह यह विचार कर ही रहा था कि इतने मे पोस्टमेन से लेटर लेकर चपरासी अन्दर आकर उसे टेबुल पर रख गया। अपूर्व का ध्यान उस और आकर्षित हो गया। उसने लेटर उठाया और खोलकर पढना प्रारम्भ किया। पत्र चेतना का ही था। पत्र का एक-एक शब्द अपूर्व के अन्तरग की गहराइयो मे उतरता चला गया। जब उसने पढा कि " मुझे विश्वास है कि आप मेरी बनेगे"। तो उसका मानस सुखद आश्चर्य के साथ झनझना उठा। वह विचार करने लगा– अहो प्रकृति ने कैसा सबध फिट किया है। मैं तो सोच ही रहा था पर इस लेटर ने मेरी सारी समस्याओ का ही समाधान कर दिया। अहो ! अब ज्ञात हुआ है कि डैडी के पास चेतना के पिता ही आए थे। मुझे क्या मालूम कि सेठ गिरधारीलालजी वही है।

चेतना का धैर्य भी कमाल का है। घर के सघर्ष को झेलकर भी इसने मेरे लिये ही विवाह रोके रखा। किसी अन्य के साथ विवाह नहीं किया। ऐसी सुशील, धैर्यवान एव मेरे प्राणो के साथ निभने वाली सगिनी मुझे दूसरी नही मिल सकती। मैं इसी की खोज के लिये तत्पर हुआ था, पर यह तो स्वत ही सारा काम हो गया। आज अपूर्व को अमित आनन्द की अनुभूति हुई। वह सोचने लगा– प्रकृति ने ठीक समय पर सारा काम जमा दिया है पर यह बात न तो मेरे डैडी रामसिह को मालूम है और न ही चेतना के डैडी गिरधारीलालजी को ही पता है कि ये दोनो तो पाच वर्ष पूर्व ही प्रतिज्ञा कर चुके हैं। खैर इनके सामने अभी यह राज नहीं खोलना है। समय पर ही सारी स्थिति स्पष्ट करूगा। अभी तो देखना है आगे क्या घटना घटती है।

दिनाक ग्यारह को रामसिह जी, उनकी पत्नी चन्दमुखी एव अपूर्व सज-धज कर अपनी मर्सिडिज कार से पहुचे, सेठ गिरधारीलाल जी के यहा। गिरधारीलाल जी ने उनका भव्य स्वागत किया। पूरा बगला सजाया गया था। सेठ गिरधारीलालजी उन्हे देश-विदेश की वस्तुओ से सुसज्जित हॉल मे ले आए, सोफासेट पर बिठाने के बाद अल्पाहार का दौर चल पडा।

सेठ गिरधारीलालजी और सेठ रामसिह जी परस्पर बातचीत करने लगे और इधर गिरधारीलालजी की पत्नी वैशाली और चन्द्रमुखी का वार्तालाप प्रारम्भ हो गया। अपूर्व तो मस्ती से अल्पाहार करने मे ही लगा रहा। मूल बात पर आते हुए सेठ गिरधारीलाल जी बोले "वाह ! आपका सुपुत्र तो सभी दृष्टियो से योग्य है। ऐसा बेटा तो विरले लोगो को ही मिलता है।" इस प्रकार कहते हुए बीच ही मे अपनी पत्नी की ओर उन्मुख होकर बोलने लगे–"अरे ! चेतना नही आई। अपनी लाडली बेटी को तो ले आओ।" इशारे की देरी थी थोडी ही देर मे चेतना भी अच्छे से कपडे मे सजी हॉल मे आ खडी हुई। रामसिह जी और चन्द्रमुखी को प्रणाम किया। पहली ही दृष्टि मे चेतना रामसिह एव चन्द्रमुखी को भा गई। व्यावहारिक बातचीत के बाद रामसिहजी बोले " गिरधारीलालजी ! आपकी बेटी भी तो कम नही है। हमे तो देखते ही भा गई पर जहा तक सबध का सवाल है, उसमे केवल हमारी ही राय महत्त्वपूर्ण नही होती।"

रामसिहजी का मतलब साफ-साफ अपूर्व की ओर था याने अपूर्व को जचनी चाहिये। वह तैयार हो तो हम तो तैयार ही हैं। लेकिन अपूर्व तो अब भी चुपचाप बैठा था। उसने अब तक किसी भी बात की प्रतिक्रिया नही की थी। सेठ गिरधारीलाल जी को अपूर्व की इच्छा भी जानना जरूरी था और उन्हे लगा कि जब तक अपूर्व चेतना का एकान्त मे मिलन न हो जाए तब तक यह सम्भव नही है। उन दोनो को एकान्त मे मिलने के लिये सेठ गिरधारीलालजी, रामसिह से बोले–"जरा अपन बगले मे घूम आए।" सेठ रामसिहजी गिरधारीलालजी का इशारा समझ गए इसलिए उठ पडे साथ ही वैशाली और चन्द्रमुखी भी इन दोनो के साथ हॉल से बाहर आ गए। अब हॉल मे केवल अपूर्व और चेतना ही रह गए। चेतना का दिल धडक रहा था कही अपूर्व मना न करदे। क्योकि उसने जो पत्र दिया था उसका जवाब भी अपूर्व ने नहीं दिया। वह उठी और अपूर्व के पास पहुची। प्रणाम करके इतना ही बोली–"अब तो आप मेरी बेसहारा भटक रही किश्ती के पतवार बनेगे मेरी भावना को साकार करेगे।" तब अपूर्व बोला–"इसमे क्या सन्देह है। तुम्हारी जैसी योग्य सगिनी मुझे और कहा मिलने वाली है। तुमने मेरे लिये कितने कष्ट भोगे हैं। डैडी-मम्मी का भी तुम्हे सामने करना पडा, तुम्हारी वर्षों की साधना मैं खाली नहीं जाने दूगा।

मैं भी तुम्हारी खोज करने का सोच ही रहा था कि तुम्हारे लेटर ने मेरी सारी समस्या ही हल कर दी। तुम्हारे और मेरे डैडी को इस बात का अब तक पता नही है कि अपन दोनो का निर्णय पूर्व निश्चित है। अब भी इन्हे यह जानकारी नही देनी है। यह जानकारी शादी होने पर देगे।"

अपूर्व की बात सुनकर चेतना का मन-मयूर नाच उठा। चेतना और अपूर्व आज वर्षों से मिल रहे थे। करीब दसेक मिनिट की वार्ता के बाद सेठ गिरधारीलाल जी आदि ने पुन हॉल मे प्रवेश किया। उन्हे तो अपूर्व के विचार जानने की उत्सुकता हो रही थी। पर अपूर्व जो ऐसा था कि कुछ भी बोल ही नहीं रहा, आखिर सेठ गिरधारीलाल जी ने ही पूछ लिया–"क्यो अपूर्वकुमारजी ? चेतना कैसी लगी आपको ? अब अपूर्व ने कहा–"मेरे डैडी और आप जैसो की पारखी नजरे जिसे परख ले, उसमे कहा कमी रह सकती है।"

अपूर्व के इन शब्दो मे साफ स्वीकृति थी। गिरधारीलालजी और रामसिहजी दोनो ही यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हो उठे। क्योकि दोनो को ही विवाह की जल्दी थी। सेठ गिरधारीलालजी ने उसी समय दस्तूर करके बात पक्की करदी और एक महीने के बाद विवाह की तिथि निश्चित कर दी गई।

सेठ गिरधारीलालजी ने विवाह की शानदार तैयारी की और बम्बई की प्रसिद्ध होटल 'फाइव स्टार' मे **फंक्शन** रखा गया। पाच हजार आदमी उपस्थित थे। बडे–2 श्रीमत, डॉक्टर, वकील अफसर आदि सभी लोग अपूर्व के विवाहोत्सव मे उपस्थित थे क्योकि अपूर्व का सभी लोगो से अच्छा ताल्लुकात था।

अल्पाहार के बाद विवाह का कार्यक्रम चला। अपूर्व चेतना आज विशेष परिधान मे सजे बडे रमणीय नजर आ रहे थे। अपूर्व ने चेतना के और चेतना ने अपूर्व के गले मे वरमाला डाल दी, इसी के साथ लोगो की हर्षध्वनि से हॉल गूज उठा।

सेठ गिरधारीलाल जी ने वरमाला के कार्यक्रम के तुरन्त बाद दहेज मे अन्यान्य वस्तुओ के साथ बीस लाख रुपये की स्याथी निधि की भी घोषणा की। जब अपूर्व ने 20 लाख रुपये की बात सुनी, सुनते ही उसके

मस्तिष्क मे महायोगी का वह प्रवचनाश उभर आया। महायोगी ने कहा था–"जीवन को पवित्र बनाने के लिये स्वार्थ से हटकर परमार्थ के लिये कुछ करना चाहिये। धन-सम्पत्ति को एकत्रित करके अपने ही स्वार्थ मे खर्च करना कोई महत्त्वपूर्ण नहीं, पर धन-सम्पत्ति को दीन-हीन असहाय लोगो के लिये उपयोग मे लाना, अपनी आत्मीयता का सराहनीय परिचय देना है।"

महायोगी का प्रवचनाश अपूर्व को ज्यो का त्यो स्मृत था। वह सोचने लगा कि पैसे की तो मेरे पास कोई कमी नहीं है। करोडो रुपये हैं। और इन्कम भी बहुत है। क्यो न इस मौके का अच्छा लाभ उठाया जाय, दीन-हीन असहाय लोगो के लिये कुछ किया जाय। अपूर्व ने उसी वक्त अपने डैडी को सकेत से पास मे बुला कर सारी बात समझा दी। सेठ रामसिहजी का सदा से यह मानना रहा कि अपूर्व, कभी भी गलत काम नहीं करता। इसलिये सेठ रामसिहजी उसकी हर बात मानते थे। रामसिहजी ने अपूर्व के विचारानुसार उसी समय सेठ गिरधारीलालजी की घोषणा के ठीक पश्चात् ही लोगो को बतलाया कि "अभी-अभी सेठ गिरधारीलालजी ने 20 लाख रुपये के स्थायी कोष की घोषणा की है। पर पैसो की तो यहा भी कोई कमी जैसी बात नही है। मानवता की दृष्टि से मुझे दहेज लेना भी पसन्द नहीं है और इधर मैं सेठ गिरधारीलालजी की बात भी ठुकरा नहीं सकता। ऐसी स्थिति मे मेरे मन मे एक नया ही विचार उत्पन्न हुआ, तदनुसार मैं बतला देना चाहता हू कि बीस लाख रुपये तो जो गिरधारीलालजी दे रहे हैं वे, और बीस लाख रुपये मैं अपनी तरफ से मिला रहा हू। अपूर्व-चेतना के विवाह की खुशी मे दीन-हीन, असहाय लोगो के सहायतार्थ 40 लाख रुपये के स्थायी कोष की घोषणा करता हू। जिसका नाम 'अपूर्व–चेतना **असहाय रिलिफ फड'** रहेगा, जिसके द्वारा असहाय, जरूरतमन्द, अपग लोगो की सहायता की जाएगी।"

इस नवीन घोषणा को सुनते ही उपस्थित सभी लोगो ने दिल खोलकर सेठ रामसिह जी की प्रशसा की। वस्तुत समाज के लिये दहेज अभिशाप बन गया है। पर रामसिह जी को प्राप्त होने वाला दहेज तो समाज के लिये अभिशाप नही वरदान बन चुका था।

शादी के कार्यक्रम के पश्चात् जब सेठ गिरधारीलालजी हर्षाश्रु के साथ दम्पती को आशीर्वाद देने आए, तब चेतना ने डैडी के चरण छू कर रहस्य का उद्‌घाटन किया डैडी ! आज जो आप जिनकी इतनी प्रशसा कर रहे हैं, आप ही नहीं बम्बई के प्रतिष्ठित लोग जिन्हे आदर की दृष्टि से देखते हैं। सभी तरह से योग्य स्मार्ट जिस युवक के साथ आपने मेरा विवाह किया है, क्या पहचाना, वह युवक कौन है ?

सेठ गिरधारीलाल जी चेतना की बात सुनकर एकदम असमजस मे पड गए। क्योकि उन्होने अपूर्व को एक-दो वर्षो मे ही देखा था। पूर्व की स्थिति उन्हे ज्ञात नहीं थी। इसलिये बेटी के इस अटपटे प्रश्न पर वे इतना ही बोल पाए कि "बेटी ! क्यो नही जानता हू, मैं इन्हे दो-तीन वर्ष से मैं इन्हे देख रहा हू, जौहरी बाजार मे इन्होने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की है। बम्बई की इण्डस्ट्री मे भी अपूर्व का नाम है। इन्हे कौन नही जानता ?"

"पर डैडी मेरा कहने का यह अभिप्राय नही है। मै तो यह कहना चाहती हू कि जरा गौर से इन्हे देखे, यह है कौन ? "पर चेतना की बात सेठ गिरधारीलालजी की समझ मे नही आई। अब चेतना ने स्पष्ट किया—"डैडी, ये वे ही हैं, जिनके लिये आज से पाच वर्ष पहले मैंने आपसे कहा था कि अगर मैं विवाह करूगी तो इन्हीं से करूगी, अन्यथा आजीवन अविवाहित रहूगी। इन्ही का नाम तो अपूर्व कुमार है।"

चेतना की बात सुनकर सेठ गिरधारीलाजी को सुखद आश्चर्य हुआ। "क्या उस झोपड पट्टी मे रहने वाले युवक ने पाच वर्ष मे इतना विकास कर लिया कि आज बम्बई के प्रतिष्ठित लोगों मे अपनी धाक जमा ली ?"

चेतना ने कहा—"हा डैडी ! इनकी कार्य प्रणाली एव प्रतिभा ही ऐसी है कि ये निरन्तर विकास के पथ पर बढ रहे हैं।"

इसी के साथ चेतना ने पूर्व मे घटी स्थितियो पर भी प्रकाश डाला और बतलाया कि मेरे बहुत चाहने पर भी इन्होने मिलने तक से इन्कार कर दिया था। पाच वर्ष तक विवाह नही करने का कारण भी स्पष्ट किया। जिस लडके से आप मेरा विवाह नही करना चाहते थे, आज आपने स्वय ने पूरी कोशिश करके उसी के साथ मेरा विवाह किया है।

इस रहस्य के उदघाटन ने सेठ गिरधारीलाल जी की धारणाओ को ही बदल डाला। उन्होने साफ-2 कहा कि– "सच बेटी ! तुम्हारा निर्णय ही उचित रहा। मेरी दृष्टि पर तो दौलत का चश्मा लगा था। मुझे दौलत प्यारी थी, मैं तेरा विवाह किसी दौलतमन्द व्यक्ति के साथ ही करना चाहता था। पर दौलतमन्द लोगो मे क्या दुर्गुण होते हैं, इस तरफ मैंने कभी नही सोचा। मुझे गरीबी से सख्त नफरत रही। पर आज मुझे ज्ञात हुआ है कि–"**पत्थरो में भी हीरा होता है और फूल मे भी कांटे होते है।**" अपूर्व के इस विकास ने मेरी धारणा ही बदल दी है।" इसी बीच अपूर्व ने भी सेठ गिरधारीलाल जी को प्रणाम किया तो उन्होने उसे आशीर्वाद देते हुए सीने से लगा लिया–हर्ष के अतिरेक मे केवल इतना ही बोले–"बेटे ! जुग-जुग जीओ ! तुम्हारे साथ मैंने अनजाने मे जो व्यवहार किया उसके लिये मुझे माफ कर देना। तुम और चेतना का जीवन सुखमय रहे– आनन्दमय रहे। यह जोडी, आज के लोगो के लिये आदर्श बने, यही भावना है।" कहते-2 सेठ गिरधारीलाल जी की आखो मे हर्ष के आसू छल–छला आए।

सेठ रामसिहजी को भी जब सारी हकीकत मालूम हुई तो उन्हे भी अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हुई।

दूसरे दिन बम्बई मे प्रत्येक न्यूज पेपर के प्रथम पृष्ठ पर ही अपूर्व-चेतना का फोटो और उनके मानवतापूर्ण कार्य का वर्णन किया गया था। 'अपूर्व-चेतना असहाय रिलीफ फण्ड' की सरगर्मी से चर्चा की गई थी। इसे एक आदर्श कार्य बतलाया गया था। भारत मे ही नहीं विदेशो में भी ऐसे महान् कार्य की चर्चा हुई।

अपूर्व और चेतना भी अब पूरी तरह एक-दूसरे से मिल चुके थे। उनका गृहस्थ जीवन मे प्रवेश हो चुका था।

अपूर्व ने बचपन मे जो अपना लक्ष्य बनाया था, उसे उसने बखूबी पूरा भी कर लिया।



(21)

डाकू घनश्यामदास, जब पाच वर्ष का था, तब ही उसकी माता नारायणी क्षय रोग से पीडित होकर देह को छोडकर परलोक सिधार गई थी। इधर घनश्यामदास के पिता कजोडीमल ने अपनी दूसरी शादी रचा ली थी। जब से घर मे सौतेली मा गोमती का आगमन हुआ, तभी से बालक घनश्यामदास पर दु खो का पहाड सा टूट पडा। गोमती को घनश्यामदास फूटी आख नहीं सुहाता था। भले वह उसकी कूख से पैदा नहीं हुआ हो, पर उसका बेटा तो जरूर माना जाता था। इसीलिये लोक लाज से वह उसे घर से बाहर तो नहीं निकाल सकती थी। परन्तु उस नन्हे से बालक से जबरर्दस्त काम कराती थी। और जब तब उससे लडती रहती थी, हाथो मुक्को से मारे भी जाती थी। लूखा-सूखा खाना देती थी। इतने पर भी उसे सतोष नहीं होता तो वह अपने पति कजोडीमल के सामने अनेक झूठी-झूठी शिकायते करके उसे मार पटकाती रहती थी। चलो मा तो सौतेली थी, पर बाप भी गोमती के अन्धे प्यार मे फंसकर बेटे का दुश्मन बन गया था। घनश्यामदास मा-बाप की लगातार मार खाकर ढीट बन गया था। ऐसे दु ख पूर्ण स्थिति मे उसका पढाई मे भी मन नहीं लगता था। मुश्किल से छ सात क्लास भी वह पूरी तरह पढ नहीं पाया और उसके बाप ने स्कूल छुडाकर उसे एक होटल मे बर्तन साफ करने के लिये नौकरी पर रख दिया। नौकरी से मिलने वाले सारे पैसे कजोडीमल ले लेता था। घनश्यामदास के हाथ मे एक भी पैसा नहीं आता था। इस विकट परिस्थिति मे और होटल के अन्य नौकरो की कुसगति पाकर घनश्यामदास छोटी-मोटी चोरिया करने लग गया। सबसे पहले उसने घर पर ही सेध मारी और अपनी सौतेली मा की सोने की दो चूडिया चूरा ली। उन्हे सस्ते मे बाजार मे बेचकर उन पैसो से एश करने लगा। कहते हैं– **पैसा अनर्थ का मूल है, जिससे सारे पाप किये जा सकते हैं।** वही हुआ। घनश्यामदास गलत आचरण मे पड गया। अब वह होटल मे आने वाले व्यक्तियो की भी जब तब जेब साफ करने लगा। कई बार पकडा

भी गया, मार भी खाई। एक दो बार जेल की हवा भी खाली। नौकरी छूट गई, पर उसकी चोरी की आदत नहीं छूटी। वह तो बढती चली गई। अब तो यह खुलकर चोरिया करने लगा। रेलगाडियो मे यात्रियो की जेबे काटने लगा। इस प्रकार अनर्थ से पाए गए धन को कुसगत मे फस कर व्यसनो की पूर्ति मे पानी की तरह बहाने लगा। इसी बीच एक दिन उसकी एक बहुत बडे दस्यु (डाकू) दल के एक सदस्य से भेट हो गई। इस डाकू ने जब घनश्यामदास की जेब काटने मे हाथ की सफाई देखी तो वह समझ गया यह लडका अपने काम मे अच्छा सहयोगी बन सकता है। यही सोचकर वह उसे सरदार से मिलाने ले गया। सरदार ने भी उससे पूछताछ की। सारी जानकारी होने के बाद उसे दस्यु दल मे मिला लिया गया। होशियार और बुद्धिमान तो वह था ही, थोडे ही समय मे वह डाके डालना, पिस्तौल चलाना, बन्दूक चलाना, आदि सीख गया। 5-7 वर्षो मे तो उसने डाकुओ की अलग से एक गेग बनाली और स्वय उसका सरदार बन गया। बस फिर क्या था, गाव-गाव मे जाकर बडे-बडे सेठ साहूकारो के यहा डाके डालकर लाखो की सम्पत्ति एकत्रित करली। **सत्य है माता-पिता के द्वारा बच्चों को संस्कारित नहीं करने से बच्चे की जिन्दगी बिगड जाती है।**

यही डाकू घनश्याम दास की गेग अपने दल-बल के साथ रामगढ के जमींदार रायसिह के यहा पहुची थी। और अपनी सुनियोजित योजना के अनुसार रायसिह की पुरखो से एकत्रित की गई करोडो की सम्पति को लेकर बाहर तैयार खडे वाहनो मे बैठकर भाग गई थी। डाकूओ की यह गेग रामगढ से बाहर निकली ही थी कि इधर पुलिस को विश्वस्त सूत्रो से जानकारी हो जाने से दो जीपो मे पुलिस भी आ पहुची। उन्होने रामगढ से बाहर निकलते वक्त दस्यु दल की जीपो को देख लिया था। उन्हे समझते देर नही लगी की यही वह दस्यु दल है, जिनकी सूचना उन्हे मिली थी। बस फिर क्या था, पुलिस ने अपनी जीपे उनके पीछे लगा दी। डाकू घनश्याम दास को खतरे का आभास हो गया था उन्हे पुलिस की जीपे पीछे आती हुई नजर आ गई थी। उसने अपने सदस्यो को सावधान किया और जीप की स्पीड बढा दी। बस फिर क्या था, मानो जींपे हवा

से बाते करने लगी। 100-120-125 कि मी प्रति घण्टे की रफ्तार से दौडने लगी। पुलिस की जीपे भी उसी गति से दौडने लगी। तब डाकू घनश्यामदास ने जिस जीप मे सोने-चादी-जवाहरात के बोरे भरे पडे थे उस जीप को सकेत करके ककरीट मे पहाडी एरिये मे भगा दिया, जिसमे केवल दो डाकू थे। बाकी सदस्य दूसरी जीपो मे थे वे कूद पडे और पहाडी खदको मे जा छिपे। इधर यह जीप भी जिसमे धन था, पुलिस की आखो से बचती हुई, बजर जमीन को पार करती गई। डाकुओ ने धन के बोरो को किसी खड्डे मे पटक दिये। और जीप को कुछ दूर घुमाकर रोड पर लाकर आग लगा दी और खुद भी जिस खड्डे मे धन था, उधर ही आकर छिप गये। इस बीच कुछ डाकुओ ने पुलिस को गोलिया चलाकर उलझाए रखा, और जब उन्हे सुरक्षित जगह धन डाल देने के सकेत मिले तो वे भी अन्धेरे का लाभ उठा कर पहाड की खघको मे भाग गये। पुलिस उस जलती जीप के पास पहुची तो उन्हे जीप के अलावा कुछ दिखाई नहीं दिया। तब वायरलेस के द्वारा सभी थानो मे सूचना करके चारो तरफ नाकेबन्दी कर दी गई। दो डाकुओ के अलावा सभी डाकू तो रातो रात ही अपने अड्डे पर सुरक्षित पहुच गए थे। पर ये दोनो डाकू उस धन को छिपाने के चक्कर मे वहीं रहे। उन्हे जब अन्य कोई उपाय नहीं सूझा तो वे उस खड्डे को यह सोचकर मिट्टी से भर दिया कि बाद मे आकर धन निकाल लेगे। ये दोनो छिपते-छिपते जब जगल पार करने लगे, तब पुलिस के जवानो ने उन्हे देख लिया, और वे उनके पीछे हो गए। यह देखकर वे दोनो भागने लगे। उन्हे रुकने के लिए सकेत दिये गए, पर वे नहीं रुके। तब पुलिस ने पीछे से गोली चला दी और दोनो वहीं ढेर हो गए। गोली लगते ही उन दोनो के प्राण पखेरू उड गए। सारा का सारा धन गड्ढे मे रह गया। न वह पुलिस के हाथ लगा न डाकुओ के और जिन दो डाकुओ को पता था, वे भी गोली से मार दिये जाने के कारण धन का स्थान किसी को बता ही नहीं सके। धन जमीन मे ही रह गया।

वर्षों बीत गये। जब जमींदार रायसिह का पोत्र पुण्य का निधान अपूर्व कुमार बम्बई के अन्दर करोडो की सम्पत्ति कमाकर गणमान्य व्यक्तियो के बीच गजब की प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका था। उसकी चेतना

जैसी सुशीला, सुन्दर, शिक्षित, चारित्रवान् सन्नारी से शादी भी हो चुकी थीं। तब एक दिन फुर्सत के समय मे उसके पिता रामसिह ने अपने अतीत की घटनाओ का जिक्र अपने सुयोग्य पुत्र अपूर्व कुमार के सामने किया। जब रामसिह-कृष्णसिह दोनो बच्चे थे, तब कैसे उनके घर डाकू आए ? कैसे उनके पिता रायसिह और माता गुणवती को बाधकर सम्पति मागी ? नहीं देने पर हम दोनो बच्चो को मारने की धमकी दी और किस प्रकार माता गुणवती और पिता रायसिह ने हमारी रक्षा के लिये पीढियो से अर्जित सारी सम्पति डाकुओ के हाथो मे दे दी ? यह सारी घटना विस्तार से सुनाई। इसी के साथ धन के चले जाने से इज्जत मे कमी आ गई, जिसके कारण पिता रायसिह को झटका लगा और वे इस दुनिया से चले गये। फिर हम बम्बई आए। मेहनत करके कुछ पैसा कमाया और उस अभाव के समय मे रामसिह ने शादी की। कृष्णसिह को पढाया। जिन्दगी का सारा घटना चक्र सक्षिप्त मे रामसिह ने अपूर्व को सुना दिया।

जिसे सुनकर अपूर्व कुमार बोला—पापा ! सच है, जब पुण्यवानी मे कमी आती है तो करोडपति भी रोडपति (कगाल) हो जाते हैं और जब भाग्य प्रबल होते हैं तो रोडपति (कगाल) भी करोडपति बन जाते हैं।

मैं सोचता हू अब जब अपने पास पैसो की कहीं कोई कमी नही है तो क्यो न एक बार अपने देश रामगढ चला जाय, और दादा की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुन प्रतिष्ठापित किया जाय ? रामसिह बोले—बेटा ! इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है। **सुयोग्य सन्तान अपने पूर्वजों की शान-बान को आगे ही बढाती है।**

पिता की स्वीकृति पाकर अपूर्व कुमार ने दो-चार दिन मे ही अपना प्रोग्राम बना लिया और अपनी चालीस लाख की मसर्डिस कार मे अपने पापा-मम्मी तथा मिसेज चेतना को लेकर रामगढ पहुच गया। सबसे पहले तो उसने वर्षों बन्द पडा महल जो खण्डहर की तरह नजर आ रहा था। उसे पचासो नौकरो को लगाकर साफ करवाया और फिर पूरे महल पर जोरदार अनेको रगो मे पालिश करवादी। जिससे महल इतना चमकने लगा कि मानो मुर्दे मे पुन प्राण प्रतिष्ठित हो गए हो।

ग्रामवासी महल की यह शोभा निहार कर भिन्न-भिन्न चर्चा करते नजर आने लगे। कोई कहता है कि दादा की बिगडी प्रतिष्ठा को पोते ने वापस जमाली। कोई कहता– क्या महल नजर आने लगा मानो देवो का विमान हो। अब गाववासी सभी रामसिह एव अपूर्व कुमार को बडे ही आदर की दृष्टि से देखने लगे। उन्हे लगने लगा कि जमीदारी का असली रूप फिर से उभरने लगा है।

अपूर्व कुमार और चेतना सवेरे-सवेरे घूमने के लिये गाडी मे बैठकर गाव के बाहर पाच-दस कि मी प्रतिदिन जाया करते थे। एक दिन अपूर्व कुमार ने घूमते हुए एक मैदान देखा, यद्यपि वह पथरीला था। पर अपूर्व कुमार को वह अच्छा लगने लगा। उसने सोचा क्यो न इस जमींन पर एक बगीचा बनाया जाय, उसी मे एक तरफ बगला भी हो, और साथ ही मध्य मे दादा की स्मृति स्वरूप उनकी प्रतिमा बना दी जाय। ताकि उनकी स्मृति भी बनी रहे और वर्ष मे एक-दो बार गाव आना पडे तो यह पिकनिक-पैलेस भी बन जाय।

अपूर्व कुमार ने अपने मनोगत विचारो से चेतना को अवगत कराया। जिसे सुन कर वह बोली–प्रिय ! आपने तो मेरे ही मनोगत भावो को मानो छिन लिया। मैं भी यही सोच रही थी कि दादा के नाम पर यहा स्मृति स्वरूप कुछ होना चाहिये। मैं तो इतना ही सोच पाई पर आपने तो सारी योजना ही तैयार कर ली ! अपूर्व-चेतना दोनो के विचार एक हो गए। कुछ देर घूमने के बाद जब महल मे आए तो अपूर्व कुमार ने पापा रामसिह और मम्मी चन्द्रमुखी के सामने भी ये विचार रखे। तो वे भी अत्यन्त प्रमुदित हुए। सभी के एक विचार बन गए। फिर क्या था ! मिस्टर अपूर्व ने दूसरे दिन जानेमाने इजीनियर से नक्शा बनवा कर बगीचे का निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया, तथा उसी के अन्दर एक तरफ बगला बनाने की नींव खोदी जाने लगी।

ठीक उसी वक्त अपूर्व कुमार के भाग्य ने जोरदार मोड लिया, और उसमे से सोने, चादी, जवाहरात के बोरे निकलने लगे। क्योकि यह वही स्थान था, जहा पर डाकुओ ने धन दबाया था। जो तब से ही ज्यो का त्यो

सुरक्षित पडा था। और आज जब अपूर्व कुमार ने बगले की नींव खुदवाई तो वह सारा का सारा बाहर निकल आया। मिस्टर अपूर्व कुमार वहीं खडा था। उसने जब यह देखा और बोरे खोलकर रत्न जटिल सोने के आभूषणो को गौर से देखा तो लगा कि इस पर तो रायसिह और गुणवती के नाम खुदे हैं तो उसे लगा कहीं ये वे ही तो आभूषण नही है जो मेरे दादा-दादी के थे। उसने धन की सारी गठरिया निकाली और उन्हे लेकर महल मे पहुचा और मम्मी-पापा के सामने रखी। जिसे देखकर चन्द्रमुखी तो नहीं, रामसिह जरुर पहचान गये, क्योकि चन्द्रमुखी ने तो वह धन देखा ही नही था। रामसिह ने ही देखा था, वे तुरन्त बोले--बेटा! यह धन तू कहा से लाया। यह तो तुम्हारे दादा रायसिह की सम्पति है, जो डाकू चुरा ले गए थे।

अपूर्व कुमार बोला– पापा! वही सारी सम्पति मुझे बगले की नींव खुदवाते वक्त मिली है। चलो यह और अच्छा हुआ कि अपनी ही खोई हुई सम्पति अपने को ही वापस सुरक्षित मिल गई। जिनकी वर्तमान की कीमत लगाई जाए तो पापा! यह सम्पति करोडो की नहीं अरबो की है, जिनका अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारी मूल्य है। रामसिह बोले– बेटा! यह सब तुम्हारे ही सद्भाग्य का परिणाम है। जिनके कारण खोई हुई सम्पति वापस मिल गई। धन्य है तुम्हारे पुण्य को!

पापा ऐसा मत बोलो। मेरी क्या पुण्यवानी है ? मेरी पुण्यवानी तो आपके साथ है। माली यदि बगीचे को न सींचे तो पेड पौधे कैसे विकसित हो सकते हैं, अत मेरे सद्भाग्य मे आप दोनो का हाथ है। बेटे के इतने विनम्र विचार सुनकर रामसिह और चन्द्रमुखी गद्गद् हो उठे। और उसे गले लगाकर हृदय मे अमित आनन्द की अनुभूति करने लगे। अब तो रामसिह, अपूर्व कुमार करोडो के ही नहीं, अरबो के मालिक बन गए। उनकी शान-शोकत बढती ही चली गई। अपूर्व कुमार ने रामगढ के अनेक असहाय, रोगी, अनाथ स्त्री-पुरुषो को मुक्त हस्त से दान देकर दादा रायसिह की कीर्ति का विस्तार किया।

अपूर्व कुमार ने दिल मे उस समतायोगी के प्रवचन का एक-एक वाक्य दिल की गहराइयो मे समा गया था। यही कारण था– अब अपूर्व कुमार के सोचने का तरीका एकदम बदल चुका था। अपूर्व कुमार चाहता तो दादा रायसिह की अपार सम्पति को एकाकी ही दबा सकता था। लेकिन उसने सोचा दादा जी कि इस सम्पत्ति पर जितना मेरा अधिकार है, उतना ही काका कृष्णसिह के पुत्र राजेश का भी है। जिसका कि मैंने पाच लाख रुपये देकर अमेरिका मे इलाज करवाया है। वह अभी-अभी बम्बई से लौटा है। इस समय तों काका कृष्णसिह और उसके पास सम्पत्ति के नाम से कुछ नहीं बचा है। उनकी अनीति, अत्याचार ही उन्हे खा गई है। मील बिक गया, जिसे मैंने खरीदा। फ्लेट भी बेच दिया गया। अब उनके पास रहने के लिए भी कुछ नही बचा है। यद्यपि उन्होने हमारे साथ घोर अन्याय किया है। जब ये बाते मुझे याद आती है तो मन विद्रोह कर उठता है। इन्हीं के कारण मेरा बडा भाई अतुल इस दुनिया से चला गया। ये 500 रुपये दे देते तो कुछ बिगड नही जाता। खैर जैसी करणी वैसी भरणी। किन्तु मुझे तो अब न्याय--नीति के पथ पर ही चलना चाहिये। यह जो दादा रायसिह की सम्पत्ति मुझे मिली है, उन पर वैसे तो काका कृष्णसिह या राजेश का अधिकार नहीं हो सकता। क्योकि वह तो लूट ली गई थी। लेकिन वही सम्पत्ति मुझे प्राप्त हो गई है तो उसका आधा भाग उसे दे ही देना चाहिये। यही सोचकर अपूर्व कुमार ने अपने पापा रामसिह से कहा कि पापा ! यह जो सम्पत्ति अपने को प्राप्त हुई है इसका आधा भाग अकल कृष्णसिह को दे देना चाहिये। क्योकि उनका भी इस सम्पति पर नैतिक अधिकार है। यद्यपि अपन चाहे तो सारी ही रख सकते हैं। वे अपना कुछ भी नहीं बिगाड सकते। पर ऐसा क्यो किया जाय। उन्होने अनीति की है तो वह उनके साथ है। अपने को तो न्याय-नीति के साथ ही चलना है।

बोलिये आपका क्या विचार है ?

अपूर्व कुमार के इतने उन्नत और उदार विचार सुनकर रामसिह और चन्द्रमुखी का मन अत्यधिक खिल उठा। वे बोले– पुत्र ! तुम सही

अर्थो मे नैतिकता, मानवता के पुजारी हो। इतनी उदार भावना तो हमारी भी नहीं बन सकती। तुम अन्यायी के प्रति भी न्याय करके दुनिया के सामने मानवता की आदर्श मशाल प्रज्वलित करना चाहते हो तो हम क्यो विरोध करे! तुम्हारे विचार वैसे ही इतने उन्नत और पवित्र होते हैं कि वहा कुछ भी परामर्श देने की आवश्यकता नहीं रहती। हम तो तुम्हे पाकर निहाल हो गए। तुम्हारा जीवन इसी प्रकार मानवता के दीप को प्रज्वलित करता रहे, यही हम चाहते हैं।

रामसिह के सकेत को पाते ही अपूर्व कुमार ने फोन द्वारा अकल कृष्णसिह से सम्पर्क किया। और उन्हे सपरिवार रायगढ आने के लिए आग्रह किया। अब तो कृष्णसिह का मन एकदम बदल चुका था। उसकी छल कपट की भावना साफ हो चुकी थी। अपूर्व कुमार के प्रति कृष्णसिह के मन मे एक विशिष्ट आदर की भावना जागृत हो चुकी थी। उससे भी अधिक उसके पुत्र राजेश के मन मे अपूर्व कुमार के प्रति श्रद्धा-सम्मान की भावना पैदा हुई थी क्योकि जिस समय वह जिन्दगी और मौत के साथ खेल रहा था। उस समय अपूर्व कुमार के अलावा किसी ने भी उसका सहयोग नहीं किया था। वैसे भी अपूर्व राजेश से बडा भी था।

ज्यो ही अपूर्व का सकेत मिला, त्यो ही कृष्णसिह अपने परिवार के साथ बम्बई से रवाना होकर रायगढ पहुचा। और घर पर जब पहुचा तो उस चमचमाते महल को देखकर उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा।

कृष्णसिह तो सोच रहा था कि सारा महल खण्डहर हो गया होगा, कहा रहेगे। पर यहा आकर जब अपूर्व कुमार का चमत्कार देखा तो उसे दातो तले अगुली दबानी पडी। अपूर्व कुमार की मसर्डिज कार कृष्णसिह को लेने स्टेशन पर पहुच चुकी थी। उसी मे बैठकर वे आए थे, घर पर आते ही अपूर्व कुमार ने खडे होकर उनका स्वागत किया। अकल कृष्णसिह को और आण्टी सूर्यमुखी को विनित प्रणाम किया।

यह वही सूर्यमुखी थी, जिसने रामसिह-चन्द्रमुखी, अतुल और अपूर्व के साथ बहुत अधिक अत्याचार और दुर्व्यवहार किया था। उन्हे फ्लेट से

निकाल दिया था। दादी गुणवती की वहीं मृत्यु हो गई थी। सारी बाते अपूर्व को याद थी। फिर भी उसने जहर पर भी अमृत का उपचार करके जहर को अमृत मे बदलने का सफल प्रयास किया।

ज्यो ही अपूर्व सूर्यमुखी के चरण स्पर्श करने झुका त्यो ही वह पीछे हटकर जोर-जोर से रोती हुई बोली— आप जैसे पावन पुरुष के पवित्र हाथ मेरी जैसी कुलक्षिणी नार का स्पर्श कर कहीं खराब न हो जाय। मैंने आप लोगो के साथ क्या-क्या दुर्व्यव्हार नहीं किया। पैसो मे अन्धी बनकर, घमण्ड मे फूलकर जिन अनर्गल शब्दो का प्रहार मैंने आप पर किया है। निश्चय ही वे आदमी मे प्रतिशोध पैदा करने वाले थे। लेकिन आप तो विरोध को अनरोध मे ही बदल रहे हैं। इस प्रकार विलाप करती हुई सूर्यमुखी को देखकर चन्द्रमुखी उसके पास पहुची ओर उसे गले लगाती हुई बोली— बहिन ! कोई विचार मत करो। जो होना था सो हो गया। **कभी-कभी लाखीणा घोडा भी ठोकर खा जाता है, पर खून के रिश्ते कभी बदलते नहीं है।** अत सब कुछ भूलकर पुन अपनी जिन्दगी की शुरूआत प्रारम्भ करो। अपूर्व जैसे मेरा लडका है वैसे ही तुम्हारा भी है। अत इसे आशीर्वाद दो। चन्द्रमुखी की मधुर वाणी सुनकर सूर्यमुखी का दु ख कुछ कम हुआ और उसने अपूर्व को स्नेह भरा आशीर्वाद प्रदान किया।

कृष्णसिह के लडके राजेश और सावित्री ने भी ताऊ रामसिह ताई चन्द्रमुखी तथा बडे भैया अपूर्व को श्रद्धा युक्त प्रणाम किया। पूरे परिवार मे प्रेम और स्नेह की गगा बह गई।

अपूर्व कुमार ने कृष्णसिह को बगले की नींव खोदते वक्त मिलने वाले धन की सारी घटना सुनाते हुए दादा रायसिह के सारे धन को सामने लाकर रख दिया और कहा इस पर आधा अधिकार आपका भी है। अत आधा धन आप ले लीजिये। तब कृष्णसिह ने कहा—बेटे अपूर्व ! अगर हमारे किस्मत मे यह धन लिखा होता तो जाता ही क्यो ? यह तो तुम्हारे सद्भाग्य से मिला है, अत तुम ही रखो।

अपूर्व ने कहा– नही अकल आधा तो आपको रखना ही होगा। यह कहते हुये उसने सारे धन का दो विभाग कर दिया। और एक विभाग कृष्णसिह के हाथो मे सौंप दिया।

कुछ दिन तक रायगढ मे प्रेम से रहने के बाद सारा ही परिवार बम्बई लौट आया। पैतृक सम्पति मिल जाने से कृष्णसिह के पास भी पुन खूब पैसा आ गया था। अपूर्व कुमार के परामर्श से कृष्णसिह ने भी बालकेश्वर मे एक बडा फ्लेट खरीद लिया और एक समय के बाद इण्डस्ट्री एरिया मे केमिकल की बहुत बडी फैक्ट्री लगाली। धीरे-धीरे कृष्णसिह का व्यापार भी चमक उठा। इधर अपूर्व का कमल सेठ के साथ चल रहा डायमड का व्यापार तो दिन दूना रात चौगुना बढ ही रहा था। इसके अतिरिक्त कृष्णसिह द्वारा खरीदी गई मील भी अच्छी प्रॉफिट दे रही थी। इस तरह अपूर्व कुमार धन और प्रतिष्ठा दोनो ही दृष्टि से निरन्तर बढ रहा था।

अपूर्व कुमार इस सब उपलब्धि के पीछे उन समतायोगी महापुरुष का शुभाशीर्वाद एव पावन दर्शन ही मूल मे मान रहा था। काफी समय हो गया था, उनके दर्शन किये भी। अब अपूर्व कुमार के मन मे जल्दी ही दर्शन करने की तीव्र इच्छा पैदा हो गई। एक दिन अपूर्व कुमार ने कमल सेठ से पूछ ही लिया– साहब ! आप उन महायोगी के दर्शन करने कब जा रहे हैं। मेरी भी जाने की इच्छा हो रही है। जिनके एक प्रवचन ने ही मेरे जीवन की दिशा ही मोड दी है। जब जाए मुझे भी साथ ले चले।"

"शुभ काम मे दरी क्यो ? कल सुबह ही चलते हैं। अभी तो महायोगी प्रकृति के सुरम्य स्थान खण्डाला घाट पर ही विराजमान हैं। ऐसी जगह पर परम पवित्र योगी के दर्शन करने से अपने को विशेष शाति की अनुभूति होगी। क्योकि प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच मे निश्छल प्राकृत पुरुष के दर्शन होगे। कल तुम और चेतना दोनो तैयार हो जाना। इधर मेरी धर्मपत्नी भी तैयार हो जाएगी। वैसे भी वह बहुत दिनो से जाने का कह ही रही थी। उनकी इच्छी भी पूरी हो जाएगी।"

दूसरे दिन ही कमल सेठ और अपूर्व अपनी-अपनी धर्मपत्नी के साथ कार से महायोगी की सेवा मे पहुच गए। श्रद्धावनत हो वन्दना की, त्यो ही महायोगी के मुख से अमीय भरा आशीर्वाद निकला और वे बोले "पहले आए तब तो तीन ही थे और अब चार हो गए।"

जवाब दिया कमल सेठ ने– "योगीप्रवर।"

"आपका फरमाना सत्य है। अभी ही अपूर्व का चेतना से विवाह हुआ है। इसे भी दर्शन करने थे। अत साथ ही चले आए।"

साश्चर्य महायोगी ने पूछा– "अरे क्या यह वही जोडी है, जिसके लिये अखबारो मे लम्बा-चौडा जिक्र था। मैंने अखबार पढे तो नहीं पर लोग कह रहे थे कि बम्बई मे हुई अपूर्व-चेतना की शादी के उपलक्ष्य मे 40 लाख का फण्ड असहाय लोगो की सहायतार्थ खोला है।"

कमल सेठ–" सत्य फरमा रहे हैं योगी प्रवर। यह वही जोडी है। अपूर्व ने ही अपने डैडी से कहकर यह कार्य करवाया था।"

"तब तो बहुत ही मानवता-परक कार्य किया है– अपूर्व कुमार ने। युवको के मन मे ऐसी भावना की उत्पत्ति होना, भविष्य के लिये शुभ सकेत है।" महायोगी द्वारा अपने लिये प्रशसात्मक शब्द सुनकर सकुचाते हुए अपूर्व ने कहा–"भते ! इस महान् कार्य के मूल मे मैं नहीं आप हैं। आप श्री के एक उपदेश ने ही मेरी दिशा बदल दी थी। आपने अपने प्रवचन मे फरमाया था । धन सम्पत्ति को दीन-हीन, असहाय लोगो के उपयोग मे लाना, अपनी आत्मीयता का सराहनीय परिचय देना है। "इस वाक्य ने ही मुझ से यह काम करवाया है। जब **फॉदर इन्ला** दहेज मे बीस लाख की घोषणा कर रहे थे, तभी मेरे मस्तिष्क मे आप श्री का प्रवचनाश उभर आया और मैंने अच्छा अवसर देख कर डैडी को सकेत कर दिया कि इसमे 20 लाख और मिलाकर 40 लाख की असहाय लोगो के सहायतार्थ घोषणा कर दो, और डैडी ने वैसा कर भी दिया। पर यह श्रेय वस्तुत मेरे को नहीं आपको है।"

इसी के साथ अपूर्व ने अपने बचपन के जीवन से लेकर अब तक का इतिवृत्त सक्षिप्त मे महायोगी के सामने स्पष्ट कर दिया।

वैसे तो अपूर्व का जीवन प्रारम्भ से ही नैतिक एव मानवीयता से ओतप्रोत रहा है पर भाई अतुल एव माता चन्द्रमुखी के साथ हुए गलत व्यवहार का बदला लेने के लिये जो उपक्रम अपूर्व ने किया वह अपूर्व की दृष्टि से तो कोई अनुचित नहीं था। किन्तु महायोगी ने कहा– "जो हो चुका सो हो चुका।" फिर भविष्य के लिये अपूर्व को अनेक महत्त्वपूर्ण सुझाव एव सशोधन दिया जिसे श्रवण कर वह गद्गद् हो गया। और उसने मन मे यह सोचा कि महायोगी के कथनानुसार "पाप से घृणा करनी चाहिये, पापी से नहीं।" अपूर्व के हृदय मे यह बात गहराई से अकित हो गई।

अपूर्व ने कहा–"भगवन! अगर आपश्री का यह पावन सान्निध्य मुझे पहले मिल जाता तो आज मेरा जीवन कुछ और होता। मुझे नहीं मालूम था कि दुनिया मे ऐसे परमत्यागी एव प्रखर प्रज्ञासम्पन्न महायोगी विद्यमान हैं। जिनके दर्शन ही व्यक्ति को पवित्र बना देते हैं। आपके इस अनल्प उपकार को मैं कभी नहीं भूल सकता।"

महायोगी ने उसे अन्त मे सारभूत उद्बोधन देते हुए फरमाया– "भौतिक वैभव व्यक्ति को एक सीमा तक ही सुख दे सकता है, वह भी ऐन्द्रियिक, अतीन्द्रिय सुख को प्राप्त करने के लिये भौतिकता से हटकर अध्यात्म की ओर बढना होगा। जब तक आत्मा का सही रूप मे जागरण नहीं होगा तब तक वह शाश्वत सुख की अनुभूति नहीं कर सकता। गृहस्थ जीवन मे धन-परिवार, वैभव एक सीमा तक उसके सहायक हैं इन्हे कभी भी परम साध्य के रूप मे मानकर जीवन के मूल्यवान क्षणो को इन्हीं के लिये खतम नहीं कर देना। आज तक दुनिया का कोई भी व्यक्ति दौलत को साथ लेकर नहीं गया है।"

"यह एक मुसाफिर खाना है। जिसमे सयोग और वियोग तो चलता ही रहता है, इससे मन मे हर्ष और विषाद उत्पन्न नहीं होने देना चाहिये।"

"ससार की समस्त आत्माओ को आत्मतुल्य मानकर चलना चाहिये। जितनी अपने से बन सके उतनी दूसरो की सहायता करनी चाहिये। जो समय बीत चुका है लाख प्रयत्न करने पर भी वह पुन नहीं आने वाला

है। विश्व शाति को लक्ष्य मे रखते हुए अपने जीवन का वर्तन समता के धरातल पर बने। क्योकि व्यक्ति-व्यक्ति के सुधार से ही परिवार, समाज, राष्ट्र एव विश्व भर मे सुधार आता है।

"भले आप परम साधना के पथ पर परिपूर्णत आगे न बढ सके तो कोई बात नहीं। गृहस्थ जीवन मे भी नैतिकता, मानवता समता के साथ स्व-पर के उत्थान की भावना को मन मे सन्निहित रखते हुए जीवन को आगे बढाने का प्रसग है ।"

महायोगी के अन्तरग के क्षीर समुद्र से निकल रहे वचन रूप निर्झर का चारो ही प्राणियो ने तन्मयता से पान किया और भाव विह्वल हो वन्दना की तथा मागलिक आशीर्वाद लेकर दृढ सकल्प के साथ चल पडे— महायोगी के निर्देशित मानवता, नैतिकता-समता के पथ पर।



दो मुक्तक

सर्जन मे जितना समय लगता है उतना विसर्जन मे नहीं,
निर्माण मे जितना समय लगता है उतना विध्वश मे नही।

जीवन के उलझे पहलुओ को समझो चिन्तको ।
उत्थान मे जितना समय लगता है उतना पतन मे नहीं ।

शाति की खोज मे आकाश पाताल एक कर रहा है आदमी,
सुख पाने के लिये दिन रात प्रयत्न कर रहा है आदमी।

किन्तु अभी तक शाति नहीं पा सका है आदमी,
दिशा का सही मोड नही कर पा रहा है आदमी।।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

के प्रकाशनों की सूची

आचार्य श्री नानेश

(समता के स्वर)

1.	निर्ग्रन्थ परम्परा में चैतन्य आराधना	10/-
2.	अपने को समझें प्रथम पुष्प	15/-
3.	अपने को समझें द्वितीय पुष्प	20/-
4.	अपने को समझें तृतीय पुष्प	12/-
5.	प्रेरणा की दिव्य रेखाएं	25/-
6.	अखण्ड सौभाग्य (उपन्यास)	13/-
7.	कुकुम के पगलिए (लघु उपन्यास)	15/-
8.	लक्ष्य वेध	15/-
9.	समीक्षण धारा भाग 1	30/-
10.	परदे के उस पार	25/-
	समीक्षण धारा भाग 2	
11.	आत्म समीक्षण	70/-
12.	समता : दर्शन और व्यवहार	26/-
13.	अन्तर के प्रतिबिम्ब	12/-
14.	माया समीक्षण	10/-
15.	मुनि धर्म और ध्वनि वर्धक मत्र	2/-
16.	अन्तगडदसाओ (सशोधित सस्करण)	24/-

युवाचार्य श्री राम

मन्थन का नवनीत	7/-

श्री ज्ञान मुनिजी म.सा.

सस्कारित नारी	8/-
देर है पर अंधेर नहीं	8/-